संस्कृतसिद्धचक्रविधान

भ. शुभचन्द्र

प्रकाशक
रतनलाल मानूराम सामरिया
१/१ नार्थ राजमोहल्ला
इन्दौर-(म. प्र.)

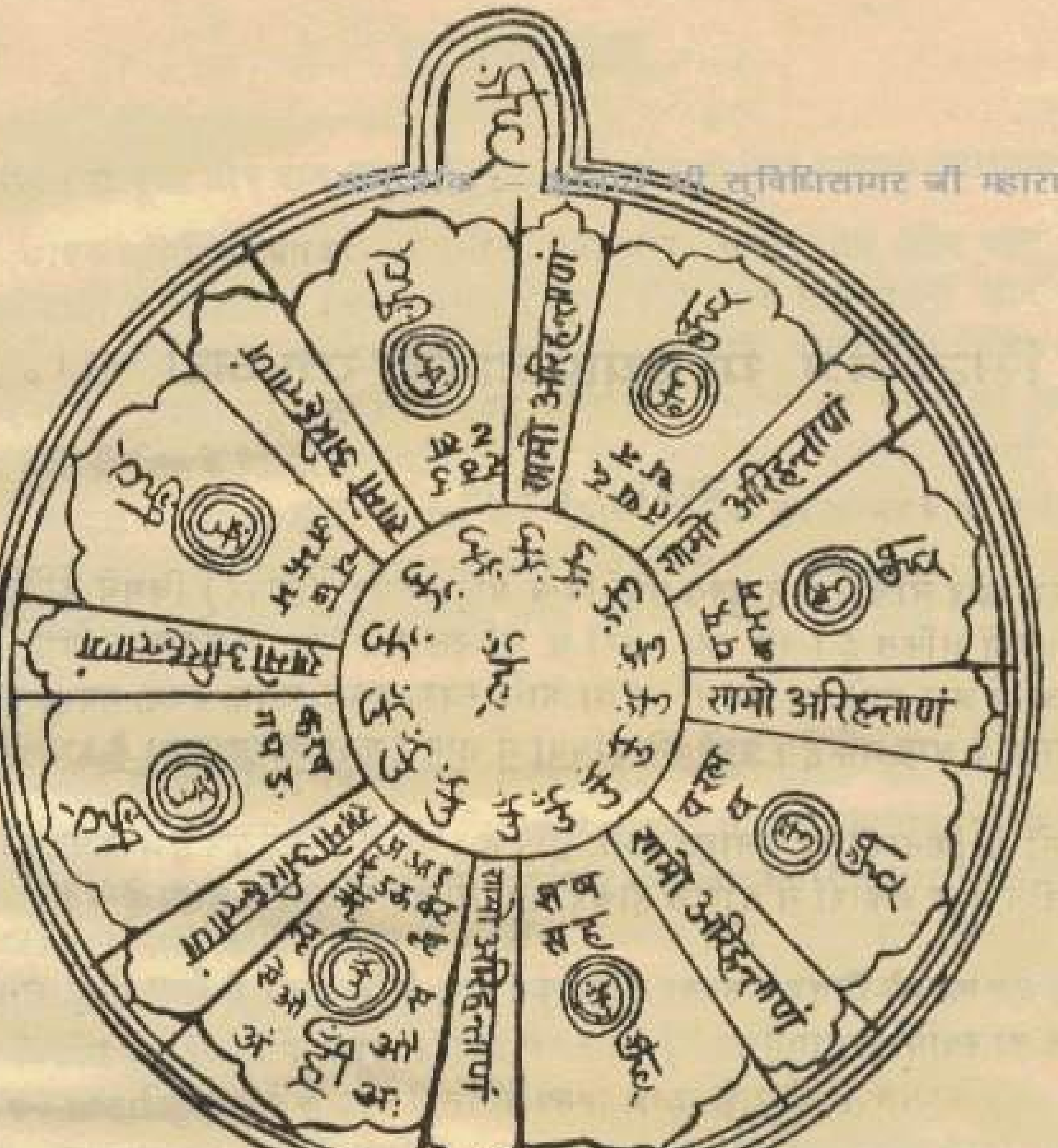

सिद्ध यंत्र

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सिद्ध यंत्र या स्थापना पद्य का अर्थ

उर्ध्वांधो इत्यादि

ऊपर, और नीचे रेफ से युक्त तथा बिन्दु सहित सपर (हकार) जिसमे है, ऐसा हँ यंत्र के मध्य में अंकित है। वह ब्रह्म स्वरों से वेष्टित है। उस कमलाकार यंत्र की आठों दिशाओं में आठ पत्रों पर क्रमशः अ आ आदि स्वर, कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग यरलव, शषसह ये आठ वर्ग है। पत्रों को संधियों में तत्व (णमो अरिहंताणं) है।

पन्नों के किनारो पर अनाहत (औं. ह्रीं) है। यह लघु सिद्धयंत्र है। ऊपर ह्रीं से प्रारंभ कर तीन गोल लकीरों से वेष्टित होकर अन्त में क्रों. से समाप्त होता हैं।

इस देव का जो चितवन करता है वह कर्म शत्रु रूपी हाथी के लिए सिंह समान होकर मुक्ति का स्वामी बनंता है।

प्राक्कथन

गृहस्थ जोवन मे पूजा और दान प्रमुख है और मुनि राज के लिए ध्यानक स्वाध्याय।

श्रावक प्रतिदिन देवपूजा गुरूपास्ति, स्वाध्याय, संयम, तप और दान इन षट् आवश्यक कार्यो को करता है। इनमें प्रथम देवपूजा है। उसके साथ शास्त्र और गुरु की पूजा भी है। हमारा उद्देश्य आत्मा से परमात्मा बनने के लिये वीतरागता और सर्वज्ञता प्राप्त करना है। उसका सहज साधन भगवद् भक्ति है। भक्ति या पूजा का आलम्बन वीतराग मूर्ति है जिसके द्वारा हम मूर्तिमान का ज्ञान करते हैं। क्योकि प्रत्पदा अरहन्त परमात्मा के दर्शन सदा हो नहीं सकते। अतः उनकी प्रतिमा का अभिषेक व पूजा करते हुये हम अपने अन्तर मे विद्यमान परमात्मत्व को विकसित कर सकते है। परन्तु इसके पूर्व इसके बाधक दर्शन मोह और चारित्र मोह संबन्धो तीव्र राग व्देष को दूर करना आवश्यक है।

प्रस्तुत संस्कृत सिद्धचक्र विधान अनन्त सिद्ध परमात्माओं का पूजा संग्रह है। जैन धर्मानुसार सिद्ध परमात्मा अनन्त है। अपने आत्मा में बंधे ज्ञानावरण, दर्शनावरण वेदनोय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तराय इन अष्ट कर्मो में प्रथम, व्दितीय, चतुर्थ, और अष्टम इन घाति कर्मो के नाश से अरहन्त अवस्था और शेष चार अघाति कर्मो के नाश से सिद्ध अवस्था प्राप्त होती है। इसी पूर्ण शुद्ध अवस्था को उपलब्ध सिद्ध परमात्मा का यह विधान है। सिद्धों के समूह को सिद्धचक्र कहते है। यह विधान कार्तिक, फाल्गुन और आषाढ़ इन अष्टान्हिका पर्व के आठ दिनों में किया जाता है। नित्य, आष्टान्हिक, चतुर्मुख, कल्पद्रुम, इन्द्रध्वज इन पूजा के भेदों में यह सिद्धचक्र अष्टान्हिका विधान माना जाता है। इसकी आठ पूजाओं को आठ दिन में करना चाहिये। प्रथम पूजा में सिद्धों के सम्यक्त्व आदि आठ गुणो को लेकर जल, चन्दन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप, फल इन आठ द्रव्यों में प्रत्येक द्रव्य को आठ आठ बार चढ़ावें। अर्घ्य भो आठ बार चढ़ाया जावेगा। मंडल जी पर प्रतिमा व यंत्र विराजमान नहीं करें।

दूसरे दिन सिद्धों के १६ गुण, तीसरे दिन ३२ गुण, चौथे दिन ६४ गुण, पांचवे दिन १२८ गुण, छठे दिन २५६ गुण, सातवे दिन ५१२ गुण और आठवें दिन १०२४ गुण जो विधान में उल्लिखित हैं। जल से लेकर आठ, द्रव्य व नवमअर्घ्य में प्रत्येक १६-१६ बार इसी प्रकार आगे के ३२ आदि बार पूजा के मंत्र उच्चारण पूर्वक चढ़ावें। पूजा कोई भी

अधूरी न की जावें। जैसे आठवें दिन १०२४ गुणो में आधे सातवें दिन आधे आठवें दिन उच्चारण कर द्रव्य चढ़ाना और प्रथम व व्दितीय दिन की पूजा एक ही दिन, में कर लेना यह विधि की विपरीतता सूचक है।

विधान के प्रारंभ मे लघु सिद्धयंत्र का उद्धार श्लोक ऊर्ध्वाधो आदि यंत्र में जो स्वर, कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग, यरलव, शष सह ये वर्ण हैं। उन्हे पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैॠत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर और ईशान इस यंत्र में उक्त दिशानुसार लिखित आठ हिस्सों में विभाजित मंत्र रूप वर्णो को सिद्धपरमात्मा के वाचक रूप में क्रमश अर्घ चढ़ावे। ये वर्ण सिद्ध वर्ण है, जो अलग अलग अपना महत्व रखते हैं। यह अर्घ प्रति दिन पूजा के समय चढ़ाये जाते है।

सिद्धचक्र मंडल विधान मे सवालक्ष या कम से कम २१००० मंत्र के, प्रातः सायं दो बार जप किये जाते है।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

मंत्र—ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः असि आउसा श्री सिद्धचक्राधिपतिभ्यो नमः।

इस मंत्र को १०८ दानों की एक माला के रूप में जपना चाहिये। इस प्रकार २१० माला होती है। विधान के बाद इस मंत्र का अग्नि संस्कार पूर्वक ८ ईंटों का स्थंडिल बनाकर दशांश शान्ति यज्ञ और सिद्ध चक्र के समस्त पूजा मंत्र २०४८ का शांति यज्ञ भी किया जाता है। यह विधि आचार्य जयसेन प्रतिष्ठा पाठ में वर्णित हैं। शांति यज्ञ जैन विवाह विधि के यज्ञ के समान है।

पूजा करने वालों को आठों दिन रात्रि में चार प्रकार के आहार का त्याग कर ब्रह्मचर्य पूर्वक एक बार शुद्ध भोजन और शाम को चाहे तो दूध ले सकते है।

यह संस्कृत सिद्धचक्र विधान भट्टारक शुभचन्द्र ब्दारा संग्रहीत एवं रचित है। इसका प्रथम प्रकाशन दानवीर श्री सेठ राजकुमारसिंहजी कासलीवाल (सुपुत्र श्रीमन्त सर सेठ हुकमचन्दजी) इन्द्र भवन इन्दौर द्वारा ४५ वर्ष पूर्व प्रकाशित कराया गया था, जो अब उपलब्ध नहीं है।

अतः यह प्रकाशन अत्यन्त उपयोगी है। इसके प्रकाशक व वितरण कर्त्ता श्री रतनलालजी नानुरामजी सामरिया इन्दौर है। श्री रतनलालजी एवं उनकी धर्म पत्नी सौ. कस्तूरीबाई, परम धार्मिक एवं सदाचार सम्पन्न दम्पति है जिन्होंने नवीन अतिशय क्षेत्र श्री गोम्मट गिरि इन्दौर में चौबीसवे भगवान महावीर दि. जैन मन्दिर का निर्माण कराया है। आपने वहां अपने निवास स्थान का निर्माण भी कराया है, जहां निराकुलता पूर्वक धर्म आराधना करते रहते हैं। आप दैनिक पूजा पाठ नित्य पाठ संग्रह व भक्तामर

पाठ का प्रकाशन करा कर नि:शुल्क वितरण कराते रहे है। आप अन्य तीर्थों पर भी मण्डल विधान कराते रहे हैं। सन १९७८ मे. श्री सम्मेद शिखर जी यात्रा संघ भी आपने निकाला था।

इस ग्रंथ का संशोधन श्री पंडित विजयकुमारजी शास्त्री, गोम्मट गिरि द्वारा किया गया हैं एवं सतीश पाटनी, सतीश केलेन्डर वालों ने इस पुस्तक को छापने में सहयोग किया है।

आशा है ऐसे धार्मिक विधान का सदुपयोग होकर आराधकों को अपूर्व लाभ मिलेगा।

नाथूलाल जैन शास्त्री
इन्दौर

श्रीशुभचंद्रकृतम्,
श्रीसंस्कृतसिद्धचक्रपूजामंडलविधानम् ।

प्रणम्य श्रीजिनाधीशं लब्धिसाम्राज्यसंयुतम् ।
श्रीसिद्धचक्रयंत्रस्यार्चां सहस्रगुणां ब्रुवे ॥ १ ॥

अथ यजमानलक्षणम्,

विनीतो बुद्धिमान् प्रीतो, न्यायोनात्तधनो महान् ।
शीलादिगुणसम्पन्नो, यष्टा सोऽत्र प्रशस्यते ॥ २ ॥

अर्थ—विनयशील, बुद्धिमान्, प्रीतियुक्त, न्याय से धन उपार्जन करने वाला, शील आदि गुणों से संयुक्त, महान् पुरुष ही जिनागम में विधान करने वाला यजमान प्रशंसायोग्य कहा गया है।

अथ याजकलक्षणम्,

देशकालादिभावज्ञो, निर्मलो बुद्धिमान् वरः ।
सद्वाण्यादिगुणोपेतो, याजकोऽत्र प्रशस्यते ॥ ३ ॥

अर्थ—देश काल आदि के भावको जाननेवाला, निर्मल, बुद्धिमान्, श्रेष्ठ, समीचीन वाणी आदि गुणों से युक्त याजक जिन शास्त्र में प्रशंसा योग्य माना गया है।

अथ आचार्यलक्षणम् ,

दर्शनज्ञानचारित्रसंयुतो ममतातिगः ।

प्राज्ञःप्रश्नसहश्चात्र गुरुः स्यात् क्षांतिनिष्ठितः ॥ ४ ॥

अर्थ—जो सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक् चारित्र से युक्त, ममता से रहित, विद्वान्, प्रश्न को सहन करने वाला—प्रश्न सुनकर घबडाने वाला नहीं है, क्षमा युक्त—क्रोध रहित है वह जिन शास्त्रमें गुरु—आचार्य माना गया है।

अथ मंडपलक्षणाम् ,

निर्मलं पृथुलं घंटातारिकातोरणान्वितम् ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

प्रलंबपुष्पमालाढ्यं चतुर्द्धाकुंभसंयुतम् ॥ ५ ॥

भेरीपटहकंसालतालमर्दननिस्वरैः ।

श्रीकुलीनस्त्रीगीताढ्यं मंडपं कारयेद् बुधः ॥ ६ ॥

अर्थ—मंडल जिस में मांडा जाय वह मंडप विद्वान् पुरुष को ऐसा बनवाना चाहिये जो निर्मल—स्वच्छ हो, संकुचित न हो—पर्याप्त बड़ा हो,घंटा पताका तोरणों से युक्त हो, बड़ी २ पुष्प मालाओं से पूर्ण हो, तथा जिसके चारों कोणों में कुंभ रक्खे गये हों, एवं भेरी पटह, कंसाल झांझ मजीरा के शब्दों के साथ—साथ सुंदर कुलीन स्त्रियों के गीतों से जो परिपूर्ण हो।

अथ सामग्रीलक्षणभ्।

स्वभावोत्कर्षणी पूजा नेत्रमानसहारिणी ।

सामग्री शस्यते सद्भिर्निखिलानंदकारिणी ॥ ७ ॥

अर्थ—पूजा अपनेभावों-परिणामोंको बढानेवाली-उनमें उत्कर्ष लानेवाली है। अतएव सत्पुरुषोंके द्वारा उसकी सामग्री वही प्रशंसनीय मानी जाती है, जो हृर्ष में उत्कर्ष करनेवाली हो, नेत्र और मन को हरण करनेवाली हो, सभी को आनन्द के देने वाली अथवा सम्पूर्ण आनन्द को प्रदान करने वाली हो।

अथ सिद्ध यंत्रोद्धारः।

ऊर्ध्वाधोरयुतं सविन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम् ,
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम् ।
अन्तःपत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम् ,
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः ॥ ८ ॥

अर्थ — जिसके मध्य में ऊपर नीचे रेफ और बिन्दुसहित टकार हो। वहीं चारों ओर स्वर हों। अष्ट दल कमलाकार यंत्र की आठों दिशाओं में क्रम से स्वर कवर्ग चवर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग यरलव, शषसह हो। कमल की संधियों में णमो अरहंताणं हो। आठों यंत्रों के तह में ओंहीं हो। यंत्र को ह्रीं से लेकर क्रौं तक वेष्टित किया हो। ऐसे सिध्द यंत्र द्वारा ही सिध्द परमात्मा का ध्यान करना है वह कर्मशत्रुरुपी हाथी के लिये सिंह के समान बनकर मुक्ति लक्ष्मी का स्वामी होता है।

अथ सिद्धयंत्रसंबंधि--अष्टकोष्टपूजा

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥
सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ २ ठः ठः
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्

हलां चयो विना यैस्तु सुप्रसिद्धोऽर्धमातृकः ।
तैः स्वरैः सहितं पूर्वदिश्यनाहतमर्चये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः अनाहतविद्यायै नमः पूर्वदिशि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

आग्नेय्यां कादिसद्वर्णैरुपेतानाहतं यजे ।
सुगन्धैः सुभगै*रुद्धैर्जलगंधाक्षतादिभिः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं क ख ग घ ङ अनाहतविद्यायै नमः आग्नेय दिशि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

दक्षिणस्यां चवर्गेण युतानाहतमर्चये ।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगंधाक्षतादिभिः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं च छ ज झ ञ अनाहतविद्यायै नमः दक्षिणदिशि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

दक्षिणोत्तरकोणे वा टवर्गाद्यमनाहतम् ।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगंधाक्षतादिभिः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं ट ठ ड ढ ण अनाहतविद्यायै नमः नैऋतदिशि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

अनाहतं च वारुण्यां तवर्गोपेतमर्चये ।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगंधाक्षतादिभिः ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं त थ द ध न अनाहतविद्यायै नमः पश्चिमदिशि अर्घ निर्वपामिति स्वाहा ।

*—मूल्य प्रति में "सुभगै" की जगह सर्वत्र "सुरभै" तथा "उद्धै" की जगह "उघै" पाठ है । एक जगह "द्रव्यै:" ऐसा संशोधित पाठ भी है। "सुभगै:" की जगह "सुरसै:" भी ठीक मालुम होता है ।

पवर्गोपेतमर्हामि वायव्यायामनाहतम् ।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगंधाक्षतादिभिः ॥ ६ ॥

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

ॐ ह्रीं प फ ब भ म अनाहतविद्यायै नमः वायव्यदिशि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

यजे यरलवोपेतं कौवेर्यां दिश्यनाहतम् ।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगंधाक्षतादिभिः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं य र ल व अनाहतविद्यायै नमः उत्तरदिश्यर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

यजेऽनाहतमैशान्यां युतं शषसहाक्षरैः ।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगंधाक्षतादिभिः ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श ष स ह् अनाहतविद्यायै नमः ऐशानदिशि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ प्रथम परिधिगताष्टगुण पूजा स्थापना

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम् ।
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम् ॥
अन्तः पत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम् ।
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः ॥
निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥
सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम् ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ २ ठः ठः, ॐ ह्रीं णमो सिध्दाणं सिध्दपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्

अथाष्टकम्

सिद्धौ निवासमनुगं परमात्मगम्यम् ।
हान्यादिभावरहितं भववीतकायम् ॥
रेवापगावरसरोयमुनोद्भवानाम् ॥
नीरैर्यजे कलशगैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ १ ॥

१ ॐ ह्रीं सम्यक्त्वगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः जलं नि. स्वाहा।

२ ॐ ह्रीं ज्ञानगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः जलं नि. स्वाहा ।

३ ॐ ह्रीं दर्शनगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः जलं नि. स्वाहा।

४ ॐ ह्रीं वीर्यगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः जलं नि. स्वाहा।

५ ॐ ह्री सूक्ष्मगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः जलं नि. स्वाहा ।

६ ॐ ह्री अवगाहनगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः जलं नि स्वाहा।

७ ॐ ह्री अगुरुलघुगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः जलं नि. स्वाह।

८ ॐ ह्री अव्याबाधगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः जलं नि. स्वाह।

(आगे चन्दनादिक भी इन्ही आठ मंत्रो को बोलकर आठ-आठ बार चढाना चाहिये । केवल "जलं" की जगह "चन्दनं, अक्षतान्, पुष्पाणि" आदि शब्द बदल देना चाहिये ।)

आनन्दकन्दजनकं घनकर्ममुक्तम् ।
सम्यक्त्वशर्मगरिमं जननार्तिवीतम् ॥
सौरभ्यवासितभुवं हरिचन्दनाद्यैः ।-
र्गन्धैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ २ ॥ चन्दनम्

सर्वावगाहनगुणं स्वसमाधिनिष्ठम् ।
सिध्दस्वरुपनिपुणं कमलं विशालम् ॥
सौगन्ध्यशालिवनशालिवराक्षतानाम् ।
पुंजैर्यजे शशिनिभैर्वरसिध्दचक्रम् ॥ ३ ॥ अक्षतान्

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

नित्यं स्वदेहपरिमाणमनादिसंज्ञम् ।
द्रव्यानपेक्षममृतं मरणाद्यतीतम् ॥
मन्दारकुन्दकमलादिवनस्पतीनाम् ।
पुष्पैर्यजे शुभतमैर्वरसिध्दचक्रम् ॥ ४ ॥ पुष्पाणि

ऊर्ध्वस्वभावगमनं सुमनोव्यपेतं ।
ब्रह्मादिबीजसहितं गगनावभासम् ॥
क्षीरान्नसाज्यवटकैं रसपूर्णगर्भैः ।
नित्यं यजे चरुवरैर्वरसिध्दचक्रम् ॥ ५ ॥ नैवेद्यम्

आतंकशोकभयरोगमदप्रशान्तं ।
निर्द्वन्द्वभावधरणं महिमानिवेशम् ॥
कर्पूरवर्तिबहुभिः कनकावदातैं ।—
दीपैर्यजे रुचिवरैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ ६ ॥ दीपम्

पश्यन् समस्तभुवनं युगपन्नितान्तम् ।
त्रैकाल्यवस्तुविषये निविडप्रदीपम् ॥
सद्द्रव्यगंधघनसारविमिश्रितानां ।
धूपैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ ७ ॥ धूपम्

सिद्धासुराधिपतियक्षनरेन्द्रचक्रैः ।—
ध्येयं शिवं सकलभव्यजनैश्च वन्द्यम् ॥
नारंगपूगकदलीफलमातुलिंगैः ; ।
सोऽहं यजे वरफलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ ८ ॥ फलम्

गंधाढ्यं सुपयोमधुव्रतगणैः संगं वरं चन्दनम् ।
पुष्पौघं विमलं सदक्षतचयं रम्यं चरुं दीपकम् ॥

धूपं गन्धयुतंददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये ।
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोतरं वाञ्छितम् ॥ ९ ॥ अर्घम्

ज्ञानोपयोगविमलं विशदात्मरूपम् ।
सूक्ष्मस्वभावपरमं यदनन्तवीर्यम् ॥
कर्मौघकक्षदहनं सुखशस्यबीजम् ।
वन्दे सदा निरुपमं वरसिद्धचक्रम् ॥१०॥ पुष्पांजलिः

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा, नमः इति मंत्रस्य पूर्ववदष्टोतरं शतं जाप्यं देयम् ।

अथ जयमाला ।

पणविवि परमेसुर णौमि जिणेसुर ।
नासियदुक्कियकम्ममलु ॥
पुण अक्खिभि भत्तिय णियमणसत्तिय ।
सिद्धचक्कजयमालफलु ॥

१—कहीं २ "नारिकेलैः" ऐसा भी पाठ है ।

धता–तमालासमासंपडाशीसकेशा ।
खरा दारुणा लोयणारत्तवेषा ।।
गहाभूयवेदाल णासंति चक्कम् ।
वरं भावयंणे मणो सिद्धचक्कम् ।। १ ।।

ततो भीसणोचक्कदाढा कराला ।
आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज
चलालोयणा दीहजीहा विशाला ।।
बसीहुंति सिंहाइ दाढीनचक्कं ।
वरंभावयंणेमणो सिद्धचक्कं ।। २ ।।

सरोसा सघोरा महाकालरुबा ।
जनूरारि आशीविया दुट्ठभावा ।।
सकोहा ण डंकंति होणायचक्कं ।
वरंभावयंणे मणो सिद्धचक्कं ।। ३ ।।

जरो खेय रोगावली गंडमाला ।
पमेहाइ रूवावना कुट्ठसूला ।।
विनाशंति सासानिला वाहिचक्कं ।
वरं भावयंणे मणोसिद्धचक्कं ।। ४ ।।

सधूमावलीभीसणासंजलंता ।
फुलिंगाइ मेलंति चंडा दिगंता ।।
न डाहंति देही सिहीजालचक्कं ।
वरं भावयंणे मणो सिद्धचक्कं ।। ५ ।।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री ... जी महाराज

सधूमावलीभीसणासंजलंता ।
फुलिंगाइ मेलंति चंडा दिगंता ॥
न डाहंति देही सिहीजालचक्कं ।
वरं भावयंणे मणो सिद्धचक्कं ॥ ५ ॥

सकल्लोललोलावहोलातरंगा ।
अपारा य घोषावदी सिंधुगंगा ॥
अगाधा सुतारंति हो णीरचक्कं ।
वरं भावयंणे मणो सिद्धचक्कं ॥ ६ ॥

कसापासकुंतास भल्लायसूला ।
सकोदंडवाणा करे भिंडमाला ॥
न मारंति तं संगरे चोरचक्कं ।
वरं भावयंणे मणो सिद्धचक्कं ॥ ७ ॥

सगाढाविवंधा घना घोरबंधा ।
असेसानियंगा उबंगा विबंधा ॥
विमुंचंति सासृंखलायं सचक्क ।
वरं भावयंणे मणो सिद्धचक्कं ॥ ८ ॥

सुणीसग्गिझाणेण कम्मट्ठणासं ।
ललाटें सुवीयं करे मोक्खवासं ॥
कुणेदी यकी दिट्ठि भाणं पहाओ ।
सुछंदोवि एसो भुयगप्पयाओ ॥ ९ ॥

इयवरजयमाला परमरसाला ।
विधुसेणेन वि कहियर्थुहि ।।
जो पढइ पढावइ नियमणि भावइ ।
सो णरु पावइ सिद्धसुहं ।। १० ।।

ॐ ह्रीं सम्मत्त णाण दंसण वीरिय सुहम अवग्गहण अगुरुलघु अव्वावाह अनाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा ।। पूर्णार्घम् ।।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

प्रथम जयमाला का अर्थ

दुष्कृत — पापरूपी कर्ममलों को जिन्होने सर्वथा नष्ट कर दिया है ऐसे परमेश्वर जिनेश्वर भगवान को प्रणाम और नमस्कार करके भक्ति पूर्वक और अपनी मनःशक्ति के द्वारा सिद्धचक्र की जयमाला का वर्णन करता हूं ।। १ ।।

मन में अच्छी तरह से जो सिद्धचक्र का ध्यान करता है उसका; काले बिखरे हुए और भयंकर हैं शिर के केश जिसके, रूक्ष और दारुण हैं नेत्र जिसके, ऐसी रक्तवर्ण वाली व्यन्तरीका अथवा ग्रह तथा भूत वेताल आदि का भय नष्ट हो जाया करता है ।। १ ।।

भीषण है उत्संग—क्रोड बाहुमध्य और दाढ जिसकी तथा उनके कारण जो विकराल है जिसके नेत्र चलायमान है, जिह्वा अत्यन्त दीर्घ है, ऐसे विशाल सिंह और दाढवाले सभी जीवों का समूह सिद्धचक्र की भावना करने वाले के वश में हो जाया करता है ।। २ ।।

रोषयुक्त घोर महाकाल रूप दुष्ट भावों वाले क्रुद्ध आशीविष जाति के सर्प भी उसको नहीं काटते जो मनमें सिद्धचक्र की भले प्रकार भावना किया करता है ।। ३ ।।

ज्वर क्षय गंडमाला कुष्ट शूल आदि रोग अथवा श्वास और वातादि व्याधियां उनकी नष्ट हो जाया करती हैं जो मन में सिद्धचक्र का अच्छी तरह चिन्तवन किया करते हैं ॥ ४॥

इस सिद्धचक्र की भावना करने वाले को धूमसहित भीषण जलती हुई, जिसके प्रचण्ड स्फुलिंग सब तरफ उड़ रहे हैं, अग्नि की ज्वालाओं का समूह दग्ध नहीं कर सकता ॥ ५ ॥

कल्लोलों से चंचल बहुत तरंगवाली अपार शब्द करती हुई अगाध गंगा सिन्धु आदि नदियां उस मनुष्य को पार कर देती हैं जो इस सिद्धचक्र का मन में चिन्तवन किया करता हैं ॥ ६ ॥

कशा पाश कुंत बर्छी भाला शूल आदि धारण करने वाले या जिनके हाथ में धनुष बाण भिउमाल हैं, ऐसे व्यक्ती और चोरों का समूह युद्ध में उस व्यक्ति को नहीं मार सकते जो सिद्धचक का मन में भले प्रकार चिन्तवन करता है ॥ ७ ॥

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

अत्यन्त गाढ और सघन भी बंधन जिन्होने कि समस्त अंगउपांगो को जकड़ रक्खा है खुल जाते है और उन व्यक्तियों की शंखलाएं टूट जाती है जो कि सिध्दचक्र का मन में स्मरण करते हैं ॥ ८ ॥

उस सिध्दचक्र का निःसंग ध्यान करने से आठों ही कर्मों का विनाश होता है, ललाट में सुवीर्य प्रकट होता और हाथ में मोक्ष लक्ष्मी का निवास हुआ करता, तथा जिसके दृष्टि पात से सूर्य के समान तेज प्राप्त हुआ करता है, जिसका कि यहां भुजंगप्रयातछन्द के द्वारा वर्णन किया गया है ॥ ९ ॥

इस प्रकार चन्द्रसेन के द्वारा जिस अत्यन्त रसाल रसवती उत्तम जय माला का वर्णन किया गया है उसको जो पढ़ेंगे, या अपने मन में धारण करेंगे वे मनुष्य सिद्धि सुखको प्राप्त करेंगे ॥ १०॥

———————

अथ द्वितीय परिधिषोडशगुण पूजा

स्थापना

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम् ।
बर्ग्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम् ।।
अन्तः पत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम् ।
देवं ध्यायति यः समुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः ।।

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं 'नित्यं' निरामयं ।
वन्देऽहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ।। १ ।।

सकलामरेन्द्रसेव्यं, ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम् ।। २ ।।

ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ २ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् ।

अथाष्टकम्—

रभ्यैर्जलैर्मिश्रितचन्दनौघैः, संसारतापाहतये सुशान्त्यै ।
जलांजलिप्राप्तरजोभिशान्त्यै, तत्कर्मदाहार्थमजं यजेऽहम् ।। १ ।।

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धाधिपतये नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा, इति समुच्चयमंत्रः ।

१ ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनाय नमः जलं नि. स्वाहा, २ ॐ ह्रीं अनंतज्ञानाय नमः जलं नि. स्वाहा।
३ ॐ ह्रीं अनन्तवीर्याय नमः जलं नि. स्वाहा, ४ ॐ ह्रीं अनन्तसुखाय नमः जलं नि. स्वाहा।
५ ॐ ह्रीं अनन्तसम्यकत्वाय नमः जलं नि. स्वाहा,
६ ॐ ह्रीं अनन्तसूक्ष्मायनमः जलं नि. स्वाहा।
७ ॐ ह्रीं अव्याबाधाय नमः जलं नि. स्वाहा, ८ ॐ ह्रीं अवगाहनाय नमः जलं नि. स्वाहा।
९ ॐ ह्रीं अक्षोभाय नमः जलं नि. स्वाहा, १० ॐ ह्रीं अचलाय नमः जलं नि. स्वाहा।
११ ॐ ह्रीं अच्छेद्याय नमः जलं नि. स्वाहा, १२ ॐ ह्रीं अभेद्याय नमः जलं नि. स्वाहा।
१३ ॐ ह्रीं अजराय नमः जलं नि. स्वाहा १४ ॐ ह्रीं अमराय नमः जलं नि. स्वाहा।
१५ ॐ ह्रीं अप्रमेयाय नमः जलं नि. स्वाहा १६ ॐ ह्रीं अविलीनाय नमः जलं नि. स्वाहा।

सत्कुंकुमैः सज्जतरैः सुगन्धैः, संतप्तहेम्नश्च रसैरविद्धैः।
सच्चन्दनैर्नन्दितभृङ्गवृन्दैस्तत्कर्मदाहार्थमजं यजेऽहम् ॥ २ ॥ चन्दनम्

पुंजैरिवाखण्डवृषस्य दीर्घैः स्वच्छैर्मुनीनां मनसा समानैः।
रम्यैरखण्डाक्षतनव्यपुंजैस्तत्कर्मदाहार्थमजं यजेऽहम् ॥ ३ ॥ अक्षतान्

गन्धावलुब्धाखिलपुष्पलिड्भिः, सत्पुष्पवाणाहतये सुपुष्पैः।
राजीवजातीशतपत्रकाद्यैस्तत्कर्मदाहार्थमजंयजेऽहम्॥ ४ ॥ पुष्पाणि

साज्यैः समृद्धैर्वरशिष्टसिध्दैः, नैवेद्यकैर्नव्यरसात्तभावैः।
वाष्पायमानैर्हृदयावभासैस्तत्कर्मदाहार्थमजंयजेऽहम् ॥ ५ ॥ नैवद्यम्

दीप्रैः सुदीपैर्दलितान्धकारैः, चन्द्राज्यरत्नोत्तमजैरतीध्दैः।
अज्ञानतामस्यनिवारणाय, तत्कर्मदाहार्थमजं यजेऽहम् ॥ ६ ॥ दीपम्

एनःसमूहाहतये नितान्तं ज्ञानादिदाहोद्भवधूमकर्वा ।
सद्धूपधूमैर्धृतधर्मसिद्धयै तत्कर्मदाहार्थमजंयजेहम् ।। ७ ।। धूपम्

घोंटासुनारंगसुलांगलीभिर्द्राक्षासुराजादनदाडिमाद्यैः ।
फलैर्निराशाफलभावलब्ध्यैतत्कर्मदाहार्थमजंयजेऽहम् ।। ८ ।। फलम्

दृग्ज्ञानसम्यत्क्सुवीर्यसूक्ष्मं सद्गाहसत्सप्तममव्यबाधम् ।
विकर्मभावं कुसुमांजलीभिस्तत्कर्मदाहार्थमजंयजेऽहम् ।। ९ ।। अर्घम्

सिध्दान् सिध्दमहोदयान्गुणगणाधीशानहं तोष्टवी,–
म्याकारेण हि किंचिदूनवपुषः पूर्वाच्छरीराद्ध्रुवम् ।
अष्टानिष्टमहारिकर्मनिगडैर्मुक्तांश्चिदानन्दकां,–
स्त्रैलोक्याग्रनिवासिनःश्रितवतो मुक्त्यंगनां शाश्वतीम्–पुष्पांजलिः

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा नमः, इतिमंत्रेणाष्टोतरगतं जाप्यम् ।

अथ जयमाला–

अपनीतविकल्पसमूहरणं, भुविभस्मितकर्मघनाग्निगणम् ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ।। १ ।।

धृतचिन्मयरूपमरुपयुतं सुरराजनराधिपशेषनु तम् ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ।। २ ।।

विगतातपसादविषादरतिं गुरुशान्तिगतं हतपापमतिम् ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ।। ३ ।।

मदखेदमहीधरनाशपविं भयभीमनिशाचरचारुरविम् ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ४ ॥

वरमुक्तिबधूरमणं विरणं चिदनंतगुणं जितकामकणम् ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ५ ॥

वरधीक्षणसौख्यसुवीर्यमयं निजबोधविलोकितवस्तुचयम् ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ६ ॥

गतसंसृतिसागरपारमरं हतदोषकषायकलंकभरम् ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ७ ॥

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री
शुचिकेवलदर्शनबोधधरं हतसंभवजातिविनाशजरम ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ८ ॥

स्वरसामृतमंथररुपमजं भुवनत्रयमस्तकवारगजम् ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ९ ॥

समभावविभासितजीवगुणं परमाचलनित्यगुणाभरणम् ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ १० ॥

घत्ता—

यन्नामग्रहणादरेषु जगतीपृष्ठे फणीभारयो,—
भीमा वारिचरा मृगेशशरभाः सौख्याय यान्ति क्षणात् ।

प्राप्यन्ते स्मरणेन दिव्यविषयाश्चार्घं हि तस्मै ददे ।
वश्या सिद्धगणाय सिद्धिरमणी यद्ध्यानतो जायते ।। पूर्णार्घम्
चिद्रूपं सिद्धचक्रं यो यायजेद्भक्तिमानसः ।
पद्मकीर्तिसमो भूत्वा लभते सिद्धिसंगतिम् ।। आशीर्वादः

द्वितीय जयमाला का अर्थ

दूर कर दिया है विकल्प समूह—अनेक तरह के संकल्प विकल्पों के रण—कोलाहल को जिन्होने, लोक में कर्मरूपी सघन अग्नि के समूह को जिन्होने भस्म—शांत कर दिया है, और जिनके भाव अनेक गुणों से शोभित हैं ऐसे परमात्मरूप सिद्धों के समूह को मैं नमस्कार करता हूं ।। १ ।।

चैतन्यस्वरूप को जो प्राप्त हो गये हैं, देवेन्द्र नरेन्द्र और धरणीन्द्र के द्वारा भी जिनको नमस्कार किया गया है, आतप साद—खेद विषाद और रति से जो रहित हैं, महान् शान्ति को प्राप्त, नष्ट कर दिया है पापरूप मति को जिन्होने, मद और खेद—रूपी पर्वत का नाश करने के लिये जो वज्र के समान हैं, भयरूपी भयंकर निशाचर के लिये जो सुन्दर सूर्य के समान हैं, जो उत्तम मुक्तिरूपी वधू के रमण, शब्द अथवा गति से रहित, तथा चित्स्वरूप अनंत गुणों के धारक हैं, जिन्होने काम के अंश को भी जीत लियाहैं; जो उत्तम ज्ञान दर्शन सुख और वीर्य, इस तरह अन्नत चतुष्टय स्वरुप हैं, जिन्होने अपने ज्ञान के द्वारा समस्त वस्तुओं को देख लिया है, जो संसाररूपी समुन्द्र के पार को भले प्रकार प्राप्त हो गये हैं, जिन्होने सर्वसाधारण संसारी जीवों में पाये जाने वाले दोष—क्षुधा— पिपासा—चिन्ता आश्चर्य आदि तथा कषायरुपी कलंक के भार को नष्ट कर दिया है, पवित्र केवल ज्ञान

और दर्शन को जो धारण करने वाले हैं, जिन्होने संसार के जन्म मरण और जरा रूप क्लेश का नाश कर दिया है, आत्म रस रूपी अमृत से जो मंथर है; पुनः जन्म धारण करने वाले नहीं हैं, भुवनत्रय के मस्तकरूपी द्वार का उद्घाटन करने के लिये गज के समान हैं, समभाव के द्वारा जिन्होने जीव के-अपनी आत्मा के या जीवों के गुणों को प्रकाशित कर दिया हैं, उत्कृष्ट निश्चल और नित्य गुण ही हैं आभरण जिनके, ऐसे अनेक गुणों से शोभायमान परमात्मा सिद्ध परमेष्ठियों को मेरा नमस्कार हो.

इस जगत में जिनके नाम मात्र का स्मरण करने में आदरभाव रखने वाले व्यक्तियों को सर्पहाथी आदि घात करने वाले तथा भयंकर जलचर जीव या सिंह अष्टापद आदि क्षणभर में उल्टे सुख शांति के निमित्त बन जाते हैं, जिनका चिंतवन करने से दिव्य विषयों की प्राप्ति हुआ करती है, एवं जिनका ध्यान करने से सिद्धिरूपी रमणी वशीभूत हो जाया करती है, उन सिद्ध परमेष्ठियों को मैं अर्घ ——पूर्णार्घ अर्पण करता हूं ॥

भक्ति से परिपूर्ण है मन जिसका ऐसा जो व्यक्ति चिद्रूप सिद्ध भगवान का अतिशय करके और पुनः २ पूजन करता है वह **"पद्मकीर्ति"** के समान होकर सिद्धि को प्राप्त किया करता है।

अथ तृतीयपरिधिद्वात्रिंशद्गुणपूजा।

स्थापना

उर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम्,
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम्।
अन्तः पत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम्,
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः ॥ १ ॥

निरस्तकर्मसंबन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥
सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्

ॐ ह्रीं णमो सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ २ ठः ठः

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

अथाष्टकम्—

निजमनोमणिभाजनभारया शमरसैकसुधारसधारया ।
सकलबोधकलारमणीयकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । जलम् ॥ इति समुच्चयमंत्र : ।

अथ प्रत्येक मंत्राः— १ ॐ ह्रीं परमशुद्धचैतन्याय नमः स्वाहा । २ ॐ ह्रीं शुद्धचैतन्याय नमः स्वाहा । ३ ॐ ह्रीं शुद्धज्ञानाय नमः स्वाहा । ४ ॐ ह्रीं शुद्धचिद्रूपाय नमः स्वाहा । ५ ॐ ह्रीं शुद्धस्वरूपाय नमः स्वाहा । ६ ॐ ह्रीं शुद्धस्वभावाय नमः स्वाहा । ७ ॐ ह्रीं शुद्धावलोकिने नमः स्वाहा । ८ ॐ ह्रीं शुद्धदृढाय नमः स्वाहा । ९ ॐ ह्रीं शुद्धस्वयंभुवे नमः स्वाहा । १० ॐ ह्रीं शुद्धयोगिने नमः स्वाहा । ११ ॐ ह्रीं शुद्धजाताय नमः स्वाहा । १२ ॐ ह्रीं शुद्धतपसे नमः स्वाहा । १३ ॐ ह्रीं शुद्धमूर्तये नमः स्वाहा । १४ ॐ ह्रीं शुद्धसुखाय नमः स्वाहा । १५ ॐ ह्रीं शुद्धपावनाय नमः स्वाहा । १६ ॐ ह्रीं शुद्धशरीराय नमः स्वाहा । १७ ॐ ह्रीं शुद्धप्रमेयाय नमः स्वाहा १८ ॐ ह्रीं शुद्धोपयोगाय नमः स्वाहा । १९ ॐ ह्रीं शुद्धभोगाय नमः स्वाहा । २० ॐ ह्रीं शुद्धात्मने नमः स्वाहा । २१ ॐ ह्रीं शुद्धार्हज्जाताय नमः स्वाहा । २२ ॐ ह्रीं अशुद्धिनिपाताय नमः स्वाहा। २३ ॐ ह्रीं

शुद्धार्हंगर्भवासाय नमः स्वाहा। २४ ॐ ह्रीं शुद्धसिद्धवासाय नमः स्वाहा। २५ ॐ ह्रीं शुद्धपरमवासाय नमः स्वाहा। २६ ॐ ह्रीं शुद्धसिद्धपरमात्मने नमः स्वाहा। २७ ॐ ह्रीं शुद्धानन्ताय नमः स्वाहा। २८ ॐ ह्रीं शुद्धशान्ताय नमः स्वाहा। २९ ॐ ह्रीं शुद्धभदन्ताय नमः स्वाहा। ३० ॐ ह्रीं शुद्धनीरूपाय नमः स्वाहा। ३१ ॐ ह्रीं शुद्धनिर्वाणाय नमः स्वाहा। ३२ ॐ ह्रीं शुद्धसंदर्भगर्भाय नमः स्वाहा ॥ जलम् ॥

सहजकर्मकलंकविनाशनैरमलभावसुवासितचन्दनैः।
अनुपमानगुणावलिनायकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥ चन्दनम्

सहजभावसुनिर्मलतन्दुलैः सकलदोषविशालविशोधनैः।
अनुपरोधसुबोधनिधानकम् सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ३ ॥ अक्षतान्

समयसारसुपुष्पसुमालया सहजकर्मकरेण विशोधया।
परमयोगबलेन वशीकृतम् सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ४ ॥ पुष्पम्

अकृतबोधसुदिव्यनैवेद्यकैर्विहितजातिजरामरणान्तकैः।
निरवधिप्रचुरात्मगुणालयं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ५ ॥ नैवेद्यम्

सहजरत्नरुचिप्रतिदीपकैः रुचिविभूतितमःप्रविनाशनैः।
निरवधि सुविकाशप्रकाशनैः सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ६ ॥ दीपम्

निजगुणाक्षयरूपसुधूपकैः स्वगुणघातिमलप्रविनाशनैः।
विशदबोधसुदीर्घसुखात्मकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ७ ॥ धूपम्

परमभावफलावलिसंपदा सहजभावविभावविशोधया।
निजगुणास्फुरणात्मनिरंजनं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ८ ॥ फलम्

नेत्रोन्मीलविकाशभावनिवहैरत्यन्तबोधाय वैं,
सद्गन्धाक्षतपुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैः ।-
यश्चिन्तामणिशुद्धभावपरमज्ञानात्मकैरर्चयेत्,
सिद्धःस्यात्तमगाधबोधममलं संचर्चयामो वयम् ॥ ९ ॥ अर्घम्

त्रैलोक्येश्वरवन्दनीयचरणाः प्रापुःश्रियं शास्वतीम्,
यानाराध्य निरुद्धचण्डमनसः सन्तोपि तीर्थकराः ।
सम्यक्त्वविबोधवीर्यविशदाव्याबाधताद्यैर्गुणे,-
र्युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं सिद्धान् विशुद्धोदयान् ॥१०॥ पुष्पांजलि

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा नमः:, इतिमंत्रेणाष्टोतरशतं जाप्यं देयम् ।

अथ जयमाला

विराग सनातन शांत निरंश, निरामय निर्भय निर्मल हंस ।
सुधाम विबोधनिधान विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ १ ॥

विदूरितसंसृतिभाव निरंग, शमामृतपूरित देव विसंग ।
अबंध कषायविहीन विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिध्दसमूह ॥ २ ॥

निवारितदुष्कृतकर्मविपाश, सदामलकेवलकेलिनिवास ।
भवोदधिपारग शांत विमोह, प्रसीद विशुध्द सुसिध्दसमूह ॥ ३ ॥

अनंतसुखामृतसागर धीर, कलंकरजोभरभूरिसमीर ।
विखण्डितकाम विराम विमोह, प्रसीद विशुध्द सुसिध्दसमूह ॥ ४ ॥

विकारविवर्जित तर्जितशोक, विबोधसुनेत्रविलोकितलोक ।

विहार विराव विरंग विमोह, प्रसीद विशुध्द सुसिध्दसमूह ॥ ५ ॥

रजोमलखेदविमुक्त विगात्र, निरंतरनित्यसुखामृतपात्र ।

सुदर्शनराजित नाथ विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ६ ॥

नरामरवन्दितनिर्मलभाव, अनन्तमुनीश्वरपूज्य विहाव ।

सदोदय विश्वमहेश विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ७ ॥

विदंभ वितृष्ण विदोष विनिद्र, परापरशंकरसार वितंद्र ।

विकोप विरूप विशंक विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ८ ॥

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

जरामरणोज्झित वीतविहार, विचिंतित निर्मल निरहंकार ।

अचिन्त्यचरित्र विदर्प विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिध्दसमूह ॥ ९ ॥

विवर्ण विगंध विमान विलोभ, विमाय विकाय विशब्द विशोभ ।

अनाकुल केवल सार्व विमोह, प्रसीद विशुध्द सुसिद्ध समूह ॥ १० ॥

घत्ता—असमसमयसारं चारुचैतन्यचिन्हम्,

परपरणतिमुक्तं पद्मनन्दीन्द्रवन्द्यम् ।

निखिलगुणनिकेतं सिद्ध चक्रं विसुद्धं,

स्मरित नमति यो वा स्तौति सोभ्येति मुक्तिम् ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं परमशुद्धचैतन्यादिगुणयुक्तसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा ॥ पूर्णार्घम् ॥

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

तीसरी जयमाला का अर्थ

रागरहित, सदारहनेवाले, शान्त–क्रोधादिरहित, निरंश-विभाग-रहित-अखण्ड, रोगरहित, निर्भय, निर्मल, भेदविज्ञानपूर्ण आत्मस्वरुप, उत्तम तेज:स्वरुप, उत्कृष्टज्ञान के निधान खजाने हे मोहरहित विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ १ ॥ सांसारिक भावों से दूर, अंगरहित, शम परिणामरुपी अमृत से पूर्ण, देव संगरहित, निर्बंध और कषायरहित निर्मोह विशुद्ध सिद्ध समूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ २ ॥ पाप कर्म के पाश–जाल का जिन्होने निवारण कर दिया हैं, जो सदा निर्मल केवल ज्ञान की क्रीड़ा के निवास स्थान हैं, संसार समुद्र के पार को प्राप्त हो, चुके हैं, ऐसे शांत निर्मोह विशुद्ध सिद्ध समूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ३ ॥ अनन्त सुख रूपी अमृत के समुद्र, धीर, पापरुपी धूली के भार को उडादेने के लिए प्रबल समीर-वायु के समान, कामदेव की अन्तिम सीमा को भी खण्डित करने वाले निर्मोह विशुद्ध सिद्ध समूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ४ ॥ विकार भाव से रहित, शोक को ताडित करने वाले, विशिष्ट ज्ञानरुपी नेत्र के द्वारा देख लिया है लोक को जिन्होने, जिनका कोई हरण नहीं कर सकता, ऐसे शब्दरहित, विरंग संसाररुपी नाटक के रंगस्थल अथवा कषायोंके युद्ध स्थल से विगत, निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो । ॥ ५ ॥ अज्ञान और अदर्शनरुप मल के खेद से रहित, अशरीर, विच्छेदरहित नित्य सुख के पात्र, सम्यग्दर्शन के द्वारा शोभायमान, नाथ निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ६ ॥ मनुष्यों और देवोंके द्वारा वन्दित हैं निर्मल भाव जिनके, अनन्त मुनीश्वरों के द्वारा पूज्य, सुख के विकार से रहित, सदा रहनेवाला है उदय जिनका, पूर्ण तेज के स्वामी, निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ७ ॥ दंभरहित, तृष्णा से शून्य, विगत दोष, निद्रा रहित, पर और अपर कल्याण के करने वाले, साररुप, निरालस्य, कोप रहित, रुप रहित और शंका रहित निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ८ ॥ जरा और मरण से रहित, तथा गमनागमन से भी रहित, विशिष्ट चिन्ता-ध्यानादिके विषय, निर्मल, अहंकार रहित, अचिन्त्य है चरित्र जिनका ऐसे, हे दर्परहित निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ९ ॥ वर्ण रहित,

गंध रहित, मान-लोभ-माया-शरीर-शब्द और शोभा से रहित, आकुलतासे रहित, केवल एकाकिन्-शुद्धात्मन्, सबके लिये हितकर, निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥१०॥ इस तरह अनुपम समयसाररुप, सुन्दर चैतन्य ही है चिन्ह जिनका, पुद्गलकेनिमित से होने वाली परिणतिसे मुक्त, पद्मनन्दो आचार्य के द्वारा बन्द्य, सम्पूर्ण गुणो के निवासस्थान, विशुद्ध सिद्धचक्र का जो स्मरण करता है, उनको नमस्कार करता हैं, या उसकी स्तुति करता हैं, वह मुक्ति को प्राप्त हुआ करता है, ॥ ११ ॥

अथ चतुर्थपरिधौ चतुःषष्ठि गुणपूजा ।

स्थापना

उर्ध्वाधोरयुतं सविन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम् ।
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलंतत्संधितत्वान्वितम् ॥
अन्तःपत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम् ।
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः ॥

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥

सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्

ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ २ ठः ठः

ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्

अथाष्टकम्—

जयति जयति यस्य प्राभवं सम्यगात्मो,-
दयांवर्जितविपक्षं विश्वकल्याणबीजम् ।
सुरसरिदमलाम्भोधारयाऽऽराधनीयम्,
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्री र्हं असिआ उसा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं जलं स्वाहा, इतिसमुच्चयमंत्रः

अथ प्रत्येक मंत्र

१ ॐ ह्रीं अर्हं जिनसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, २ ॐ ह्रीं अर्हं केवलर्द्धिसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, ३ ॐ ह्रीं अर्हं अवधिबुद्धिऋद्धिप्राप्तेभ्यो नमः स्वाहा; ४ ॐ ह्रीं अर्हं मनः पर्ययबुद्धिऋद्धि-सिद्धेभ्योनमः स्वाहा, ५ ॐ ह्रीं अर्हंबीजबुद्धिसिद्धेभ्योनमः स्वाहा ६ ॐ ह्रीं कोष्ठबुद्धिजि-नसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, ७ ॐ ह्रीं अर्हं पादानुसारिसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, ८ ॐ ह्रीं अर्हं संभिन्नसंश्रोतृसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, ९ ॐ ह्रीं अर्हं दूरास्वादनदर्शनस्पर्शनघ्राणश्रवणर्द्धिसि-द्धेभ्यो नमः स्वाहा, १० ॐ ह्री अर्हंदशपूर्वित्वसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, ११ ॐ ह्रीं अर्हं

चतुर्दशपूर्वित्वसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, १२ ॐ ह्रीं अर्हं अष्टांगमहानिमित्तबुद्धिसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा,१३ ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञाश्रमणर्द्धिसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, १४ ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्येकबुद्धसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, १५ ॐ ह्रीं अर्हं वादिर्द्धिप्राप्तेभ्यो नमः स्वाहा, १६ ॐ ह्रीं अर्हं णमो-विज्जाहराणं स्वाहा, १७ ॐ ह्रीं अर्हं जलजंघातंतुपुष्पपत्रश्रेण्यग्निशिखाचारणसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, १८ ॐ ह्री अर्हं आकाश गामित्वर्द्धिसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, १९ ॐ ह्री अर्हं विक्रियर्द्धिसिद्धिप्राप्तेभ्यो नमः स्वाहा, २० ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं स्वाहा, २१ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दीत्तितवाणं स्वाहा, २२ ॐ ह्रीं अर्हं णमो ततवाणं स्वाहा, २३ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं स्वाहा, २४ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं स्वाहा, २५ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरपरक्कमाणं स्वाहा, २६ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरबंभयारीणं स्वाहा, २७ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणोवलीणं स्वाहा, २८ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिवलीणं स्वाहा, २९ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायवलीणं स्वाहा; ३० ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं स्वाहा, ३१ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहपत्ताणं स्वाहा, ३२ ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं स्वाहा, ३३ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मलोसहिसिद्धाणं स्वाहा, ३४ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विडोसहिपत्ताणं स्वाहा, ३५ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं स्वाहा, ३६ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं स्वाहा, ३७ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठविसाणं स्वाहा, ३८ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसरसर्द्धिसिद्धाणं स्वाहा, ३९ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविषसिद्धाणं स्वाहा, ४० ॐ ह्रीं अर्हं णमो क्षीरसवीणं स्वाहा, ४१ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुसवीणं स्वाहा, ४२ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं स्वाहा, ४३ ॐ ह्री अर्हं णमो अमिय सवीणं स्वाहा, ४४ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्षीणमहानसाणं स्वाहा, ४५ ॐ ह्री अर्हं णमो अक्षीणमहालयाणं स्वाहा, ४६ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सत्तड्ढिपत्तांण ४७ ॐ ह्रीं अर्हं विषहरणर्द्धिप्राप्तेभ्योनमः स्वाहा, ४८ ॐ ह्रीं अर्हं णमो बड्ढमाणाणं स्वाहा, ४९ ॐ ह्रीं अर्हं णमो लोए सव्वसिद्धाणं स्वाहा, ५० ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो

---

१ आमर्शः—हस्तपादादिना संस्पर्शः । २ क्षेलः-निष्ठीवनम् । ३ जल्लः-स्वेदालम्बनं रजः । ४ मलः-कर्णदन्तादिसमुद्भवः ५ विड्उच्चारः । ६ अंगप्रत्यंगनखदन्तादिरवयवः तत्संस्पर्शी वाय्वादिः सर्वः । ७ आस्याविषः- उग्रविषसंपृक्तोऽप्याहारो येषामास्यगतो निर्विषी भवती, यदीयास्य निर्गतवचः श्रवणात् महाविषपरीता अपि निर्विषाः भवन्ति । ८ येषामालोकनमात्रेणातितीव्रविषदू-षिता अपि विगतविषा भवन्ति । ९ ये रसर्द्धिप्राप्ता यतयः यं ब्रुवते "म्रियस्व" स तत्क्षणएव महाविषपरीतः सन् म्रियते ते आस्यविषाः ।

महद्दिमहावीर बद्धमाण बुद्धिरिसीणं स्वाहा, ५१ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धाणं स्वाहा, ५२ ॐ ह्रीं अर्हं णमो ध्येयसिद्धाणं स्वाहा, ५३ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वस्तुबुद्धाणं स्वाहा, ५४ ॐ ह्रीं अर्हं णमो स्वस्तिसिद्धाणं स्वाहा, ५५ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अर्हत्सिद्धाणं स्वाहा, ५६ ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमात्मसिद्धाणं स्वाहा, ५७ ॐ ह्रीं अर्हं णमो परब्रह्मसिद्धाणं स्वाहा, ५८ ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमगसिद्धाणं स्वाहा, ५९ ॐ ह्रीं अर्हं णमो प्रकाशसिद्धाणं स्वाहा, ६० ॐ ह्रीं अर्हं णमो स्वयंभूसिद्धाणं स्वाहा, ६१ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अनन्तगुणसिद्धाणं स्वाहा, ६२ ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमानन्तगुणसिद्धाणं स्वाहा, ६३ ॐ ह्रीं अर्हं णमो लोकवासिसिद्धाण स्वाहा, ६४ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अनाद्यनुपम-सिद्धाणं स्वाहा.

उदयति परमात्मज्योतिरुद्योति यस्मात् ।
विशदविनययुक्त्या ध्वस्तमोहान्धकारम् ।
शुचितरघनसारोल्लासिभिश्चन्दनौघैं,—
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ।। २ ।। चन्दनम् ।।

अहमहमिकयोच्चैः सम्यगाराधनायाम् ।
सुरनरखचरेन्द्राः यस्य भक्त्या यतन्ते ।।
ललितसदकपुंजैः केवलज्ञानहेतो,–
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ।। ३ ।। अक्षतान् ।।

भवभयगुरुपारावारपारं लभन्ते,
विहितशिवसमृद्धेः सेवया यस्य सन्तः ।
कमलवकुलकुंदोदारमंदार पुष्पै–,
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ।। ४ ।। पुष्पाणि ।।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

जननवनहुताशं छिन्नसन्मोहपाशम्,
शमितमदनमानं विश्वविद्यानिदानम् ।
चरुभिरुरुगुणौघं प्रीणितप्राणिसंघम् ।
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ५ ॥ नैवेद्यम् ॥

चिदचिदखिलजीवाजीवभेदादिवेद्यम्,
सकलभुवननेत्रं ज्ञानमाविष्करोति ।
स्मरणमपि यदीयं दीपदीप्रप्रभौघैः,
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ६ ॥ दीपम् ॥

भवति न भावभाजां ध्यानतो यस्य पीडा,
ग्रहदितिशितिरक्षःप्रेतभूतप्रसूता ॥
अगुरुतुहिनभास्वच्चन्दनोद्भूतधूपैः,
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ७ ॥ धूपम् ॥

फलमतुलमनंतं मुक्तिसौख्यं प्रदीप्तम्,
फलति विपुलसेवा सम्यगाविः कृतोच्चैः ।
असदृशमहिमश्रीमंदिरं मातुलिंगैः,-
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ८ ॥ फलानि ॥

अभिनवजलगंधाऽत्रंदमंदारमाला,-
ललितममलमर्घं संददाम्यादरेण ।
गणधरवलयाय श्रीयुजे पद्मनन्दी,
सुरहरिमहितायाः प्राप्तये मुक्तिलक्ष्म्याः ॥ ९ ॥ अर्घम् ॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसानमः एतन्मंत्रेणाष्टोतरं शतं जाप्यं देयम् ।

अथ जयमाला

योगीन्द्रैर्निजमानसे प्रतिदिनं संचिन्तनीयाः स्वयम्,
देवा इन्द्रनरेन्द्रपूजितपदाः दुष्कर्मविच्छित्तये ।
कर्मावद्यविवर्जिता वसुगुणालंकारभूताः सदा,
सिद्धान्तान् जयमालया विमलया भक्त्या स्तवीमि श्रिये ।। १ ।।

महाद्दढमोहविधेः परमुक्त, स्वकीयगुणद्रविणद्युतिरक्त ।
चिदात्मरुचे निजजात विकाय,पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ।। २ ।।

चिदावरणक्षयनिश्चितवास, स्वनंतपदार्थविभेदसमास ।
चिदात्मचितो निजजीतनिकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ।। ३ ।।

स्वकातमर्वाजित दर्शनधार, स्वलेपितदर्शनलोपकभार ।
सुकेवलदर्शनतोय विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ।। ४ ।।

सुदृक्चिदनंतसुशक्तिकदेह, क्षयंकृतविघ्नकरव्रजगेह ।
चिदात्मसुवीर्यगुणेन विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ।। ५ ।।

क्षयंगतनाम चिरंधृतसूक्ष्म, समीपविनिर्मिततद्गुणलक्ष्म ।
चिदात्मकसूक्ष्मगुणेन विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ।। ६ ।।

अरुप्यवगाहनभावसुपूर, चतुर्विधपापविकर्दमदूर ।
ततस्त्वमनंतगुणेन विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ।। ७ ।।

निरस्तगुरुत्वलघुत्वकभाव, तथा भवकाननदुःसहदाव ।
द्विधातुलकर्मगतेन विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ॥ ८ ॥

मार्गदर्शक :- आचार्य

द्विधाहतदुःखदवेदनपक्ष, स्वकात्मसमर्पितशास्वतसौख्य ।
अबाधकदेवगुणेन विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआ उसा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः पूर्णार्घम् स्वाहा ।

घत्ता–विधुतकुविधिपाशं मुक्तिलीलाविलासम्,
परमगुणनिवासं चित्सरोराजहंसम् ।
विनुतनृपसुचक्रैः संस्तुतं सिद्धचक्र ।–
मतनु च निजभक्त्या वन्दते शौभचन्द्रः ॥ १० ॥

इत्याशीर्वादः

चतुर्थ जयमाला का अर्थ

मैं उन सिद्ध भगवान्की, मोक्षलक्ष्मीकी प्राप्ति के लिये भक्तिपूर्वक विमल जयमालाके द्वारा स्तुति करता हूं जिनका अपने मतमें स्वयं योगीन्द्र भी दुष्कर्मोंकी व्युच्छित्ति के लिये चिन्तवन करते हैं, जिनके चरण कमल इन्द्र तथा नरेन्द्रोंके द्वारा भी पूजित हैं, कर्मरूप अवद्यसे जो रहित, और सदा अष्ट गुणोंके अलंकारभूत है ॥ १ ॥

महान् दृढ मोहकर्मसे सर्वथा रहित, अपने गुणरूपी सुवर्णकी कांतिसे रंजित, चित्स्वरूप रुचिके धारक, अपने स्वरूप में ही उत्पन्न, शरीर रहित सिद्धसमूह सदा मुझे पवित्र करो ॥ २ ॥

चेतनाके आवरण करनेवाले—ज्ञानावरण दर्शनावरण के क्षयसे निश्चित है वास जिनका, अनन्त पदार्थोंका भेद करके भले प्रकार रहनेवाले, ... हे सिद्धसमूह सदा

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

मुझे पवित्र करो ॥ ३ ॥ .... ॥ ४ ॥ सम्यग्दर्शनज्ञानरूप अनंत शक्तिके पिंड, नष्ट कर दिया हैं विघ्न करनेवाले कर्म समूहको जिन्होने, चित्स्वरूप अनन्त वीर्य गुणके स्वामी अशरीर सिद्धसमूह मुझे सदा पवित्र करो ॥ ५ ॥ क्षयको प्राप्त हो गया है नाम कर्म जिनका, सूक्ष्मत्व गुणको धारण करनेवाले, अपने निर्मितगुण ही हैं चिन्ह जिनका, चित्स्वरूप सूक्ष्मगुणके स्वामी अशरीर सिद्ध निकाय मुझे सदा पवित्र करो॥ ६ ॥ अरूपी, अवगाहन गुणसे पूर्ण, चार तरहके आयु कर्मरूप कीचड़से दूर अनंतगुणोंके स्वामी अशरीर सिद्ध निकाय मुझे सदा पवित्र करो ॥ ७ ॥ गुरुत्वलघुत्वभावसे रहित, संसार रूपी वनकी दुःसह अग्निका जिन्होने निरसन कर दिया है, दो प्रकारके अतुल गोत्रकर्मसे रहित स्वामी अशरीर सिद्धनिकाय सदा मुझे पवित्र करो ॥ ८ ॥ दोनोंही तरहके दुःख देनेवाले वेदनीय कर्मके पक्षका जिन्होने घात कर दिया है, स्वयंका प्राप्त कर लिया हैं शास्वत सुख जिनने ऐसे बाधारहित गुणोंके स्वामी देव अशरीर सिद्धनिकाय सदा मुझे पवित्र करो ॥९॥

अथ पचमपरिधिगताष्टाविंशोत्तरशत गुणपूजा ।

स्थापना

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम् ।
वर्गापूरितादिग्गताम्बुजदलं तत्संधिततत्त्वान्वितम् ॥
अन्तः पत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम् ।
देवंध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः ॥ १ ॥

१-२-इनका अर्थ ठीक २ हमारी समझ में नहीं आ सका। ३-इस जयमाला के दूसरे आदि पद्य में क्रम से मोह ज्ञानावरण—दर्शनावरण—अन्तराय—नाम— आयु—गोत्र—और वेदनीय इन आठ कर्मों के अभाव से प्राप्त गुणों की अपेक्षा सिद्धों की महिमा का वर्णन किया गया है।

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।

वन्देहं स्वस्वात्मस्थानस्थपूर्णमनुपद्रवम् ॥ १ ॥

सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।

संस्थापयामि सिध्दं कर्मानलदावमेघौघम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्

" " " " " अत्र तिष्ठ २ ठः ठः

" " " " " अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्

अथाष्टकम्—

विमलशीतलसज्जलधारया, सविधबंधुरकेशरसारया ।

प्रथमबोधकसत्कजिनेश्वरम् प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं स्वस्थानमाश्रितातीतानागतसिद्धाधिपतिभ्यो नमः स्वाहा, जलम् । इति समुच्चयमंत्र।

अथ प्रत्येक मंत्र

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अस्तित्वधर्माय नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं वस्तुत्वधर्माय नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं प्रमेयत्वधर्माय नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं चेतनत्वधर्माय नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वधर्माय नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं अमूर्तत्वधर्माय नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं प्रदेशवत्वधर्माय नमः स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं सम्यक्त्वधर्माय नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं ज्ञानधर्माय नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं वीर्यधर्माय नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं सूक्ष्मधर्माय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं अवगाहनधर्माय नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं अव्याबाधगुणाय

नमः स्वाहा। १४। ॐ ह्रीं स्वसंवेदनज्ञानाय नमः स्वाहा। १५। ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनादि-चतुष्टयात्मकार्हद्भ्यो नमः स्वाहा। १६। ॐ ह्रीं सम्यक्त्वादिगुणात्मकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। १७। ॐ ह्रीं पंचाचाराचार्येभ्यो नमः स्वाहा। १८। ॐ ह्रीं रत्नत्रयप्रकाश-पाठकेभ्यो नमः स्वाहा। १९। ॐ ह्रीं स्वस्वरूपसाधकसर्वसाधुभ्यो नमः स्वाहा। २०।

ॐ ह्रीं अकृतमनः क्रोधसंरम्भमनोगुप्तये नमः स्वाहा। २१। ॐ ह्रीं अकारितमनः क्रोधसंरम्भसानन्दधर्माय नमः स्वाहा २२। ॐ ह्रीं नानुमोदितमनःक्रोधसंरम्भानन्दधर्माय नमः स्वाहा। २३। ॐ ह्रीं अकृतमनः क्रोधसमारम्भपरमानन्दाय नमः स्वाहा। २४। ॐ ह्रीं अकारित मनः क्रोधसमारम्भसंतुष्टधर्माय नमः स्वाहा। २५। ॐ ह्रीं नानुमोदितमनः क्रोधसमारम्भसंतोषधर्माय नमः स्वाहा। २६। ॐ ह्रीं अकृतमनः क्रोधारम्भस्थानाय नमः स्वाहा। २७। ॐ ह्रीं अकारितमनः क्रोधारम्भस्थानाय नमः स्वाहा। २८। ॐ ह्रीं नानुमोदितमनः क्रोधारम्भस्थानाय नमः स्वाहा। २९। ॐ ह्रीं अकृतमनोमानसंरम्भधर्माय नमः स्वाहा। ३०। ॐ ह्रीं अकारितमनोमानसंरम्भानन्यशरणाय नमः स्वाहा। ३१। ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानसंरम्भसुगतभावाय नमः स्वाहा। ३२। ॐ ह्रीं अकृतमनोमानसमारम्भसुखात्मगुणाय नमः स्वाहा। ३३। ॐ ह्रीं अकारितमनोमानसमारम्भानन्यगताय नमः स्वाहा। ३४। ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानसमारम्भानन्यशरणाय नमः स्वाहा। ३५। ॐ ह्रीं अकृतमनोमानारम्भानन्तज्ञानाय नमः स्वाहा। ३६। ॐ ह्रीं अकारितमनोमानारम्भानन्तगुणाय नमः स्वाहा। ३७। ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानारम्भानन्तगुणय नमः स्वाहा:। ३८। ॐ ह्रीं अकृतमनोमायासंरम्भब्रह्मस्वरूपाय नमः स्वाहा। ३९। ॐ ह्रीं अकारितमनोमायासंरम्भचैतन्यस्वभावाय नमः स्वाहा। ४०। ॐ ह्रीं नानुमोदितमनो-मायासंरम्भानन्यस्वभावाय नमः स्वाहा। ४१। ॐ ह्रीं अकृतमनोमायासमारम्भस्वानु-भूतिरत्नाय नमः स्वाहा। ४२। ॐ ह्रीं अकारितमनोमायासमारम्भसाम्यधर्माय नमः स्वाहा। ४३। ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमायासमारम्भाय नमः स्वाहा। ४४। ॐ ह्रीं अकृतमनोमायारम्भपरमशांतभावाय नमः स्वाहा। ४५। ॐ ह्रीं अकारितमनो-

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

मायारम्भनिराकुलस्वभावाय नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमायारम्भानन्यत्वाय नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभसंरम्भानन्तभावाय नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभसंरम्भपरमानन्दभावाय नमः स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभ-संरम्भभावायय: नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभसमारम्भविदाकाराय नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभसमारम्भनन्ताकाराय नम. स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभसमारम्भ[illegible]ाय नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभा-रम्भचिदाकाराय नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभारम्भचिन्मयस्वरूपाय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभाम्भस्वरूपाय नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधसंरम्भवाग्गुप्तये नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोध-संरम्भसिद्धस्वरूपाय नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधसंरम्भस्वात्मोप-लब्धिप्राप्ताय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधसमारम्भस्वानुभूतिरताय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधसमारम्भासाधारणधर्माय नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्री नानुमोदितवचनक्रोधसमारम्भपरमशान्तिस्वभावाय नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधारम्भपरमामृततुष्टाय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधा-रम्भसमरसरसिकाय नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधारम्भपरमशांतये नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं अकृतववनमानसंरम्भस्वधर्माय नमः स्वाहा । ६६ ॐ ह्रीं अकारित-वचनमानसंरम्भाव्यक्तस्वभावाय नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानसंरम्भदु-लंभाय नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं अकृतवचनमानसमारम्भपरमसंगमनिराकरणाय नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं अकारितवचनमानसमारम्भपरमस्वभावाय नमः स्वाहा । ७० ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानसमारम्भैकत्वगतपरमसुखाय नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं अकृतवचन-मानारम्भपरमात्मराजपरमधर्माय नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्रीं अकारितवचनमानारंभशास्व-तानन्दाय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानारम्भामृतपूर्णाय नमः स्वाहा । ७४ ॐ ह्रीं अकृतवचनमायासंरम्भानन्तधर्मैकरूपाय नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं अकारित-

वचनमायासंरम्भामृतचन्द्राय नमः स्वाहा। ७६। ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायासंरम्भाने-कान्तमयमूर्तये नमः स्वाहा। ७७ । ॐ ह्रीं अकृतवचनमायासमारम्भसत्तालोकगुणाय नमः स्वाहा। ७८। ॐ ह्रीं अकारितवचनमायासमारम्भसत्तालोकगुणाय नमः स्वाहा । ७९। ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायासमारम्भानेकान्तमयमूर्तये नमः स्वाहा। ८०। ॐ ह्रीं अकृत-वचनमायारम्भातुलज्ञानाय नमः स्वाहा। ८१। ॐ ह्रीं अकारितवचनमायारम्भातुलज्ञानाय नमः स्वाहा। ८२। ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायारम्भनिरवधिसुखाय नमः स्वाहा। ८३। ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभसंरम्भव्यापकधर्माय नमः स्वाहा। ८४। ॐ ह्रीं अकारितवचनलो-भसंरम्भव्यापकगुणाय नमः स्वाहा। ८५। ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनलोभसंरम्भाचलाय नमः स्वाहा। ८६। ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभसमारम्भनिरालम्बाय नमः स्वाहा। ८७। ॐ ह्रीं अकारितवचनलोभसमारभनिरालम्बाय नमः स्वाहा। ८८। ॐ ह्रीं नानुमोदिनवचनलोभ-समारम्भाखण्डाय नमः स्वाहा । ८९। ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभारम्भसमयसाराय नमः स्वाहा। ९०। ॐ ह्रीं अकारितवचनलोभारम्भसमयसाराय नमः स्वाहा। ९१। ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनलोभारम्भनिरंजनाय नमः स्वाहा। ९२। ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधसरम्भका-यगुप्तये नमः स्वाहा। ९३। ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधसंरम्भाकायाय नमः स्वाहा । ९४। ॐ ह्रीं नानुमोदितकायक्रोध-संरम्भशुद्धकायाय नमः स्वाहा। ९५। ॐ ह्रीं अकृतकायक्रो-धसमारम्भसत्त्वगुणाय नमः स्वाहा। ९६ । ॐ ह्रीं अकारितकायकोधसमारम्भानन्यशरणाय नमः स्वाहा। ९७। ॐ ह्री नानुमोदितकायक्रोवसमारम्मानन्यशरणाय नमः स्वाहा। ९८। ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधारम्भशुद्धद्रव्याय नमः स्वाहा। ९९। ॐ ह्रीं अकारितकाय-क्रोधारम्भासंसाराय नमः स्वाहा। १००। ॐ ह्रीं नानुमोदितकायक्रोधारम्भजैनधर्माय नमः स्वाहा। १०१। ॐ ह्रीं अकृतकायमानसंरंभस्वरसगुप्तये नमः स्वाहा। १०२। ॐ ह्रीं अकारितकायमानसंरंभ स्वरूपगुप्तये नमः स्वाहा। १०३। ॐ ह्रीं नानुमोदित-कायमानसंरंभध्येयभावाय नमः स्वाहा। १०४। ॐ ह्रीं अकृतकायमानसमारंभपरमारा-ध्याय नमः स्वाहा। १०५। ॐ ह्रीं अकारितकायमानसमारंभानंदगुणाय नमः स्वाहा।

१०६ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानसमारंभस्वानन्दनन्दिताय नमः स्वाहा । १०७ । ॐ ह्रीं अकृतकायमानारंभपरमसंतोषाय नमः स्वाहा । १०८ । ॐ ह्रीं अकारितकायमानारम्भस्वभावाय नमः स्वाहा । १०९ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानारम्भशुद्धपर्यायधर्माय नमः स्वाहा । ११० । ॐ ह्रीं अकृतकायमायासंरम्भामृतगर्भाय नमः स्वाहा । १११ । ॐ ह्रीं अकारितकायमायासंरम्भचैतन्यात्मकाय नमः स्वाहा । ११२ । ॐ ह्रीं नानुमोदित कायमायासंरम्भसमरसभावाय नमः स्वाहा । ११३ । ॐ अकृतकायमायासमारम्भाच्छेदनाय नमः स्वाहा । ११४ । ॐ ह्रीं अकारितकायमायासमारम्भस्वतन्त्रधर्माय नमः स्वाहा । ११५ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायासमारंभधर्मसमूहाय नमः स्वाहा । ११६ । ॐ ह्रीं अकृतकायमायारम्भपरमात्मभुवे नमः स्वाहा । ११७ । ॐ ह्रीं अकारितकाय-मायारम्भात्मकाय नमः स्वाहा । ११८ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायारम्भात्मनिष्ठाय नमः स्वाहा । ११९ । ॐ ह्रीं अकृतकायलोभसंरम्भाक्षोभाय नमः स्वाहा । १२० । ॐ ह्रीं अकारितकायलोभसंरम्भस्वभावाय नमः स्वाहा । १२१ । ॐ ह्रीं नानुमोदित-कायलोभसंरम्भभावाय नमः स्वाहा । १२२ । ॐ ह्रीं अकृतकायलोभसमारम्भपरम-चित्परिणताय नमः स्वाहा । १२३ । ॐ ह्रीं अकारितकायलोभसमारम्भस्वधर्मरताय नमः स्वाहा । १२४ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभसमारम्भाव्यक्तधर्माय नमः स्वाहा । १२५ । ॐ ह्रीं अकृतकायलोभारम्भसुखाय नमः स्वाहा । १२६ । ॐ ह्रीं अकारितकाय-लोभारम्भाकषायाय नमः स्वाहा । १२७ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभारम्भशौचगुणाय नमः स्वाहा । १२८ ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

घुसृणकुंकुमचन्दनसद्भवैः, बहुसुगंधितनिर्मलप्रासुकैः ।
प्रथमबोधकसत्कजिनेश्वरम्, प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ २ ॥
चन्दनम् ।

विमलतन्दुलनिर्मलसंचयैः,
कृतसुमौक्तिककल्पसुनिश्चयैः ।
प्रथमबोधकसत्कजिनेश्वरम्,
प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ ३ ॥ अक्षतान्

कुसुमचंपकपंकजकुंदकैः,
सहजजातसुगंधविमोदकैः ।
प्रथमबोधकसत्कजिनेश्वरम्,
प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ ४ ॥ पुष्पाणि ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सकललोकविमोदनकारकैः,
चरुवरैश्चसुधाकृतिधारकैः ।
प्रथमबोधकसत्कजिनेश्वरम्,
प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ ५ ॥ नैवेद्यम्,

तरलवार सुकांतसुमंडनैः,
सदनरत्नचयैरघरवण्डनैः ।
प्रथमबोधकसत्कजिनेश्वरम्,
प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ ६ ॥ दीपम् ॥

अगुरुधूपभवेन सुगन्धिना ।
भ्रमरकोटिसमिन्द्रियबन्धुना ।
प्रथमबोधकसत्कजिनेश्वरम्,
प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ ७ ॥ धूपम् ।

पक्व

सुखदपक्वकसुशोभनसत्फलैः ।

क्रमुकनिम्बुकमोचसुलांगलैः ।

प्रथमबोधकसत्कजिनेश्वरम्,

प्रवियजे नतनाकनरेश्वरम् ॥ ८ ॥ फलम् ॥

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

जिनवरागमसद्गुरुमुख्यकान्,

प्रवियजे गुरुसद्गुणमुख्यकान् ।

सुशुभचन्द्रतरान्, कुसुमोत्करान्,

समयसारपरान् सुखसागरे ॥ ९ ॥ अर्घम् ॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसानमः, इतिमंत्रेण जपः करणीयः ।

ये ज्ञानावरणादिकानतितरां निर्मूल्य दोषान् बलात्,

संसारोरुसरिद्विशोषकमहः संदर्शनादीन् गताः ।

सिद्धस्तोत्रविबुद्धज्ञानमहसं कुर्वन्तु सिद्धाः श्रियम्,

चक्रिप्रह्वसुरेन्द्रपूजितपदा भक्तात्मनां सर्वदा ॥ १ ॥ पुष्पांजलिः ॥

अथ जयमाला

चिदानन्दमानन्दलीलानिवासम्,

अखण्डस्वभावं जिनं सिद्धराशिम् ।

विषादोज्झितं वीतरागं विचक्रम्,

सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ १ ॥

विशुद्धोदयं प्राप्तसंसारपारम्,
सुसंविन्निधानं परं निर्विकारम्।
विमायं विभायं विनायं विचक्रम्,
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ २ ॥

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

विमुक्ताशयादित्यविज्ञाननेत्रम्,
विमोहं समस्फारपीयूषगात्रम् ।
अमेयप्रभावं विदर्पं विचक्रम्,
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ३ ॥

विविक्तं कलं निष्कलंकं कविस्थम्,
सुसेव्यं विपाकं कविशंकं ह्यपारम् ।
विकालं विकायं विकामं विचक्रम्,
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ४ ॥

त्रिलोकातिशायिप्रभं विश्वरूपम्,
गृहं तेजसां वीतवर्णं विरूपम् ।
सदा दृङ्मयं ध्येयरूपं विचक्रम्,
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ५ ॥

अगम्यं मुनीनामपि सुप्रबोधम्,
कृताहंकृतिक्रोधचिन्तानिरोधम् ।
अपारं जरामृत्युमुक्तं विचक्रम्,
सद तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ६ ॥

अनन्तं विरामं विकारावमुक्तम्,
विमुक्तस्फुरत्कामिनीरंगरक्तम्।
निरीहापघातं विहीनं विचक्रम्,
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ७॥

प्रदुष्टाष्टकर्मेन्धनेभ्यो हुताशम्,
सुसिद्धाष्टकं चिद्गुणं चिद्विलासम्।
उदासीनमीशानमीशं विचक्रम्,
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ८॥

अजं शास्वतं निर्जरं देवदेवम्,
विलोभं कृतानेकभूपालसेवम्।
वषट्वैकृतं वा विपाशं विचकम्।
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ९॥

प्रयाति क्षयं कर्म यद्ध्यानयोगात्,
समत्वं गतानां मुनीनां क्षणेन।
प्रसिद्धं विशुद्धं तथानन्दरूपम्,
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ १०॥

विगतमदनभेदं दोषसंदोहरोधम्,
स्मरति विरसपूर्णं शंकरं सारभूतम्।
अजरममरवन्द्यं पद्मनन्द्यादिदेवम्,
मुनिनिवहनिषेव्यं सिद्धचक्रं सुदेवम् ॥ ११॥

इत्थं सिद्धमुपास्य शर्म सहितं संसारबाधापहम् ।
नोद्रव्याशुभभावकर्मरहितम् संनव्यपर्यापहम् ।
यो ध्यायेत्फलमश्नुते शिवमयं सौख्यं च हित्वाऽशिवम्,
संभुज्याखिलमंडलेशविबुधरवामिस्थितिं सर्वतः ॥ १२ ॥

इत्याशीर्वादः

पंचम जयमाला का अर्थ

जो ज्ञानावरणादि दोषोंका बलपूर्वक और अच्छी तरहसे निर्मूलन करसंसाररूपी नदीके शोषण करने वाले सम्यग्दर्शनादिकको प्राप्त हो चुके हैं, चक्रवतिप्रमुख अथवा सुरेन्द्रोंके द्वारा पूजित हैं चरण जिनके ऐसे सिद्ध भगवान् सिद्धस्तोत्रके द्वारा प्रकट हो गया हैं ज्ञानरूप तेज जिनका ऐसे भक्तात्माओंको मोक्षलक्ष्मी प्रदान करें ॥ १ ॥

चिदानन्दस्वरूप, सुखके लीलास्थल, अखण्ड है स्वभाव जिनका, कर्मोंके विजेता, सिद्धात्माओंके समूहरूप, विषादरहित, वीतराग, चक्र—पारवण्ड अथवा सांसारिक परिवर्तनसे दूर सिद्धसमूहका मैं सदा अच्छी तरह स्तवन करता हूँ । २ । विशुद्ध है उदय जिनका जो संसारके पारको प्राप्त हो चुके हैं, सम्यग्ज्ञानके निधान, उत्कृष्ट, निर्विकार, मायारहित, विभा—अलौकिक प्रभाको प्राप्त, उत्कृष्ट नेतृत्वके धारक संसाररहित सिद्धसमूहका मैं स्तवन करता हूं ॥ ६ ॥

आशय—संकल्पविकल्पसे रहित सूर्यके समान ज्ञान ही है नेत्र जिनका, मोहरहित, समतारूपी महान्अमृत ही है शरीर जिनका, अप्रमाण प्रभावके धारक, दर्परहित, अशरीर सिद्धसमूहका मैं सदा स्तवन करता हूं । ॥ ४ ॥ एकान्तरूप, मनोज्ञ, कलंकरहित, विद्वानों या कवियोंके हृदयमें स्थित, भलेप्रकार सेव्य, विपाक अवस्थाको प्राप्त, शंकारहित, अपार,

काल-काय-काम और संसारचक्रसे रहित सिद्धसमूहका मैं सदा अच्छी तरह स्तवन करता हूं ॥ ५ ॥ तीन लोक में सर्वोत्कृष्ट है प्रभा जिनका, ज्ञानकी अपेक्षा जो विश्वरूप है,
मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज
प्रकाशोंके निवासस्थान, वर्णनरहित विशिष्ट स्वरूपके धारक, सदादर्शनमय, ध्येयरूप संसाररहित सिद्धसमूहका मैं सदा स्तवन करता हूं ॥ ६ ॥ मुनियोंके लिये भी अगम्य, समीचीन उत्कृष्ट बोधरूप, कर दिया है अहंकार क्रोध ओर चिन्ताका निरोध जिन्होने, अपार, जरा मृत्यु से रहित संसार चक्रसे दूर सिद्ध समूहका मैं सदा स्तवन करता हूं ॥ ७ ॥ अत्यन्त, विश्रामरूप. विकारोंसे रहित, छोड़ दिया है स्फुरायमान कामिनियोंका रग राग जिनने, इच्छा और अपघातसे रहित, उत्कृष्ट, संसाररहित सिद्धसमूहका मैं सदा स्तवन करता हूं ॥ ८ ॥ अत्यन्त दुष्ट अष्ट कर्मरूपी इन्धनके लिये अग्निसमान, सिद्ध कर लिया है गुणाष्टकको जिनने, चिद्‌गुणके धारक, चेतनाका ही है विलास जिनमे, उदासीन—वीतराग, ईशान—परमेश्वर, परमात्मा, संसाररहित सिद्धसमूहका मैं सदा स्तवन करता हूं ॥ ९ ॥ जन्मरहित शास्वत, जरा रहित, देवोंके भी देव, लोभरहित, की है अनेक भूपालोंने सेवा जिनकी, विकारोंके समूहको जिन्होने आहुतिका विषय बना दिया है, संसारके पाशसे रहित विचक्र सिद्धचक्रका मैं सदा स्तवन करता हूं ॥ १० ॥ ....—॥ ॥ ११ ॥ समस्त कामदेवके भेदोंसे रहित, दोषोकेसमूहका निरोध करनेवाले, रसरहित अवस्थासे पूर्ण, कल्याणकारी, सारभूत, अजर —कभी जीर्ण न होने वाले, देवोंके, द्वारा वन्द्य, पंचपरमेष्ठियोंमें प्रथम देव मुनिसमूह के द्वारा सेव्य, समीचीन देवरूप सिद्धचक्रका पद्मनन्दी आचार्य स्मरण करते हैं ॥ १२॥ इस तरह कर्मरहित, संसारकी बाधाको दूर करनेवाले, नोकर्म द्रव्यकर्म और अशुभ भावकर्मसे रहित, नवीन अवस्थाको प्राप्त सिद्ध परमेष्ठिका जो ध्यान करता है वह समस्त अशुभका परित्याग करके सम्पूर्ण मांडलिक राजाओं तथा देवोंके स्वामित्व को भले प्रकार भोग करके अमृतरूप शिवमय—कल्याणमय फलको प्राप्त हुआ करता है ॥ १३ ॥

अथ षष्ठपरिधिगतषड्पंचाशदुत्तरद्विशतगुणपूजा ।

स्थापना

उर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम् ,
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम् ।
अन्तःपत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम् ,
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः ॥१॥

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ,
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥

सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमंघौघम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्
" " " " " अत्र तिष्ठ २ ठः ठः
" " " " " अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्

अथाष्टकम्—

शुचिविमलपवित्रैस्तीर्थसंभूततोयैः
सुरभिवरसुमिश्रैः सेवितैः षट्पदौघैः ।
कनककृतसुपूजादत्तभृंगारनालैः,
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं चिरतरसंसारकारणाज्ञाननिर्द्धूतोद्भूतकेवलज्ञानातिशयसम्पन्नसिद्धाधिपतते नमः स्वाहा, जलम्, इति समुच्चयमंत्रः ।

अथ पृथक् २ मंत्राः-

ॐ ह्रीं अभिनिबोधवारकविनाशकसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा ।१। ॐ ह्रीं द्वादशश्रुतावरणीय कर्मविमुक्ताय सिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं असंख्येयलोकभेदविभिन्नावधिज्ञानावरणविमुक्ताय सिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञानावरणरहितसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं निरिबलद्रव्यगुणपर्य्यायावबोधककेवलज्ञानावरणियविमुक्ताय सिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं सकलदर्शनावरणविनाशकसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं सर्वकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं दर्शनावरणीयकर्मरहिताय सिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं चक्षुदर्शनावरणकर्मरजोमुक्ताय नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं अचक्षुदर्शनावरणविमुक्ताय नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं अवधिदर्शनावरणविमुक्ताय नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरणविमुक्ताय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं निद्राकर्मविमुक्ताय नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं निद्रानिद्राकर्मरहिताय नमः स्वाहा । १४ ॐ ह्रीं प्रचलकर्मरहिताय नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं प्रचला प्रचलाकर्मरहिताय नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धिकर्मरहिताय नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मरहिताय नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं असातावेदनीयकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं सातावेदनीयकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा ।२०। ॐ ह्रीं प्रबलतरमहामोहकर्मविप्रमुक्ताय नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं मिथ्यात्वकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं सम्यङ्मिथ्यात्वकर्मरहिताय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं सम्यक्त्वकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं अनन्तानुवन्धिक्रोधविमुक्ताय नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धिमानमुक्ताय नमः स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धिमायाविमुक्ताय नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धिलोभमुक्ताय नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणक्रोधरहिताय नमः स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमानमुक्ताय नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमायामुक्ताय नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणलोभरहिताय नमः स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणक्रोधमुक्ताय नमः स्वाना । ३३ ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानमानमुक्ताय नमः स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानमायामुक्ताय नमः स्वाहा ।

मार्गदर्शक

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

३५। ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानलोभलंघकाय नमः स्वाहा । ३६। ॐ ह्रीं संज्वलनक्रोधरहिताय नमः स्वाहा। ३७। ॐ ह्रीं संज्वलनमानरहिताय नमः स्वाहा। ३८। ॐ ह्रीं संज्वलनमा-यामुक्ताय नमः स्वाहा। ३९। ॐ ह्रीं संज्वलनलोभरहिताय नमः स्वाहा। ४०। ॐ ह्रीं हास्यहिंसकाय नमः स्वाहा । ४१। ॐ ह्रीं रतिरहिताय नमः स्वाहा । ४२। ॐ ह्रीं अरतिद्वेषकाय नमः स्वाहा। ४३। ॐ ह्रीं शोकशंकानिवारकाय नमः स्वाहा । ४४। ॐ ह्रीं भयकर्मभंजकाय नमः स्वाहा । ४५। ॐ ह्रीं जुगुप्सारोगचिकित्सकाय नमः स्वाहा। ४६। ॐ ह्रीं स्त्रीवेदकर्मरहिताय नमः स्वाहा। ४७। ॐ ह्रीं पुंवेदमारकाय नमः स्वाहा। ४८। ॐ ह्रीं नपुंसकवेदविनाशकाय नमः स्वाहा। ४९। ॐ ह्रीं आयुष्यकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा। ५०। ॐ ह्रीं नरकायुष्कर्मरहिताय नमः स्वाहा। ५१। ॐ ह्रीं तिर्यगायुष्यकर्ममु-क्ताय नमः स्वाहा। ५२। ॐ ह्रीं मनुष्यायुष्कर्मकृतान्तकाय नमः स्वाहा। ५३। ॐ ह्रीं देवायुष्कर्मरहिताय नमः स्वाहा। ५४। ॐ ह्रीं नामकर्मरहिताय नमः स्वाहा । ५५। ॐ ह्रीं नारकगतिनिवारकाय नमः स्वाहा। ५६। ॐ ह्रीं तिर्यग्गतिछेदकाय नमः स्वाहा। ५७। ॐ ह्रीं मनुष्यगतिनामकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा। ५८। ॐ ह्रीं देवगतिनामकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा। ५९ ॐ ह्रीं एकेन्द्रियजातिजयप्राप्ताय नमः स्वाहा। ६०। ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियजाति-नाममंथकाय नमः स्वाहा।। ६१। ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियजातिनामकर्मनाशकाय नमः स्वाहा। ६२। ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजातियविध्वंसकाय नमः स्वाहा। ६३। ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियजाति-रहिताय नमः स्वाहा । ६४। ॐ ह्रीं औदारिककर्ममुक्ताय नमः स्वाहा। ६५। ॐ ह्रीं वैक्रियिककर्मविध्वंसकाय नमः स्वाहा । ६६। ॐ ह्रीं आहारकशरीररहिताय नमः स्वाहा। ६७। ॐ ह्रीं तैजसकर्मविध्वंसकाय नमः स्वाहा । ६८। ॐ ह्रीं कार्मणपिंडछेदकाय नमः स्वाहा। ६९। ॐ ह्रीं औदारिकबंधनरहिताय नमः स्वाहा। ७०। ॐ ह्रीं वैक्रियिकबंधन-रहिताय नमः स्वाहा । ७१। ॐ ह्रीं आहारकबंधनरहिताय नमः स्वाहा । ७२। ॐ ह्रीं तैजसबंधनरहिताय नमः स्वाहा। ७३। ॐ ह्रीं कार्मणबंधनमुक्ताय नमः स्वाहा। ७४। ॐ ह्रीं औदारिकसंघातरहिताय नमः स्वाहा । ७५। ॐ ह्रीं वैक्रियिकसंघातरहिताय नमः स्वाहा। ७६। ॐ ह्रीं आहारकसंघातरहिताय नमः स्वाहा। ७७। ॐ ह्रीं तैजससंघातरहि-ताय नमः स्वाहा । ७८। ॐ ह्रीं कार्मणसंघातरहिताय नमः स्वाहा । ७९। ॐ ह्रीं समचतुरस्त्रसंस्थानरहिताय नमः स्वाहा। ८०। ॐ ह्रीं न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थानविनाशकाय

नमः स्वाहा ।८१। ॐ ह्रीं बलमीकसंस्थानकृतान्तकाय नमः स्वाहा ।८२। ॐ ह्रीं कुब्जकसंस्थानरहिताय नमः स्वाहा ।८३। ॐ ह्रीं वामनसंस्थाननामकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं हुंडकसंस्थानशांतकाय नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं औदारिकशरीरां–गोपांगमुक्ताय नमः स्वाहा । ८६ । ॐ ह्रीं वैक्रियिकांगोपांगघातकाय नमः स्वाहा । ८७ । ॐ

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

ह्रीं आहारकांगोपांगविनाशकाय नमः स्वाहा । ८८ ।ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहननशांतकाय नमः स्वाहा । ८९ । ॐ ह्रीं वज्रनाराचसंहननरहिताय नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं नाराचसंहननस्फोटकाय नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं अर्द्धनाराचसंहननशांतकाय नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं कीलकसंहननमुक्ताय नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं असंप्राप्तस्फाटिकसंहननभे–दकाय नमः स्वाहा ।९४। ॐ ह्रीं श्वेतनामकर्मकृतांतकाय नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्री पीतनामकर्मकृतांतकाय नमः स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं हरितकर्मरहिताय नमः स्वाहा । ९७ । ॐ ह्रीं रक्तनामकर्मरहिताय नमः स्वाहा ।९८ । ॐ ह्रीं कृष्णकर्मविभेदकाय नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं सुगंधनामकर्मरहिताय नमः स्वाहा ।१००। ॐ ह्रीं दुर्गन्धनामदूरीकारकाय नमः स्वाहा । १०१ । ॐ ह्रीं तिक्तरसरहिताय नमः स्वाहा । १०२ । ॐ ह्रीं कटुरसरहिताय नमः स्वाहा । १०३ । कषायरसकर्मखण्डकाय नमः स्वाहा ।१०४। ॐ ह्रीं अम्ल रसरहिताय नमः स्वाहा । १०५ । ॐ ह्रीं मधुररसविनाशयकाय नमःॐ स्वाहा । १०६ । ॐ ह्रीं मृदुत्वमुक्ताय नमः स्वाहा । १०७ । ॐ ह्री कर्कशस्पर्शहिंसकाय नमः स्वाहा । १०८ । ॐ ह्री गुरुस्पर्शशातकाय नमः स्वाहा । १०९ । ॐ ह्री लघुस्पर्शत्यक्ताय नमः स्वाहा । ११० । ॐ ह्रीं शीतस्पर्शछेदकाय नमः स्वाहा । १११ । ॐ ह्रीं उष्णस्पर्शभ्रंसकाय नमः स्वाहा । ११२ । ॐ ह्रीं स्निग्ध स्पर्शध्वंसकाय नमः स्वाहा । ११३ । ॐ ह्रीं रूक्षस्पर्शरोधकाय नमः स्वाहा । ११४ । ॐ ह्रीं सर्वस्पर्शरहिताय नमः स्वाहा । ११५ । ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्विविनाशकाय नमः स्वाहा । ११६ । ॐ ह्री तिर्यग्गत्यानुपूर्विप्रतारकाय नमः स्वाहा । ११७ । ॐ ह्रीं मनुष्यगत्यानुपूर्विविध्वंशकाय नमः स्वाहा । ११८ । ॐ ह्रीं देवगत्यानुपूर्विछेदकाय नमः स्वाहा । ११९ । ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वलघकाय नमः स्वाहा । १२० । ॐ ह्रीं उपघातघातकाय नमः स्वाहा । १२१ । ॐ ह्री परघातनामकर्मविकर्मकाय नमः स्वाहा । १२२ । ॐ ह्रीं आतपघातकाय नमः स्वाहा । १२३ । ॐ ह्रीं उद्योतकर्म–दाहकाय नमः स्वाहा । १२४ । ॐ ह्रीं श्वासनिःश्वासविमुक्ताय नमः स्वाहा । १२५ । ॐ ह्रीं प्रशस्तविहायोगतिप्रमुक्ताय नमः स्वाहा । १२६ । ॐ ह्रीं अप्रशस्तविहायोग–

तिनिर्णाशिकाय नमः स्वाहा। १२७। ॐ ह्रीं त्रसकर्मविनाशकाय नमः स्वाहा। १२८। ॐ ह्रीं स्थावरकर्मविशारकाय नमः स्वाहा। १२९। ॐ ह्रीं बादरनामप्रवासकाय नमः स्वाहा। १३०। ॐ ह्रीं सूक्ष्मकर्मशोषकाय नमः स्वाहा। १३१। ॐ ह्रीं पर्याप्तिकर्मरहिताय नमः स्वाहा। १३२। ॐ ह्रीं अपर्याप्तिकर्मनिषेधकाय नमः स्वाहा। १३३। ॐ ह्रीं प्रत्येकशरीरहिंसकाय नमः स्वाहा। १३४। ॐ ह्रीं साधारणशरीरनिर्णाशकाय नमः स्वाहा। १३५। ॐ ह्रींस्थिरनामकर्मछेदकाय नमः स्वाहा। १३६। ॐ ह्रीं अस्थिरनामकर्मनिर्ग्रन्थकाय नमः स्वाहा। १३७। ॐ ह्रीं शुभकर्मपाशकाय नमः स्वाहा। १३८। ॐ ह्रीं अशुभकर्मनिरसकाय नमः स्वाहा। १३९। ॐ ह्रीं शुभगकर्मनिवारकाय नमः स्वाहा। १४०। ॐ ह्रीं अशुभगकर्मनिरसकाय नमः स्वाहा। १४१। ॐ ह्रीं सुस्वरपरिवर्जकाय नमः स्वाहा। १४२। ॐ ह्रीं दुःस्वरनिवारकाय नमः स्वाहा। १४३। ॐ ह्रीं आदेयप्रकृतिविनाशकाय नमः स्वाहा। १४४। ॐ ह्रीं अनादेयकर्मसारकाय नमः स्वाहा। १४५। ॐ ह्रीं निर्माणनामकर्मकृतांतकाय नमः स्वाहा। १४६। ॐ ह्रीं यशकीर्तिछेदकाय नमः स्वाहा। १४७। ॐ ह्रीं अयशःकीर्तिछेदकाय नमः स्वाहा। १४८। ॐ ह्रीं पंचकल्याणचतुस्त्रिंशदतिशयाष्टप्रातिहार्यसमवसरणादिविभूतियुक्तार्हंत्यलक्ष्मीहेतुतीर्थंकरनामकर्मोज्झासकाय नमः स्वाहाः। १४९। ॐ ह्रीं उच्चैर्गोत्रकर्मपिजकाय नमः स्वाहा। १५०। ॐ ह्रीं नीचैर्गोत्रकर्मविनाशकाय नमः स्वाहा। १५१। ॐ ह्रीं दानान्तरायदाहकाय नमः स्वाहा। १५२। ॐ ह्रीं लाभान्तरायकर्मोन्मन्थकाय नमः स्वाहा। १५३। ॐ ह्रीं भोगान्तरायरहिताय नमः स्वाहा। १५४। ॐ ह्रीं उपभोगान्तरायविनाशकाय नमः स्वाहा। १५५। ॐ ह्रीं वीर्यान्तरायवारकाय नमः स्वाहा। १५६। ॐ ह्रीं कर्माष्टकमुक्ताय नमः स्वाहा। १५७। ॐ ह्रीं कर्मशताष्टचत्वारिंशन्निवारकाय नमः स्वाहा। १५८। ॐ ह्रीं संख्यातकर्मनिवारकाय नमः स्वाहा। १५९। ॐ ह्रीं असंख्यातकर्मविदारकाय नमः स्वाहा। १६०। ॐ ह्रीं अनन्तानन्तकर्मनिवारकाय नमः स्वाहा। १६१। ॐ ह्रीं संख्यातलोककर्मविध्वंसकाय नमः स्वाहा। १६२। ॐ ह्रीं आनन्दस्वभावाय नमः स्वाहा। १६३। ॐ ह्रीं आनन्दधर्माय नमः स्वाहा। १६४। ॐ ह्रीं आनन्दस्वरूपाय नमः स्वाहा। १६५। ॐ ह्रीं परमानन्दधर्माय नमः स्वाहा। १६६। ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय नमः स्वाहा। १६७। ॐ ह्रीं अनन्तगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा। १६८। ॐ ह्रीं अनन्तधर्माय नमः स्वाहा। १६९। ॐ ह्रीं शमस्वभावाय नमः स्वाहा। १७०। ॐ ह्रीं शमसन्तुष्टाय नमः स्वाहा

। १७१ । ॐ ह्रीं शमसंतोषाय नमः स्वाहा । १७२ । ॐ ह्रीं साम्यस्थानाय नमः स्वाहा । १७३ । ॐ ह्रीं साम्यगुणाय नमः स्वाहा । १७४ । ॐ ह्रीं साम्यकृतकृत्याय नमः स्वाहा । १७५ । ॐ ह्रीं अनन्यशरणाय नमः स्वाहा । १७६ । ॐ ह्रीं अनन्यगुणाय नमः स्वाहा । १७७ । ॐ ह्रीं अनन्यप्रमाणाय नमः स्वाहा । १७८ । ॐ ह्रीं प्रमाण-मुक्ताय नमः स्वाहा । १७९ । ॐ ह्रीं ब्रह्मस्वरूपाय नमः स्वाहा । १८० । ॐ ह्रीं ब्रह्मगुणाय नमः स्वाहा । १८१ । ॐ ह्रीं ब्रह्मचैतन्याय नमः स्वाहा । १८२ । ॐ ह्रीं शुद्धपरिणामकाय नमः स्वाहा । १८३ । ॐ ह्रीं शुद्धस्वभावाय नमः स्वाहा । १८४ । ॐ ह्रीं अनन्तदर्शी नमः स्वाहा । १८५ । ॐ ह्रीं अशुद्धिरहिताय नमः स्वाहा । १८६ । ॐ ह्रीं शुद्धाशुद्धिरहिताय नमः स्वाहा । १८७ । ॐ ह्रीं अनन्तदृक्स्वरूपाय नमः स्वाहा । १८८ । ॐ ह्रीं अनन्तदृगानन्दाय नमः स्वाहा । १८९ । ॐ ह्रीं अनन्तदृगुत्पादाय नमः स्वाहा । १९० । ॐ ह्रीं अनन्तध्रुवाय नमः स्वाहा । १९१ । ॐ ह्रीं अनन्तव्ययभावाय नमः स्वाहा । १९२ । ॐ ह्रीं अनन्तविलयाय नमः स्वाहा । १९३ । ॐ ह्रीं अनन्ता-काराय नमः स्वाहा । १९४ । ॐ ह्रीं अनन्तभावाय नमः स्वाहा । १९५ । ॐ ह्रीं चिन्मयस्वरूपाय नमः स्वाहा । १९६ । ॐ ह्रीं चिद्रूपधर्माय नमः स्वाहा । १९७ । ॐ ह्रीं चिद्रूपस्वरूपाय नमः स्वाहा । १९८ । ॐ ह्रीं स्वात्मोपलब्धिरसाय नमः स्वाहा । १९९ । ॐ ह्रीं स्वानुभूतिरताय नमः स्वाहा । २०० । ॐ ह्रीं परमामृताय नमः स्वाहा । २०१ । ॐ ह्रीं परमामृततुष्टाय नमः स्वाहा । २०२ । ॐ ह्रीं परमप्रीतये नमः स्वाहा । २०३ । ॐ ह्रीं परमवल्लभभावाय नमः स्वाहा । २०४ । ॐ ह्रीं व्यक्तस्वभावाय नमः स्वाहा । २०५ । ॐ ह्रीं एकत्वभावाय नमः स्वाहा । २०६ । ॐ ह्रीं एकत्वस्वरूपाय नमः स्वाहा । २०७ । ॐ ह्रीं द्वित्वविनाशकाय नमः स्वाहा । २०८ । ॐ ह्रीं शास्वत-प्रकाशाय नमः स्वाहा । २०९ । ॐ ह्रीं शास्वतद्योताय नमः स्वाहा । २१० । ॐ ह्रीं शास्वताष्टचन्द्राय नमः स्वाहा । २११ । ॐ ह्रीं शास्वतामृतमूर्तये नमः स्वाहा । २१२ । ॐ ह्रीं परमसूक्ष्माय नमः स्वाहा । २१३ । ॐ ह्रीं सूक्ष्मावकाशाय नमः स्वाहा । २१४ । ॐ ह्रीं सूक्ष्मगुणाय नमः स्वाहा । २१५ । ॐ ह्रीं परमसूक्ष्मावकाशाय नमः स्वाहा । २१६ । ॐ ह्रीं निरवधिसुखाय नमः स्वाहा । २१७ । ॐ ह्रीं निरवधिगुणाय नमः स्वाहा । २१८ । ॐ ह्रीं निरवधिस्वरूपाय नमः स्वाहा । २१९ । ॐ ह्रीं अतुलज्ञानाय नमः स्वाहा । २२० । ॐ ह्रीं अतुलसुखाय नमः स्वाहा । २२१ । ॐ ह्रीं अतुलभावाय नमः स्वाहा । २२२ । ॐ ह्रीं

मार्गदर्शक ... श्री ... सागर जी महाराज

अतुलगुणाय नमः स्वाहा । २२३ । ॐ ह्री अतुलप्रकाशाय नमः स्वाहा । २२४ । ॐ ह्रीं अचलाय नमः स्वाहा । २२५ । ॐ ह्रीं अचलगुणाय नमः स्वाहा । २२६ । ॐ ह्रीं अचल-स्वभावाय नमः स्वाहा । २२७ । ॐ ह्रीं स्वरूपाय नमः स्वाहा । २२८ । ॐ ह्रीं निरालंबाय नमः स्वाहा । २२९ । ॐ ह्रीं आलम्बरहिताय नमः स्वाहा । २३० । ॐ ह्रीं निर्लेपाय नमः स्वाहा । २३१ । ॐ ह्रीं निष्कलंकाय नमः स्वाहा । २३२ । ॐ ह्रीं नित्यालोकाय नमः स्वाहा । २३३ । ॐ ह्रीं आत्मरतये नमः स्वाहा । २३४ । ॐ ह्री स्वरूपगुप्ताय नमः स्वाहा । २३५ । ॐ ह्रीं शुद्धद्रव्याय नमः स्वाहा । २३६ । ॐ ह्रीं असंसाराय नमः स्वाहा । २३७ । ॐ ह्रीं सानन्दानन्दिताय नमः स्वाहा । २३८ । ॐ ह्रीं स्वानन्दभावाय नमः स्वाहा । २३९ । ॐ ह्रीं स्वानन्दस्वरूपाय नमः स्वाहा । २४० । ॐ ह्री स्वानन्दगुणाय नमः स्वाहा । २४१ । ॐ ह्रीं स्वानन्दसंतोषाय नमः स्वाहा । २४२ । ॐ ह्रीं शुद्धभावपर्यायाय नमः स्वाहा । २४३ । ॐ ह्रीं स्वातन्त्र्यधर्माय नमः स्वाहा । २४४ । ॐ ह्रीं आत्मस्वभावाय नमः स्वाहा । २४५ । ॐ ह्रीं परमचित्परिणताय नमः स्वाहा । २४६ । ॐ ह्रीं चिद्रूपगुणाय नमः स्वाहा । २४७ । ॐ ह्रीं परमस्नातकाय नमः स्वाहा । २४८ । ॐ ह्रीं स्नातकधर्माय नमः स्वाहा । २४९ । ॐ ह्रीं सर्वावलोकनाय नमः स्वाहा । २५० । ॐ ह्रीं लोकाग्रस्थिताय नमः स्वाहा । २५१ । ॐ ह्रीं लोकव्यापकाय नमः स्वाहा । २५२ । ॐ ह्रीं अनादिनिधनाय नमः स्वाहा । २५३ । ॐ ह्रीं अनादिस्वरूपाय नमः स्वाहा । २५४ । ॐ ह्रीं अनाद्यनुपमसिद्धाय नमः स्वाहा । २५५ । ॐ ह्रीं अनादिगुणपरिपूर्णाय नमः स्वाहा । २५६ ।

परिमलबहुलीढैश्चन्दनैः कुंकुमौघैः,

विविधसुरभिद्रव्यैश्चारु कर्पूरपुष्टैः ।

अलिकुलमिलितैस्तैर्घ्राणयुक्तं रमीभिः,

तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ २ ॥ चन्दनम्

शशिकरनिकराभैर्भासितैरक्षतौघैः,
कलितविमलशोभैः शुभ्रडिंडीरपिंडैः ।
हसितहरिसितैस्तैः पुंजितैरक्षतोद्घैः,
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ३ ॥ अक्षतान्

कमलबकुलमालामालतीभिर्मल्लिकाभिः,
परिमलबहुलाभिर्भ्रामरीसंभ्रमाभिः ।
सुरतरुवरपुष्पैस्तैरनेकैरमीभिः,
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ४ ॥ पुष्पाणि ॥

मृदुललितसुसिद्धैः सालिसंभूतपूतैः
हिमकरधवलैस्तैस्तन्दुलव्यंजनाढ्यैः ।
घृतमधुरसुपक्वैश्चारुपक्वान्नशोभैः,
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ५ ॥ नैवेद्यम् ।

कनकमणिसुरत्नैर्निर्मितैर्दीप्तदीपैं,—
रुडुगणधृतकांतित्रासितांहस्तमौघैः ।
विकसितवरबोधैः प्रातिहारार्तिकेन,
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ६ ॥ दीपम् ।

अगुरुतगरशुष्कैः शुद्धकर्पूरपूरैः,
मिलितसुरभिद्रव्यैश्चन्दनाद्यैरनेकैः ।
दहनदहितधूपैर्निर्जरानन्दभूतैः,
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ७ ॥ धूपम् ।

क्रमुकफलकपित्थैः, श्रीफलाग्रैश्च मोचैः।
पनसदलशरचोचैर्दाडिमैः कुंजपूरैः।
सरससुरभिगंधैर्भूतयेत्मानितैस्तैः,
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ८ ॥ फलम्।

वरजलफलपुष्पैश्चन्दनैरक्षतौघैः,
विरचितकृतभक्त्या शुक्लपुष्पांजलीश्च।
मनवचनतनूत्थाकर्मनिर्मूलनेच्छुः,
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ९ ॥ अर्घम् ॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआ उसा नमः, इतिमंत्रेणाष्टोत्तरं शतं जाप्यं देयम्।

अथ जयमाला

हेतुर्द्वैतबलादुदीर्णसुदृशः सर्वंसहाः सर्वश,
स्त्यक्त्वा संगमजस्त्रसुश्रुतपराः संयम्य साक्षं मनः।
ध्यात्वा स्वे शमिनः स्वयं स्वममलं निर्मूल्य कर्मारिवलम्,
ये शर्मप्रगुणैश्चकाशति शुभैस्ते भान्तु सिद्धा मयि ॥ १ ॥ पुष्पांजलिः।

सिद्धानुद्धूतकर्मप्रकृतिसमुदयान् साधितात्मस्वभावान्,
वन्दे सिद्धिप्रसिद्ध्यै तदनुपमगुणप्रग्रहाकृष्टितुष्टः।
सिद्धिः स्वात्मोपलब्धिः प्रगुणगुणगणो(णा)च्छादिदोषापहारात्,
योग्योपादानयुक्त्या दृषद इह यथा हेमभावोपलब्धिः ॥ १ ॥

नाभावः सिद्धिरिष्टा न निजगुणहतिस्तत्तपोभिर्न युक्तेः,
अस्त्यात्मानादिबद्धः स्वकृतजफलभुक् तत्क्षयान्मोक्षभागी ।
ज्ञाता दृष्टा स्वदेहप्रमितिरुपसमाहारविस्तारधर्मा,
ध्रौव्योत्पत्तिव्ययात्मा स्वगुणयुत इतोनान्यथा साध्यसिद्धिः ॥ २ ॥

सत्त्वन्तर्बाह्यहेतुप्रभवविमलसद्दर्शनज्ञानचर्या,–
सम्पद्धेतिप्रघातक्षतदुरिततया व्यंजिताचिन्त्यसारैः ।
मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज
कैवल्यज्ञानदृष्टिप्रवरसुखमहावीर्यसम्यक्त्वलब्धि,–
ज्योतिर्वातायनादिस्थिरपरमगुणैरद्भुतैर्भासमानः ॥३॥

जानन् पश्यन् समस्तं सममनुपरतं सम्प्रतृप्यन् वितन्वन्,
धुन्वन् ध्वांतं नितान्तं निचितमनुसमं प्रीणयन्नीशभावम् ।
कुर्वन् सर्वप्रजानामपरमभिभवन् ज्योतिरात्मानमात्मा,
आत्मन्येवात्मनासौ क्षणमुपजनयन् सत् (न्) स्वयम्भूः प्रवृत्तः ॥ ४ ॥

छिन्दन् शेषानशेषान्निगलबलकलींस्तैरनन्तस्वभावैः,
सूक्ष्मत्वाग्राऽवगहागुरुलघुकगुणैः क्षायिकैः शोभमानः ।
अन्यैश्चान्यव्यपोहप्रवणविषयसंप्राप्तिलब्धिप्रभावै,–
रुध्वं व्रज्यास्वभावात्समयमुपगतो क्षान्मि संतिष्ठतेऽग्र्ये ॥ ५ ॥
धाम्नि

अन्याकाराप्तिहेतुर्नच भवति परो येन तेनाल्पहीनः ।
प्रागात्मोपात्तदेहप्रतिकृतिरुचिराकार एव ह्यमूर्तः ।
क्षुत्तृष्णाश्वासकासज्वरमरणजराऽनिष्टयोगप्रमोह,–
व्यापत्त्याद्युग्रदुःखप्रभवभवहतः कोऽस्य सौख्यस्य माता ॥ ६ ॥

आत्मोपादानसिद्धं स्वयमतिशयवद्वीतबाधं विशालम्,
बृध्दिह्रासव्यपेतं विषयविरहितं निःप्रतिद्वन्द्वभावम् ।
अन्यद्रव्यानपेक्षं निरुपममितं शास्वतं सर्वकालम्,
उत्कृष्टानन्तसारं परमसुखमतस्तस्य सिध्दस्य जातम् ।। ७ ।।

नार्थः क्षुत्तृड्विनाशाद्विविधरसयुतैरन्नपानैरशुच्या,–
नास्पृस्टेर्गंधमाल्यैर्नहिमदुशयनैर्ग्लानिनिद्राद्यभावात्,
आतंकार्त्तेरभावे तदुपशमनसद्भेषजानर्थतावत्,
दीपानार्थक्यवद्वा व्यपगततिमिरे दृश्यमाने समस्ते ।।८।।

तादृक्सम्पत्समेता विविधनयतपःसंयमज्ञानदृष्टि,–
चर्यासिध्दाःसमन्तात्प्रविततयशसो विश्वदेवाधिदेवाः ।
भूता भव्या भवन्तः सकलजगति ये स्तूयामाना विशिष्टैः ।
तान्सर्वान्नौम्यनन्तान्निजिगमिषुररं तत्स्वरूपं त्रिसन्ध्यम् ।। ९ ।।

ॐ ह्रीं निर्द्धूतचिरतरसंसारकारणाज्ञानोद्भूतकेवलज्ञानातिशयसम्पन्नसिद्धाधिपतये
नमः स्वाहा, पूर्णार्धम् ।

छठी जयमाला का हिन्दी पद्यानुवाद

(रचयिता— श्री जुगलकिशोरजी मुखतार)

(१)

जिन वीरोंने कर्म प्रकृतियों, का सब मूलोच्छेद किया,
मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज
पूर्ण तपश्चर्याके बलपर, स्वात्मभावको साध लिया।
उन सिद्धोंको सिद्धि अर्थ मैं, वन्दूं अतिसन्तुष्ट हुआ,
उनके अनुपम गुणाकर्षसे, भक्तिभावको प्राप्त हुआ ।।

(२)

स्वात्मभावकी लब्धि सिद्धि है, होती वह उन दोषोंके,
उच्छेदन से आच्छादक जो, ज्ञानादिक गुणवृन्दों के ।
योग्य साधनोंकी सुयुक्तिसे, अग्निप्रयोगादिक द्वारा,
हेम शिलासे जगमें जैसे, हेम किया जाता न्यारा ।।

(३)

नहिं अभावमय सिद्धी इष्ट है, नहिं निजगुणविनाशवाली,
सत् का कभी नाश नहिं होता, रहता गुणी न गुण खाली ।
जिनकी ऐसी सिद्धि न उनका, तप विधान कुछ बनता है ,
आत्मनाश निजगुणविनाशका, कौन यत्न बुध करता है ।।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

(४)

अस्तु; अनादिबद्ध आत्मा है, स्वकृत-कर्म-फलका भोगी,
कर्मबन्ध-फलभोग-नाशसे, होता मुक्ति-रमा-योगी।
ज्ञाता, द्रष्टा, निजतनु-परिमित, संकोचेतर-धर्मा है,
स्वगुण-युक्त रहता है, हरदम ध्रौव्योत्पत्ति-व्ययात्मा है ॥

(५)

इस सिद्धान्त-मान्यताके बिन साध्य-सिद्धि नहिं घटती है—
स्वात्मरूप की लब्धि न होती, नहिं व्रत-चर्या बनती है।
बन्ध-मोक्ष-फलकी कथनी सब कथनमात्र रह जाती है,
अन्त न आता भव-भ्रमण का, सत्य-शान्ति नहिं मिलती है ॥

(६)

जब वह आत्मा मोहादिक के उपशमादिको पाकर के,
बाहरमें गुरु-उपदेशादिक श्रेष्ठ निमित्त मिलाकरके।
विमल-सुदर्शन-ज्ञान-चरणमय अपनी ज्योति जगाता है,
उस सुशक्ति के प्रबल-घात से घाति-चतुष्क नशाता है ॥

(७)

तब वह भासमान होता स्थिर-अद्भुत-परम-सुगुण-गणसे—
प्रकटित हुआ अचिन्त्य सार है जिनका दुरित-विनाशनसे।—
केवलज्ञान-सुदर्शनसे, अति-वीर्य-प्रवर सुख-समकित से,
शेषलब्धिसे, भामण्डल से, चामरादि की सम्पत् से ॥

(८)

सबको सदा जानता-लखता युगपत्, व्याप्त-सुतृप्त हुआ,
घन-अज्ञान-मोह-तम धुनता—सबका सब, निःखेद हुआ।
करता तृप्त सुवचनामृतसे—सभाजनों को औ करता——
ईश्वरता सब प्रजाजनोंकी, अन्य-ज्योति फिकी करता॥

(९)

आत्माको, आत्म-स्वरूपसे, आत्मामें प्रतिक्षण ध्याता——
हुआ सातिशय वह आत्मा यों, सत्य-स्वयम्भू-पद पाता।
वीतराग-अर्हत्-परमेष्ठी—आप्त-सार्व-जिन कहलाता,
परंज्योति-सर्वज्ञ-कृती-प्रभु——जीवन्मुक्त नाम पाता॥

(१०)

शेष निगड-सम अन्य प्रकृतियाँ फिर छेदता हुआ सारी,
आयु-वेदनी-नाम-गोत्र हैं मूल प्रकृतियाँ जो भारी।
उन अनन्तदृग्-बोध-वीर्यःसुख-सहित शेष क्षायिक गुणसे——
अव्याबाध-अगुरुलघुसे औ सूक्ष्मपना-अवगाहनसे—॥

(११)

शोभमान होता, तैसे ही अन्य गुणोंके समुदयसे—
प्रभवित हुए उत्तरोत्तर जो—कर्मप्रकृतिके संक्षयसे।
क्षणमें ऊर्ध्वगमन-स्वभावसे, शुद्ध-कर्ममलहीन हुआ,
जा बसता है अग्रधाममें, निरुपद्रव-स्वाधीन हुआ॥

(१२)

मूलोच्छेद हुआ कर्मोंका, बन्ध-उदय-सत्ता न रही,
अन्याकार-ग्रहण का कारण रहा न तब, इससे कुछ ही–
न्यून, चरम–तनु–प्रतिमाके सम रुचिराकृति ही रह जाता
और अमूर्तिक वह सिद्धात्मा, निर्विकार–पद को पाता ॥

(१३)

क्षुधा–तृषा–श्वासादिकामज्वर, जरा मरण के दुःखों का,
इष्ट वियोग–प्रमोह आपदा,–दिकके भारी कष्टोंका,
जन्महेतु जो, उस भवके क्षय, से उत्पन्न सिद्ध सुखका,
कर सकता परिमाण कौन है ? लेश नहीं जिसमें दुःखका ।

(१४)

सिद्ध हुआ निज उपादानसे, खुद अतिशयको प्राप्त हुआ,
बाधारहित, विशाल, इन्द्रियों–के विषयोंसे रिक्त हुआ ।
बढ़ता और न घटता जो है, प्रतिपक्षीसे रहित सदा,
उपमारहित अन्य द्रव्योंकी, नहीं अपेक्षा जिसे कदा ॥

(१५)

सुख उत्कृष्ट अमित शाश्वत वह सर्वकाल में व्याप्त हुआ ।
निरवधि सार परमसुख इससे, उस सुसिद्धको प्राप्त हुआ ।
जो परमेश्वरपरमात्मा औ, देहविमुक्त कहा जाता,
स्वात्मस्थित कृतकृत्य हुआ, निज पूर्ण स्वार्थको अपनाता ॥

(१६)

कर्म नाशसे उस सुसिद्धके, क्षुधा तृषाका लेश नहीं,
नाना रसयुत अन्नपानका, अतः प्रयोजन शेष नहीं ।
नहीं प्रयोजन गन्धमाल्यका, अशुचि योग जब नहीं कहीं,
नहीं काम मृदु शय्याका जब, निद्रादिका नाम नहीं ॥

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

(१७)

रोग बिना तत्शमनी उत्तम, औषधि जैसे व्यर्थ कही,
तम बिन दृश्यमान होते सब, दीपशिखा ज्यों व्यर्थ कही ।
त्यों सांसारिक विषय सौख्यका, सिद्ध हुए कुछ काम नहीं,
बाधित, विषम, पराश्रित, भंगुर, बंध हेतु जो अदुःख नहीं ॥

(१८)

यों अनन्त ज्ञानादि गुणोंकी, सम्पत्से जो युक्त सदा,
विविध सुनय तप संयमसे हो, सिद्ध न भजते विकृति कदा ।
सम्यग्दर्शनज्ञानचरणसे, तथा सिद्धपदको पाते,
पूर्ण यशस्वी हुए, विश्व–देवाधिदेव जो कहलाते ॥

(१९)

आवागमन विमुक्त हुए, जिनको करना कुछ शेष नहीं ।
आत्मलीन, सब दोष हीन, जिनके विभाव का लेश नहीं ।
राग द्वेष भयमुक्त निरंजन, अजर अमरपदके स्वामी,
मंगलभूत पूर्ण विकसित, सत् चिदानन्द जो निष्कामी ॥

(२०)

ऐसे हुए अनन्त सिद्ध औ, वर्तमान हैं संप्रति जो ।
आगे होंगे सकल जगतमें, विबुध जनों से संस्तुत जो ।
मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज
उन सबको नतमस्तक हो मैं, वन्दू तीनों काल सदा,
तत्स्वरूपकी शीघ्र प्राप्तिका, इच्छुक होकर, सहित मुदा ॥

(२१)

कारण, उनका जो स्वरूप है, वही रूप सब अपना है ।
उसही तरह सु विकसित होता, इसमें लेश न कहना है ।
उनके चिन्तन वन्दन से निज, रूप सामने आता है,
भूली निज निधिका दर्शन यों, प्राप्ति प्रेम उपजाता है ॥

(२२)

इससे सिद्ध भक्ति है सच्ची, जननी सब कल्याणों की,
श्रेयो मार्ग सुलभ करती; बन हेतु कुशल परिणामों की,
कही "सिद्धि सोपान" इसीसे, प्रौढ़ सुधीजन अपनाते,
पूज्यपादकी सिद्धभक्ति लख, युग मुमुक्ष अति हर्षाते ॥

अथ सप्तमपरिधिस्थितद्वादशोतरपंचशतगुणपूजा ।

स्थापना

ऊर्ध्वाधोरयुतं सविन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम् ।
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितम् ।।
अन्तःपत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम् ।
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः ।।

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ।। १ ।।
सकलामरेन्द्रसेव्यं, ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम् ।। २ ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्
" " " " अत्र तिष्ठ २ ठः ठः
" " " " अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्

अथाष्टकम्—

जयत्ति जगति यस्य प्राभवं सम्यगात्मो,—
दयविजितविपक्षं विश्कल्याणबीजम् ।
सुरसरिदमलांभोधारयाराधनीयम्,
गणधरबलयं तं सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ।। १ ।। जलम् ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा नमः स्वाहा. इति समुच्चयमंत्रः ।

अथ पृथक् २ मंत्राणि–

ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः स्वाहा। १। ॐ ह्रीं अर्हज्जाताय नमः स्वाहा। २। ॐ ह्रीं अर्हद्रूपाय नमः स्वाहा। ३। ॐ ह्रीं अर्हद्गुणाय नमः स्वाहा। ४। ॐ ह्रीं अर्हद्दर्शनाय नमः स्वाहा। ५। ॐ ह्रीं अर्हद्ज्ञानाय नमः स्वाहा। ६। ॐ ह्रीं अर्हत्सुखाय नमः स्वाहा। ७। ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्याय नमः स्वाहा। ८। ॐ ह्रीं अर्हद्दर्शनगुणाय नमः स्वाहा। ९। ॐ ह्रीं अर्हद्ज्ञानगुणाय नमः स्वाहा। १०। ॐ ह्रीं अर्हत्सुखगुणाय नमः स्वाहा। ११। ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्यगुणाय नमः स्वाहा। १२। ॐ ह्रीं अर्हत्सम्यक्त्वगुणाय नमः स्वाहा। १३। ॐ ह्रीं अर्हत्स्वगुणाय नमः स्वाहा। १४। ॐ ह्रीं अर्हद्द्वशांगाय नमः स्वाहा। १५। ॐ ह्रीं अर्हदाभिनिबोधाय नमः स्वाहा। १६। ॐ ह्रीं अर्हच्छ्रुतबोधगुणाय नमः स्वाहा। १७। ॐ ह्रीं अर्हदवधिगुणाय नमः स्वाहा। १८। ॐ ह्रीं अर्हन्मनः पर्ययगुणाय नमः स्वाहा। १९। ॐ ह्रीं अर्हत्केवलगुणाय नमः स्वाहा। २०। ॐ ह्रीं अर्हत्केवलस्वरूपाय नमः स्वाहा। २१। ॐ ह्रीं अर्हत्केवलदर्शनाय नमः स्वाहा। २२। ॐ ह्रीं अर्हत्केवलज्ञानाय नमः स्वाहा। २३। ॐ ह्रीं अर्हत्केवलवीर्याय नमः स्वाहा। २४। ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलाय नमः स्वाहा। २५। ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलदर्शनाय नमः स्वाहा। २६। ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलज्ञानाय नमः स्वाहा। २७। ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलवीर्याय नमः स्वाहा। २८। ॐ ह्रीं अर्हमंगलद्वादशांगाय नमः स्वाहा। २९। ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलाभिनिबोधकाय नमः स्वाहा। ३०। ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलश्रुताय नमः स्वाहा। ३१। ॐ ह्रीं अर्हन्मगलावधिज्ञानाय नमः स्वाहा। ३२। ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलमनःपर्ययज्ञानाय नमः स्वाहा। ३३। ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलज्ञानाय नमः स्वाहा। ३४। ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल–केवलस्वरूपाय नमः स्वाहा। ३५। ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलदर्शनाय नमः स्वाहा। ३६। ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलगुणाय नमः स्वाहा। ३७। ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलधर्माय नमः स्वाहा। ३८। ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलधर्मस्वरूपाय नमः स्वाहा। ३९। ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमाय नमः स्वाहा। ४०। ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमचिद्रूपाय नमः स्वाहा। ४१। ॐ ह्रीं अर्हल्लो–कोत्तमगुणाय नमः स्वाहा। ४२। ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलदर्शनाय नम स्वाहा। ४३। ॐ ह्रीं अर्हत्केवलोकोत्तमज्ञानाय नमः स्वाहा। ४४। ॐ ह्रीं अर्हत्केवललोकोत्तमवीर्याय नमः स्वाहा। ४५। ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमद्वादशांगाय नमः स्वाहा। ४६। ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमाभिनिबोधकाय नमः स्वाहा। ४७। ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तम.वधिबोधाय नमः स्वाहा। ४८। ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तममनःपर्ययज्ञानाय नमः स्वाहा। ४९। ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तम

केवलज्ञानाय नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलस्वरूपाय नमः स्वाह । ५१ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलपर्यायाय नमः स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलद्रव्याय नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलभावाय नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमध्रौव्यभावाय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमोत्पादभावाय ममः स्वाहा ।५६। ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमस्थिरभावाय नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं अर्हच्छरणाय नमः स्वाहा । ५८। ॐ ह्रीं अर्हद्रूपशरणाय नमः स्वाहा ।५९। ॐ ह्रीं अर्हद्गुणशरणाय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं अर्हद्ज्ञानशरणाय नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं अर्हद्दर्शनशरणाय नमः स्वाहा । ६२। ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्यशरणाय नमः स्वाहा । ६३। ॐ ह्रीं अर्हदभिनिबोधशरणाय नमः स्वाहा । ६४। ॐ ह्रीं अर्हद्द्वादशांगाय नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं अर्हदवधिशरणाय नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं अर्हन्मनःपर्ययशरणाय नमः स्वाहा । ६७। ॐ ह्रीं अर्हत्केवलशरणाय नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं अर्हत्केवलशरणारूपाय नमः स्वाहा । ६९। ॐ ह्रीं अर्हत्केवल–धर्मशरणाय नमः स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं अर्हत्केवलमंगलशरणाय नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलगुणशरणाय नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलज्ञानगुणशरणाय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलदृष्टिशरणाय नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलबोधशरणाय नमः स्वाहा ।७५। ॐ ह्रीं अर्हन्मगलमनःपर्ययशरणाय नमः स्वाहा ।७६। ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलशरणाय नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलगुणसरणाय नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमशरणाय नमः स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमगुणशरणाय नमः स्वाहा ।८०। ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमज्ञानशरणाय नमः स्वाहा ।८१। ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमदर्शनशरणाय नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमवीयशरणाय नमः स्वाहा ।८३। ॐ ह्रीं अहल्लोकोत्तमवीयगुणशरणाय नमः स्वाहा ।८४। ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमद्वादशांगशरणाय नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमाभिनिबोधशरणाय नमः स्वाहा ।८६। ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमावधिशरणाय नमः स्वाहा ।८७। ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तममनःपर्ययशरणाय नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलज्ञान–शरणाय नमः स्वाहा । ८९ । ॐ ह्रीं अर्हद्विभूतिप्रधानाय नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं अर्हद्विभूतिधर्मस्वरूपाय नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं अर्हदनन्तचतुष्टयाय नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं अर्हदनन्तचतुष्टयस्वरूपगुणाय नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं अर्हत्त्रिज्ञान-स्वयंभुवे नमः स्वाहा । ९४ । ॐ ह्रीं अर्हद्दशातिशयस्वयंभुवे नमः स्वाहा : ९५ । ॐ

अर्हद्दशातिशयघातिक्षयाय नमः स्वाहा ।९६। ॐ ह्रीं अर्हच्चतुर्दशदेवकृतातिशयाय नमः स्वाहा। ९७। ॐ ह्रीं अर्हद्ज्ञानानंतध्यानाय नमः स्वाहा। ९८। ॐ ह्रीं अर्हत्तपोऽनंतगुणाय नमः स्वाहा। ९९। ॐ ह्रीं अर्हद्ध्यानानंतध्येयाय नमः स्वाहा। १०० : ॐ ह्रीं अर्हदनन्तज्ञानगुणात्मने नमः स्वाहा। १०१। ॐ ह्रीं अर्हत्परमात्मने नमः स्वाहा। १०२। ॐ ह्रीं अर्हदनन्तगुणात्मने नमः स्वाहा। १०३। ॐ ह्रीं अर्हत्स्वरूपगुप्तये नमः स्वाहा ।१०४।

ॐ ह्रीं अर्हंसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। १०५। ॐ ह्रीं अर्हंसिद्धस्वरूपेभ्यो नमः स्वाहा। १०६। ॐ ह्रीं अर्हंसिद्धगुणेभ्यो नमः स्वाहा। १०७। ॐ ह्रीं अर्हंसिद्धज्ञानेभ्यो नमः स्वाहा। १०८। ॐ ह्रीं अर्हंसिद्धदर्शनेभ्यो नमः स्वाहा। १०९। ॐ ह्रीं अर्हंसिद्धसम्यक्त्वेभ्यो नमः स्वाहा ।११०। ॐ ह्रीं अर्हंसिद्धवीर्येभ्यो नमः स्वाहा ।१११। ॐ ह्रीं अर्हंसिद्धपादुकेभ्यो नमः स्वाहा ।११२। ॐ ह्रीं संख्यातसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा ।११३। ॐ ह्रीं असंख्यातसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। ११४। ॐ ह्रीं अनतसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। ११५। ॐ ह्रीं असंख्यातलोकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा ।११६। ॐ ह्रीं अनन्तानंतसिद्धेभ्यो। ११७। ॐ ह्रीं अनन्तलोकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा ।११८। ॐ ह्रीं अनन्तानन्तलोकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। ११९। ॐ ह्रीं तिर्यग्लोकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। १२०। ॐ ह्रीं सवमुखसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा ।१२१। ॐ ह्रीं स्थलसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। १२२। ॐ ह्रीं गगनसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। १२३। ॐ ह्रीं समुद्घातसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। १२४। ॐ ह्रीं असमुद्घातसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा ।१२५। ॐ ह्रीं साधारणसिद्धेभ्यो ननः स्वाहा ।१२६। ॐ ह्रीं असाधारणसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। १२७। ॐ ह्री निराभरणसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। १२८। ॐ ह्री तीर्थकरसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। १२९। ॐ ह्रीं तीर्थंतरसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।१३० ॐ ह्रीं उत्कृष्टावगाहसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। १३१। ॐ ह्रीं मध्यमावगाहसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। १३२। ॐ ह्रीं जघन्यावगाहसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। १३३। ॐ ह्रीं उपसर्गसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा ।१३४। ॐ ह्रीं षड्विधकालसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा ।१३५। ॐ ह्री निरुपसर्गसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा ।१३६। ॐ ह्री द्वीपसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। १३७। ॐ ह्रीं उदधिसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। १३८। ॐ ह्रीं स्वस्थित्यासनसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। १३९। ॐ ह्रीं पर्यंकासनसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा ।१४०। ॐ ह्रीं पुंवेदसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। १४१। ॐ ह्रीं क्षपकश्रेण्यारूढसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। १४२। ॐ ह्रीं एकसमयसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा ।१४३। ॐ ह्रीं द्विसमयसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा ।१४४। ॐ ह्रीं

त्रिसमयसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १४५ । ॐ ह्रीं त्रिकालसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १४६ । ॐ ह्रीं त्रिलोकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १४७ । ॐ ह्रीं सिद्धमंगलेभ्यो नमः स्वाहा । १४८ । ॐ ह्रीं सिद्धमंगलरूपेभ्यो नमः स्वाहा । १४९ । ॐ ह्रीं सिद्धमंगलज्ञानेभ्यो नमः स्वाहा । १५० । ॐ ह्रीं सिद्धमंगलदर्शनेभ्यो नमः स्वाहा । १५१ । ॐ ह्रीं सिद्धमंगलवीर्येभ्यो नमः स्वाहा । १५२ । ॐ ह्रीं सिद्धमंगलसम्यक्त्वेभ्यो नमः स्वाहा । १५३ । ॐ ह्रीं सिद्धमंगलसूक्ष्मत्वेभ्यो नमः स्वाहा । १५४ । ॐ ह्रीं सिद्धमंगलावगाहनेभ्यो नमः स्वाहा । १५५ । ॐ ह्रीं सिद्धमंगलागुरुलघुभ्यो नमः स्वाहा । १५६ । ॐ ह्रीं सिद्धमंगलाव्याबाधेभ्यो नमः स्वाहा । १५७ । ॐ ह्रीं सिद्धाष्टगुणेभ्यो नमः स्वाहा । १५८ । ॐ ह्रीं सिद्धाष्टस्वरूपेभ्यो नमः स्वाहा । १५९ । ॐ ह्रीं सिद्धाष्टप्रकाशकेभ्यो नमः स्वाहा । १६० । ॐ ह्रीं मंगलसिद्धधर्मेभ्यो नमः स्वाहा । १६१ । ॐ ह्रीं सिद्धलोकोतमेभ्यो नमः स्वाहा । १६२ । ॐ ह्रीं सिद्धलोकोतमचिद्रूपाय नमः स्वाहा । १६३ । ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमगुणाय नमः स्वाहा । १६४ । ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमज्ञानाय नमः स्वाहा । १६५ । ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमदर्शनाय नमः स्वाहा । १६६ । ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमवीर्याय नमः स्वाहा । १६७ । ॐ ह्रीं सिद्धशरणाय नमः स्वाहा । १६८ । ॐ ह्रीं सिद्धस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा । १६९ । ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनशरणाय नमः स्वाहा । १७० । ॐ ह्रीं सिद्धज्ञानशरणाय नमः स्वाहा । १७१ । ॐ ह्रीं सिद्धसम्यक्त्वशरणाय नमः स्वाहा । १७२ । ॐ ह्रीं सिद्धवीर्यशरणाय नमः स्वाहा । १७३ । ॐ ह्रीं सिद्धानन्तशरणाय नमः स्वाहा । १७४ । ॐ ह्रीं सिद्धानन्तानन्तगुणशरणाय नमः स्वाहा । १७५ । ॐ ह्रीं सिद्धत्रिकालशरणाय नमः स्वाहा । १७६ । ॐ ह्रीं सिद्धत्रिलोकशरणाय नमः स्वाहा । १७७ । ॐ ह्रीं सिद्धसंख्यातलोकशरणाय नमः स्वाहा । १७८ । ॐ ह्रीं सिद्धध्रौव्यगुणशरणाय नमः स्वाहा । १७९ । ॐ ह्रीं सिद्धोत्पादगुणशरणाय नमः स्वाहा । १८० । ॐ ह्रीं सिद्धसाम्यगुणशरणाय नमः स्वाहा । १८१ । ॐ ह्रीं सिद्धस्वच्छगुणशरणाय नमः स्वाहा । १८२ । ॐ ह्रीं सिद्धसमाधिगुणशरणाय नमः स्वाहा । १८३ । ॐ ह्रीं सिद्धव्यक्तगुणशरणाय नमः स्वाहा । १८४ । ॐ ह्रीं सिद्धाव्यक्तगुणशरणाय नमः स्वाहा । १८५ । ॐ ह्रीं सिद्धव्यक्ताव्यक्तगुणशरणाय नमः स्वाहा । १८६ । ॐ ह्रीं सिद्धगुणगणशरणाय नमः स्वाहा । १८७ । ॐ ह्रीं सिद्धपरमात्मरूपाय नमः स्वाहा । १८८ । ॐ ह्रीं सिद्धाखण्डरूपाय नमः स्वाहा । १८९ । ॐ ह्रीं सिद्धचिदानन्दरूपाय नमः स्वाहा । १९० । ॐ ह्रीं सिद्धसहजानन्दाय नमः स्वाहा । १९१ । ॐ ह्रींसिद्धाच्छेद्यस्वरूपाय नमः

स्वाहा । १९२ । ॐ ह्रीं सिद्धाभेद्यगुणाय नमः स्वाहा । १९३ । ॐ ह्रीं सिद्धानौपम्यधर्माय नमः स्वाहा । १९४ । ॐ ह्रीं सिद्धामृततत्त्वाय नमः स्वाहा । १९५ । ॐ ह्रीं सिद्धश्रुतप्राप्ताय नमः स्वाहा । १९६ । ॐ ह्रीं सिद्धकेवलप्राप्ताय नमः स्वाहा । १९७ । ॐ ह्रीं सिद्धसाकारनिराकाराय नमः स्वाहा । १९८ । ॐ ह्रीं सिद्धनिरालंबाय नमः स्वाहा । १९९ । ॐ ह्रीं सिद्धनिष्कलंकाय नमः स्वाहा । २०० । ॐ ह्रीं सिद्धात्मसंपन्नाय नमः स्वाहा । २०१ । ॐ ह्रीं सिद्धतेजसे नमः स्वाहा । २०२ । ॐ ह्रीं सिद्धागर्भवासाय नमः स्वाहा । २०३ । ॐ ह्रीं सिद्धलक्ष्मीसंतर्पकाय नमः स्वाहा । २०४ । ॐ ह्रीं सिद्धान्तरंगाय नमः स्वाहा । २०५ । ॐ ह्रीं सिद्धस्वारसिकाय नमः स्वाहा । २०६ । ॐ ह्रीं सिद्धशिखरमंडनाय नमः स्वाहा । २०७ । ॐ ह्रीं त्रिकालसिद्धानन्तानन्ताय नमः स्वाहा । २०८ ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

ॐ ह्रीं सूरिभ्यो नमः स्वाहा । २०९ । ॐ ह्रीं सूरिगुणेभ्यो नमः स्वाहा । २१० । ॐ ह्रीं सूरिस्वरूपगुणेभ्यो नमः स्वाहा । २११ । ॐ ह्रीं सूरिसम्यक्त्वगुणेभ्यो नमः स्वाहा । २१२ । ॐ ह्रीं सूरिज्ञानगुणेभ्यो नमः स्वाहा । २१३ । ॐ ह्रीं सूरिदर्शनगुणेभ्यो नमः स्वाहा । २१४ । ॐ ह्रीं सूरिवीर्यगुणेभ्यो नमः स्वाहा । २१५ । ॐ ह्रीं सूरिषट्त्रिंशद्गुणेभ्यो नमः स्वाहा । २१६ । ॐ ह्रीं सूरिपंचाचाररतेभ्यो नमः स्वाहा । २१७ । ॐ ह्रीं सूरिद्रव्यगुणेभ्यो नमः स्वाहा । २१८ । ॐ ह्रीं सूरिपर्यायगुणेभ्यो नमः स्वाहा । २१९ । ॐ ह्रीं सूरिमंगलेभ्यो नमः स्वाहा । २२० । ॐ ह्रीं सूरिज्ञानमंगलेभ्यो नमः स्वाहा । २२१ । ॐ ह्रीं सूरिदर्शनमंगलेभ्यो नमः स्वाहा । २२२ । ॐ ह्रीं सूरिमंगलवीर्येभ्यो नमः स्वाहा । २२३ । ॐ ह्रीं सूरिमंगलधर्माय नमः स्वाहा । २२४ । ॐ ह्रीं सूरिलोकोत्तमेभ्यो नमः स्वाहा । २२५ । ॐ ह्रीं सूरिलोकोत्तमज्ञानाय नमः स्वाहा । २२६ । ॐ ह्रीं सूरिलोकोत्तमदर्शनाय नमः स्वाहा । २२७ । ॐ ह्रीं सूरिलोकोत्तमवीर्याय नमः स्वाहा । २२८ । ॐ ह्रीं सूरिकेवलधर्माय नमः स्वाहा । २२९ । ॐ ह्रीं सूरितपेभ्यो नमः स्वाहा । २३० । ॐ ह्रीं सूरिपरमतपेभ्यो नमः स्वाहा । २३१ । ॐ ह्रीं सूरितपघोरगुणेभ्यो नमः स्वाहा । २३२ । ॐ ह्रीं सूरिघोरगुणपराक्रमेभ्यो नमः स्वाहा । २३३ । ॐ ह्रीं सूरिसमृद्धिभ्यो नमः स्वाहा । २३४ । ॐ ह्रीं सूरियोगिभ्यो नमः स्वाहा । २३५ । ॐ ह्रीं सूरिध्यानिभ्यो नमः स्वाहा । २३६ । ॐ ह्रीं सूरिधातृभ्यो नमः स्वाहा । २३७ । ॐ ह्रीं सूरिपात्रेभ्यो नमः स्वाहा । २३८ । ॐ ह्रीं सूरिशरणाय नम स्वाहा । २३९ । ॐ ह्रीं सूरिगुणशरणाय नमः स्वाहा । २४० । ॐ ह्रीं सूरिधर्मस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा । २४१ । ॐ ह्रीं

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सूरिसुखस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा । २४२ । ॐ ह्रीं सूरिज्ञानशरणाय नमः स्वाहा । २४३ । ॐ ह्रीं सूरिदर्शनशरणाय नमः स्वाहा । २४४ । ॐ ह्रीं सूरिवीर्यशरणाय नमः स्वाहा । २४५ । ॐ ह्रीं सूरिमंगलशरणाय नमः स्वाहा । २४६ । ॐ ह्रीं सूरितपशरणाय नमः स्वाहा । २४७ । ॐ ह्रीं सूरिचारित्रशरणाय नमः स्वाहा । २४८ । ॐ ह्रीं सूरिध्यानशरणाय नमः स्वाहा । २४९ । ॐ ह्रीं सूरिऋद्धिशरणाय नमः स्वाहा । २५० । ॐ ह्रीं सूरित्रिलोकशरणाय नमः स्वाहा । २५१ । ॐ ह्रीं सूरित्रिकालशरणाय नमः स्वाहा । २५२ । ॐ ह्रीं सूरित्रिजगन्मंलशरणाय नमः स्वाहा । २५३ । ॐ ह्रीं सूरित्रिलोकमंगलशरणाय नमः स्वाहा । २५४ । ॐ ह्रीं सूरित्रिलोकमंडनशरणाय नमः स्वाहा । २५५ । ॐ ह्रीं सूरिऋद्धि-मंगलशरणाय नमः स्वाहा । २५६ । ॐ ह्रीं सूरिमंत्रस्वरूपाय नमः स्वाहा । २५७ । ॐ ह्रीं सूरिधर्ममंत्रस्वरूपाय नमः स्वाहा । २५८ । ॐ ह्रीं सूरिचैतन्यगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा । २५९ । ॐ ह्रीं सूरिचिदानन्दाय नमः स्वाहा । २६० । ॐ ह्रीं सूरिसहजानन्दाय नमः स्वाहा । २६१ । ॐ ह्रीं सूरिज्ञानानन्दाय नमः स्वाहा । २६२ । ॐ ह्रीं सूरिदृगानन्दाय नमः स्वाहा । २६३ । ॐ ह्रीं सूरितपआनन्दाय नमः स्वाहा । २६४ । ॐ ह्रीं सूरिदृक्स्वरू-पानन्दाय नमः स्वाहा । २६५ । ॐ ह्रीं सूरितपगुणानन्दाय नमः स्वाहा । २६६ । ॐ ह्रीं सूरितपगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा । २६७ । ॐ ह्रीं सूरिहंसानन्दाय नमः स्वाहा । २६८ । ॐ ह्रीं सूरिहंसगुणानन्दाय नमः स्वाहा । २६९ । ॐ ह्रीं सूरिमंत्रगुणानन्दाय नमः स्वाहा ।२७०। ॐ ह्रीं सूरिसद्ध्यानानन्दाय नमः स्वाहा । २७१ । ॐ ह्रीं सूरिअमृतचन्द्राय नमः स्वाहा । २७२ । ॐ ह्रीं सूरिअमृतचद्रस्वरूपाय नमः स्वाहा । २७३ । ॐ ह्रीं सूरिअमृतगुणाय नमः स्वाहा । २७४ । ॐ ह्रीं सूरिअमृतघनदाय नमः स्वाहा । २७५ । ॐ ह्रीं सूरिअमृतघनस्वरूपाय नमः स्वाहा । २७६ । ॐ ह्रीं सूरिद्रव्याय नमः स्वाहा । २७७ । ॐ ह्रीं सूरिगुणद्रव्याय नमः स्वाहा । २७८ । ॐ ह्रीं सूरिद्रव्यस्वरूपाय नमः स्वाहा । २७९ । ॐ ह्रीं सूरिगुणपर्यायाय नमः स्वाहा । २८० । ॐ ह्रीं सूरिपर्यायस्वरूपाय नमः स्वाहा । २८१ । ॐ ह्रीं सूरिगुणप-र्यायद्रव्याय नमः स्वाहा । २८२ । ॐ ह्रीं सूरिगुणोत्पादाय नमः स्वाहा । २८३ । ॐ ह्रीं सूरिध्रौव्यगुणोत्पादाय नमः स्वाहा । २८४ । ॐ ह्रीं सूरिव्ययगुणोत्पादाय नमः स्वाहा । । २८५ । ॐ ह्रीं सूरिजीवतत्त्वाय नमः स्वाहा । २८६ । ॐ ह्रीं सूरिजीवतत्त्वगुणाय नमः स्वाहा । २८७ । ॐ ह्रीं सूरिनिजस्वभावाय नमः स्वाहा । २८८ । ॐ ह्रीं सूरिआश्रवविलयाय नमः स्वाहा । २८९ । ॐ ह्रीं सूरिबंधविनाशाय नमः स्वाहा । २९० । ॐ ह्रीं सूरिसंवरतत्-

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

वाय नमः स्वाहा । २९१ । ॐ ह्रीं सूरिसंवरतत्त्वस्वरूपाय नमः स्वाहा । २९२ । ॐ ह्रीं सूरिसंवरगुणाय नमः स्वाहा । २९३ । ॐ ह्रीं सूरिसंवरधर्माय नमः स्वाहा । २९४ । ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरातत्त्वाय नमः स्वाहा । २९५ । ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरागुणाय नमः स्वाहा । २९६ । ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरागुणरूपाय नमः स्वाहा । २९७ । ॐ ह्रीं सूरिपरमनिर्जराधर्माय नमः स्वाहा । २९८ । ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरानुबंधाय नमः स्वाहा । २९९ । ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरास्वरू-पाय नमः स्वाहा । ३०० । ॐ ह्रीं सूरिनिर्जराप्रतापाय नमः स्वाहा । ३०१ । ॐ ह्रीं सूरिमोक्षाय नमः स्वाहा । ३०२ । ॐ ह्रीं सूरिमोक्षस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३०३ । ॐ ह्रीं सूरिबंधमोक्षाय नमः स्वाहा । ३०४ । ॐ ह्रीं सूरिमोक्षगुणाय नमः स्वाहा । ३०५ । ॐ ह्रीं सूरिमोक्षानुबंधाय नमः स्वाहा । ३०६ । ॐ ह्रीं सूरिमोक्षप्रकाशकाय नमः स्वाहा । ३०७ । ॐ ह्रीं सूरिमोक्षविमंडनाय नमः स्वाहा । ३९८ । ॐ ह्रीं सूरिपरमात्मस्वरूपरताय नमः स्वाहा । ३०९ । ॐ ह्रीं सूरिमोक्षप्राप्ताय नमः स्वाहा । ३१० ।

ॐ ह्रीं पाठकेभ्यो नमः स्वाहा । ३११ । ॐह्रीं पाठकेभ्यो नमः स्वाहा । ३१२ । ॐह्रीं पाठकगुणस्वरूपेभ्यो नमः स्वाहा । ३१३ । ॐ ह्रीं पाठकपर्यायाय नमः स्वाहा । ३१४ । ॐ ह्रीं पाठकगुणपर्यायाय नमः स्वाहा । ३१५ । ॐ ह्रीं पाठकगुणपर्यायस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३१६ । ॐ ह्रीं पाठकद्रव्याय नमः स्वाहा । ३१७ । ॐ ह्रीं पाठकगुणद्रव्याय नमः स्वाहा । ३१८ । ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३१९ । ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यपर्यायाय नमः स्वाहा । ३२० । ॐ ह्रीं पाठकपर्यायस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३२१ । ॐ ह्रीं पाठकमंगलाय नमः स्वाहा । ३२२ । ॐ ह्रीं पाठकमंगलगुणाय नमः स्वाहा । ३२३ । ॐ ह्रीं पाठकमंगलगु-णस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३२४ । ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यमंगलाय नमः स्वाहा । ३२५ । ॐ ह्रीं पाठकमंगलद्रव्यगुणाय नमः स्वाहा । ३२६ । ॐ ह्रीं पाठकमंगलद्रव्यगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३२७ । ॐ ह्रीं पाठकमंगलपर्यायाय नमः स्वाहा । ३२८ । ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यमंगल-पर्यायाय नमः स्वाहा । ३२९ । ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यगुणपर्यायाय नमः स्वाहा । ३३० । ॐ ह्रीं पाठकस्वरूपमंगलरूपाय नमः स्वाहा । ३३१ । ॐ ह्रीं पाठकलोकोत्तमाय नमः स्वाहा । ३३२ । ॐ ह्रीं पाठकगुणलोकोत्तमाय नमः स्वाहा । ३३३ । ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यलोकोत्तमाय नमः स्वाहा । ३३४ । ॐ ह्रीं पाठकज्ञानाय नमः स्वाहा । ३३५ । ॐ ह्रीं पाठकज्ञानलोकोत्तमाय नमः स्वाहा । ३३६ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनाय नमः स्वाहा । ३३७ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनलो-कोत्तमाय नमः स्वाहा । ३३८ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३३९ । ॐ ह्रीं

पाठकसम्यक्त्वस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३४० । ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३४१ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्याय नमः स्वाहा । ३४२ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यगुणाय नमः स्वाहा । ३४३ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यपर्याय नमः स्वाहा । ३४४ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यद्रव्याय नमः स्वाहा । ३४५ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यगुणपर्यायाय नमः स्वाहा । ३४६ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनपर्यायाय नमः स्वाहा । ३४७ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनस्वरूपपर्यायाय नमः स्वाहा । ३४८ । ॐ ह्रीं पाठकज्ञानद्रव्याय नमः स्वाहा । ३४९ । ॐ ह्रीं पाठकशरणाय नमः स्वाहा । ३५० । ॐ ह्रीं पाठकगुणशरणाय नमः स्वाहा । ३५१ । ॐ ह्रीं पाठकज्ञानगुणशरणाय नमः स्वाहा । ३५२ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनशरणाय नमः स्वाहा । ३५३ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा । ३५४ । ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वशरणाय नमः स्वाहा । ३५५ । ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा । ३५६ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यशरणाय नमः स्वाहा । ३५७ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा । ३५८ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यपरमात्मशरणाय नमः स्वाहा । ३५९ । ॐ ह्रीं पाठकद्वादशांगाय नमः स्वाहा । ३६० । ॐ ह्रीं पाठकदशपूर्वाय नमः स्वाहा । ३६१ । ॐ ह्रीं पाठकचतुर्दशपूर्वाय नमः स्वाहा । ३६२ । ॐ ह्रीं पाठकाचारांगाय नमः स्वाहा । ३६३ । ॐ ह्रीं पाठकज्ञानाचारांगाय नमः स्वाहा । ३६४ । ॐ ह्रीं पाठकतपाचाराय नमः स्वाहा । ३६५ । ॐ ह्रीं पाठकरत्नत्रयाय नमः स्वाहा । ३६६ । ॐ ह्रीं पाठकरत्नत्रयस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३६७ । ॐ ह्रीं पाठकध्रुवसंसाराय नमः स्वाहा । ३६८ । ॐ ह्रीं पाठकएकत्वरूपाय नमः स्वाहा । । ३६९ । ॐ ह्रीं पाठकएकत्वगुणाय नमः स्वाहा । ३७० । ॐ ह्रीं पाठकएकत्वपरात्मने नमः स्वाहा । ३७१ । ॐ ह्रीं पाठकधर्माय नमः स्वाहा । ३७२ । ॐ ह्रीं पाठकएकत्वचैतन्याय नमः स्वाहा । ३७३ । ॐ ह्रीं पाठकएकत्वचैतन्यस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३७४ । ॐ ह्रीं पाठकएकत्वद्रव्याय नमः स्वाहा । ३७५ । ॐ ह्रीं पाठकचिदानन्दाय नमः स्वाहा । ३ ६ । ॐ ह्रीं पाठकसिद्धिसाधकाय नमः स्वाहा । ३७७ । ॐ ह्रीं पाठकसमृद्धिसंपूर्णाय नमः स्वाहा । ३७८ । ॐ ह्रीं पाठकनिर्ग्रंथाय नमः स्वाहा । ३७९ । ॐ ह्रीं पाठकअर्थनिधानाय नमः स्वाहा । ३८० । ॐ ह्रीं पाठकसंसारनिधनाय नमः स्वाहा । ३८१ । ॐ ह्रीं पाठककल्याणाय नमः स्वाहा । ३८२ । ॐ ह्रीं पाठककल्याणगुणाय नमः स्वाहा ।३८३ । ॐ ह्रीं पाठककल्याणस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३८४ । ॐ ह्रीं पाठककल्याणद्रव्याय नमः स्वाहा । ३८५ । ॐ ह्रीं पाठकतत्त्वगुणाय नमः स्वाहा । ३८६ । ॐ ह्रीं पाठकतत्त्वचिद्रूपाय नमः स्वाहा । ३८७ ।

ॐ ह्रीं पाठकर्द्धिपूर्णाय नमः स्वाहा । ३८८ । ॐ ह्रीं पाठकगुणचैतन्याय नमः स्वाहा । ३८९ । ॐ ह्रीं पाठकज्योतिःप्रकाशाय नमः स्वाहा । ३९० । ॐ ह्रीं पाठकज्ञानचैतन्याय नमः स्वाहा । ३९१ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनचैतन्याय नमः स्वाहा । ३९२ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यचैतन्याय नमः स्वाहा । ३९३ । ॐ ह्रीं पाठकजीवविदे नमः स्वाहा । ३९४ । ॐ ह्रीं पाठकसकलशरणाय नमः स्वाहा । ३९५ । ॐ ह्रीं पाठकत्रिलोकशरणाय नमः स्वाहा । ३९६ । ॐ ह्रीं पाठकत्रिकालशरणाय नमः स्वाहा । ३९७ । ॐ ह्रीं पाठकमंगलशरणाय नमः स्वाहा । ३९८ । ॐ ह्रीं पाठकलोकशरणाय नमः स्वाहा । ३९९ । ॐ ह्रीं पाठकाश्रवविनाशाय नमः स्वाहा । ४०० । ॐ ह्रीं पाठकाश्रवोच्छेदकाय नमः स्वाहा । ४०१ । ॐ ह्रीं पाठकबंधकृतांतकाय नमः स्वाहा । ४०२ । ॐ ह्रीं पाठकबंधमुक्ताय नमः स्वाहा । ४०३ । ॐ ह्रीं पाठकसंवराय नमः स्वाहा । ४०४ । ॐ ह्रीं पाठकसंवररूपाय नमः स्वाहा । ४०५ । ॐ ह्रीं पाठकसंवरकारणाय नमः स्वाहा ।४०६ । ॐ ह्रीं पाठककन्दर्पच्छेदकाय नमः स्वाहा । ४०७ । ॐ ह्रीं पाठककर्मविस्फोटकाय नमः स्वाहा । ४०८ । ॐ ह्रीं पाठकनिर्जरास्वरूपाय नमः स्वाहा । ४०९ । ॐ ह्रीं पाठकमोक्षाय नमः स्वाहा । ४१० । ॐ ह्रीं पाठकमोक्षस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४११ । ॐ ह्रीं पाठकात्मने नमः स्वाहा । ४१२ ।

ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो नमः स्वाहा । ४१३ । ॐ ह्रीं साधुगुणेभ्यो नमः स्वाहा । ४१४ । ॐ ह्रीं साधुगुणस्वरूपेभ्यो नमः स्वाहा । ४१५ । ॐ ह्रीं साधुद्रव्याय नमः स्वाहा । ४१६ । ॐ ह्रीं साधुद्रव्यगुणाय नमः स्वाहा । ४१७ । ॐ ह्रीं साधुमोक्षाय नमः स्वाहा । ४१८ । ॐ ह्रीं साधुदर्शनाय नमः स्वाहा । ४१९ । ॐ ह्रीं साधुज्ञानाय नमः स्वाहा । ४२० । ॐ ह्रीं साधुवीर्याय नमः स्वाहा । ४२१ । ॐ ह्रीं साधुज्ञानद्रव्याय नमः स्वाहा । ४२२ । ॐ ह्रीं साधुद्रव्यस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४२३ । ॐ ह्रीं साधुद्रव्यपर्यायाय नमः स्वाहा । ४२४ । ॐ ह्रीं साधुदर्शनपर्यायाय नमः स्वाहा । ४२५ । ॐ ह्रीं साधुमंगलाय नमः स्वाहा । ४२६ । ॐ ह्रीं साधुमंगलस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४२७ । ॐ ह्रीं साधुमंगलशरणाय नमः स्वाहा । ४२८ । ॐ ह्रीं साधुदर्शनमंगलाय नमः स्वाहा । ४२९ । ॐ ह्रीं साधुमंगलशरणाय नमः स्वाहा । ४३० । ॐ ह्रीं साधुवीर्यमंगलाय नमः स्वाहा । ४३१ । ॐ ह्रीं साधुवीर्यद्रव्याय नमः स्वाहा । ४३२ । ॐ ह्रीं साधुवीर्यद्रव्य-स्वरूपाय नमः स्वाहा । ४३३ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमाय नमः स्वाहा । ४३४ । ॐ ह्रीं साधु-

लोकोत्तमगुणाय नमः स्वाहा । ४३५ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४३६ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमद्रव्याय नमः स्वाहा । ४३७ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमज्ञानाय नमः स्वाहा । ४३८ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमज्ञानस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४३९ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमदर्शनाय नमः स्वाहा । ४४० । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमधर्माय नमः स्वाहा । ४४१ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमधर्मस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४४२ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तम-वीर्याय नमः स्वाहा । ४४३ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमवीर्यस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४४४ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमातिशयसम्पन्नाय नमः स्वाहा । ४४५ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमब्रह्म-ज्ञानाय नमः स्वाहा । ४४६ । ॐ ह्रीं सधुलोकोत्तमब्रह्मज्ञानस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४४७ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमजिनाय नमः स्वाहा । ४४८ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमजिनगुणसम्पन्नाय नमः स्वाहा । ४४९ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमपुरुषाय नमः स्वाहा । ४५० । ॐ ह्रीं साधुशर-णाय नमः स्वाहा । ४५१ । ॐ ह्रीं साधुअर्हत्स्वरूपाय नमः स्वाहा । ४५२ । ॐ ह्रीं साधुगुणशरणाय नमः स्वाहा । ४५३ । ॐ ह्रीं साधुदर्शनशरणाय नमः स्वाहा । ४५४ । ॐ ह्रीं साधुदर्शनस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा । ४५५ । ॐ ह्रीं साधुज्ञानशरणाय नमः स्वाहा । ४५६ । ॐ ह्रीं साधुज्ञानस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा । ४५७ । ॐ ह्रीं साधुआत्-मशरणाय नमः स्वाहा । ४५८ । ॐ ह्रीं साधुपरमात्मशरणाय नमः स्वाहा । ४५९ । ॐ ह्रीं साधुजिनात्मशरणाय नमः स्वाहा । ४६० । ॐ ह्रीं साधुवीर्यशरणाय नमः स्वाहा । ४६१ । ॐ ह्रीं साधुवीर्यात्मशरणाय नमः स्वाहा । ४६२ । ॐ ह्रीं साधुलक्ष्म्यलंकृताय नमः स्वाहा । ४६३ । ॐ ह्रीं साधुलक्ष्मीपरिणताय नमः स्वाहा । ४६४ । ॐ ह्रीं साधुलक्ष्मीरू-पाय नमः स्वाहा । ४६५ । ॐ ह्रीं साधुध्रुवाय नमः स्वाहा । ४६६ । ॐ ह्रीं साधुगुणध्रु-वाय नमः स्वाहा । ४६७ । ॐ ह्रीं साधुद्रव्यध्रुवाय नमः स्वाहा । ४६८ । ॐ ह्रीं साधु-द्रव्यगुणोत्पादाय नमः स्वाहा । ४६९ । ॐ ह्रीं साधुद्रव्योत्पादाय नमः स्वाहा । ४७० । ॐ ह्रीं साधुजीवाय नमः स्वाहा । ४७१ । ॐ ह्रीं साधुजीवगुणाय नमः स्वाहा । ४७२ । ॐ ह्रीं साधुचैतन्याय नमः स्वाहा । ४७३ । ॐ ह्रीं साधुचैतन्यस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४७४ । ॐ ह्रीं साधुचैतन्यगुणाय नमः स्वाहा । ४७५ । ॐ ह्रीं साधुपरमात्मप्रकाशाय नमः स्वाहा । ४७६ । ॐ ह्रीं साधुज्योतीरूपाय नमः स्वाहा । ४७७ । ॐ ह्रीं साधुज्योतिःप्रदीपाय नमः स्वाहा । ४७८ । ॐ ह्रीं साधुज्ञानदीपाय नमः स्वाहा । ४७९ । ॐ ह्रीं साधुदर्शनप्रदीपाय नमः स्वाहा । ४८० । ॐ ह्रीं साधुसर्वशरणाय नमः स्वाहा । ४८१ । ॐ ह्रीं साधुलोकश-

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

रणाय नमः स्वाहा । ४८२ । ॐ ह्रीं साधुत्रिलोकशरणाय नमः स्वाहा । ४८३ । ॐ ह्रीं साधुसंसारच्छेदकाय नमः स्वाहा । ४८४ । ॐ ह्रीं साधुत्रिकालशरणाय नमः स्वाहा । ४८५ । ॐ ह्रीं साधुएकत्वगुणाय नमः स्वाहा । ४८६ । ॐ ह्रीं साधुएकत्वद्रव्याय नमः स्वाहा । । ४८७ । ॐ ह्रीं साधुएकत्वस्वभावाय नमः स्वाहा । ४८८ । ॐ ह्रीं साधुस्याद्वादाय नमः स्वाहा । ४८९ । ॐ ह्रीं साधुशब्दब्रह्मणे नमः स्वाहा । ४९० । ॐ ह्रीं साधुपरब्रह्मणे नमः स्वाहा । ४९१ । ॐ ह्रीं साधुपरमागमाय नमः स्वाहा । ४९२ । ॐ ह्रीं साधुजिनागमाय नमः स्वाहा । ४९३ । ॐ ह्रीं साधुअनेकार्थाय नमः स्वाहा । ४९४ । ॐ ह्रीं साधुपरमशु-चित्वगुणाय नमः स्वाहा । ४९५ । ॐ ह्रीं साधुपरमपवित्राय नमः स्वाहा । ४९६ । ॐ ह्रीं साधु बंधविविक्ताय नमः स्वाहा । ४९७ । ॐ ह्रीं साधुबंधप्रतिबंधकाय नमः स्वाहा । । ४९८ । ॐ ह्रीं साधुसंवरकाय नमः स्वाहा । ४९९ । ॐ ह्रीं साधुनिर्जरद्रव्याय नमः स्वाहा ५०० । ॐ ह्रीं साधुनिर्जरगुणाय नमः स्वाहा । ५०१ । ॐ ह्रीं साधुबोधगुणधर्माय नमः स्वाहा । ५०२ । ॐ ह्रीं साधुमुक्तभावाय नमः स्वाहा । ५०३ । ॐ ह्रीं साधुपरमगत-भावाय नमः स्वाहा । ५०४ । ॐ ह्री साधुविभावरहिताय नमः स्वाहा । ५०५ । ॐ ह्री साधुस्वभावसहिताय नमः स्वाहा । ५०६ । ॐ ह्री साधुसिद्धस्वरूपाय नमः स्वाहा । ५०७ । ॐ ह्री साधुसूरिप्रकाशाय नमः स्वाहा । ५०८ । ॐ ह्री साधुपाध्यायपरमेष्ठिने नमः स्वाहा । ५०९ । ॐ ह्री साधुआत्मरतये नमः स्वाहा । ५१० । ॐ ह्री अर्हत्सिद्धाचार्यो-पाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः स्वाहा । ५११ । ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुरत्न-त्रयात्मकानन्तगुणेभ्यो नमः स्वाहा । ५१२ ।

उदयति परमात्मज्योतिरुद्योति यस्माद्,—
विशदविनययुक्त्या ध्वस्तमोहान्धकारम् ।
शुचितरघनसारोल्लासिभिश्चन्दनौघैः,—
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ २ ॥ चन्दनम् ।

अहमहमिकयोच्चैः सम्यगाराधनायाम्,
सुरनरखचरेन्द्राः यस्य भक्त्या यतन्ते ।
मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज
ललितसदकपुंजैः केवलज्ञानहेतोः,—
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ३ ॥ अक्षतान् ।

भवभयगुरुपारावारपारं लभन्ते,
विहितशिवसमृद्धेः सेवया यस्य संतः ।
कमलबकुलकुंदोदारमंदारपूरैः,
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ४ ॥ पुष्पाणि ।

जननवनहुताशं छिन्नसन्मोहपाशम्,
शमितमदनमानं विश्वविद्यानिदानम् ।
चरुभिरुरुगुणौघं प्रीणितप्राणिसंघम्,
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ५ ॥ नैवेद्यम् ।

चिदचिदखिलजीवाजीवभेदादिवेद्यम्,
सकलभुवननेत्रम् ज्ञानमाविष्करोति ।
स्मरणमपि यदीयं दीप्रदीपप्रभौघैः,
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ६ ॥ दीपम् ।

भवति न भवभाजां ध्यानतो यस्य पीडा,
ग्रहदितिसुतरक्षःप्रेतभूतप्रसूता ।
अगुरुतुहिनभास्वच्चन्दनोद्भूतधूपैः,
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ७ ॥ धूपम् ।

फलमतुलमनन्तं मुक्तिसौख्यप्रतीपम्,
मार्गदर्शक : आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज
फलति विपुलसेवा सम्यगाविष्कृतोच्चैः, ।
असदृशमहिमश्रीमन्दिरं मातुलिंगैः,
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ८ ॥ फलम् ।

अभिनवजलगंधामंदमन्दारमाला,--
ललितममलमर्घं संददाम्यादरेण ।
गणधरवलयाय श्रीयुजे पद्मनन्दी,
सुरहरिमहिताय प्राप्तये मुक्तिलक्ष्म्याः ॥ ९ ॥ अर्घम् ।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा नमः, एतन्मंत्रेणाष्टोत्तरं शतम् जाप्यं देयम्

अथ जयमाला

देवाधीशैर्महीशैः फणपतिभिरिह प्रत्यहं पूज्यपादा,--
नर्हत्सिद्धानदेहांस्त्रिविधमुनिवरान् सूर्युपाध्यायसाधून् ।
दोषांतैस्तैर्गरिष्ठान् निजसुगुणवरैर्भूषणैर्भूषितांश्च,
नत्वा दृग्बोधवृतादिभिरपि सहितान् संस्तुवे तद्गुणाप्त्यै ॥१॥

सदनंतचतुष्टयगुणविलास, हतघातिचतुष्टयकर्मपाश ।
सकलातिशयादिसुगुणसमृद्ध, त्वं हेऽर्हन् जिन जय जय समृद्ध ॥२॥

जय कृतकर्माष्टकवैरिदूर, जय विश्वालोकनपरमसूर ।
जय सर्वोत्तम वसुगुणसमृद्ध, त्वं सिद्धदेव जय जय समृद्ध ॥ ३ ॥

जय पंचाचारसुचरणधीर जय शिष्यानुग्रहकरणवीर ।
स्थितिकल्पदशाऽऽदिशगुणसमृद्ध, त्वं सूरे जिन जय२समृद्ध ॥ ४ ॥

एकादशांगकृतकंठहार, जय लब्धचतुर्दशपूर्वपार ।
सर्व श्रुतजलनिधिगुणसमृद्ध, त्वं पाठक जय२सुतपवृद्ध ॥ ५ ॥

आरंभपरिग्रहनिखिलमुक्त, सद्दर्शनबोधचरित्ररक्त ।
जय मूलोत्तरगुणनिधिसमृद्ध, साधो जय२सततं प्रबुद्ध ॥ ६ ॥

सम्यग्दर्शनसंविच्चरित्र——, तपसाञ्चित रत्नत्रयपवित्र ।
व्यवहारपरमगुणभेदपूर्ण, त्वं जय मुनिवर कृतकर्मचूर्ण ॥ ७ ॥

पंचैतान् परमेष्ठिनः सुतपसा रत्नत्रयेणान्वितान्,
संसाराम्बुधितारकान् भविजना ध्यायन्ति ये नित्यशः ।
ते देवेन्द्रपदं नरेन्द्रपदवीं संप्राप्य भद्रैर्गुणैः——,
सार्धं, जन्मजरादिदुःखरहितं पश्चाल्लभंते शिवम् ॥ ८ ॥

"पूर्णार्घम्" ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सप्तम जयमाला का अर्थ

देवेन्द्रों, नरेद्रों और भवनवासियोंके अधिपतियों-असुरेद्रोंके द्वारा जिनके चरण प्रतिदिन पूजे जाते हैं, ऐसे अर्हन् परमेष्ठी तथा अशरीर सिद्धपरमात्मा और आचार्य उपाध्याय साधु इस तरह तीन प्रकारके मुनिवरोंको जो कि दोषोंके विनाशसे महान्, अपने २ समीचीन गुणरूपी भूषणोंसे भूषित, और दर्शनज्ञान चारित्र आदिसे युक्त हैं, नमस्कार करके मैं उनके गुणों की प्राप्तिके लिये उनका स्तवन करता हूं ॥ १ ॥

अनन्त चतुष्टयरूप गुण जिनमें विलास कर रहे हैं, चार घातिया कर्मोंका जाल जिन्होने तोड़ दिया है, समस्त अतिशय आदि सद्गुणोंसे समृद्ध हैं ऐसे हे अर्हन् जिन भगवन् आप सदा जयवन्त रहें ॥ २ ॥

आठ कर्मरूपी शत्रुओंको जिन्होंने दूर कर दिया है, विश्व मात्रको देखनेमें जो उत्कृष्ट सूर्यके समान हैं, जो सबसे उत्तम आठ गुणोंसे पूर्ण हैं ऐसे हे सिद्धदेव आप जयवन्त रहें ॥३॥

पंचाचारका पालन करनेमें धोर, शिष्योंका अनुग्रह करनेमें वीर, और स्थितिकल्प नामक दश गुणोंका उपदेश करनेवाले गुणोंसे समृद्ध हे आचार्य परमेष्ठिन् आप सदा जयवन्त रहें ॥ ४ ॥

ग्यारह अंगोंको जिन्होंने अपने कण्ठका हार बना लिया है, और जिन्होंने चतुर्दश पूर्वोंका पार प्राप्त कर लिया है, तथा समस्त श्रुतसमुद्ररूपीगुणसे समृद्ध हैं ऐसे हे उपाध्याय परमेष्ठिन् आप सदा जयवन्त रहें ॥ ५ ॥

आरम्भ और परिग्रहसे सर्वथा रहित, सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रमें अनुरक्त, मूलगुण और उत्तरगुण रूप निधिसे समृद्ध निरंतर प्रबुद्ध रहनेवाले हे साधु परमेष्ठिन् आप सदा जयवन्त रहें ॥ ६ ॥

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र और तप तपरूप आराधनाओंसे युक्त और रत्नत्रयसे पवित्र, व्यवहाररूप परम गुणोंके भेदोंसे पूर्ण कर्मोंको चूर्ण करनेवाले हे मुनिवर आप सदा जयवन्त रहें ॥ ७ ॥

समीचीन तप और रत्नत्रयसे युक्त, संसारसमुद्रसे तारनेवाले इन पंचपरमेष्ठियोंका जो प्राणी नित्य ध्यान करते हैं वे देवेन्द्र और नरेन्द्रपदको प्राप्त कर भद्र—समीचीन गुणोंके साथ जन्मजरादिके दुःखोंसे रहित शिवपदको अंतमें प्राप्त किया करते हैं ॥ ८ ॥

अथ अष्टमपरिधिगतचतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणपूजा ।

स्थापना—

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम्,
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितम् ।
अंतःपत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम्,
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः ॥ १ ॥

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥

सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञाना मृतपानतृप्तनिजभावम् ।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्
" " " " " अत्र तिष्ठ २ ठः ठः
" " " " " अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्

अथाष्टकम् ।

सकलजनकलंकं क्षालयद्भिः सुनीरै,—
स्त्रिदिवसरितिजातैर्जं नवाक्योपमानैः ।
शिवसदननिविष्टं नाद्यनंतं प्रमुक्तम्,
दशशतजिनवारं पूजये सिद्धचक्रम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धाधिपतिभ्यो नमः स्वाहा, जलम् ।

अथ प्रत्येकमंत्राणि ।

ॐ ह्रीं जिनाय नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं जिनेन्द्राय नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं जिनाधिपाय नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं जिनराजे नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं जिनप्रष्ठाय नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं जिनोत्तमाय नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं जिनाधीशाय नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं जिनस्वामिने नमः स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं जिनेश्वराय नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं जिननाथाय नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं जिनपतये नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं जिनराजाय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं जिनाधिराजे नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं जिनप्रभवे नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं जिनविभवे नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं जिनभर्त्रे नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं जिनाधिभुवे नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं जिननेत्रे नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं जिनेशानाय नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं जिनेनाय नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं जिननायकाय नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं जिनेश नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं जिनपरिवृढाय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं जिनदेवाय नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं जिनेशित्रे नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं जिनाधिराजाय नमः स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं

जिनपाय नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं जिनेशिने नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं जिनशासित्रे नमः स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं जिनाधिनाथाय नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं जिनाधिपतये नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं जिनपालकाय नमः स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं जिनचन्द्राय नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं जिनादित्याय नमः स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं जिनार्काय नम स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं जिनकुंजराय नमः स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं जिनेन्दवे नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं जिनधौरेयाय नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं जिनधुर्याय नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं जिनोत्तराय नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं जिनवर्याय नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं जिनवराय नमः स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं जिनसिंहाय नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं जिनोद्वहाय नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं जिनर्षभाय नमः स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं जिनवृषाय नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं जिनरत्नाय नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं जिनोरसे नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं जिनेशाय नमः स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं जिनशार्दूलाय नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं जिनाग्र्याय नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं जिनपुंगवाय नमः स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं जिनहंसाय नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं जिनोत्तंसाय नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं जिननागाय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं जिनाग्रण्ये नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं जिनप्रवेकाय नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं जिनग्रामण्ये नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं जिनसत्तमाय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं जिनप्रवर्हाय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं परमजिनाय नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं जिनपुरोगमाय नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं जिनश्रेष्ठाय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं जिनज्येष्ठाय नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं जिनमुख्याय नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं जिनाग्रिमाय नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं श्रीजिनाय नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं उतम-जिनाय नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं जिनवृन्दारकाय नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं अरिजिते

१—इनः स्वामी, २—ईष्टे इति ईट् तस्मै । ३—परिवृढः —प्रभु. । ४—जिनान् पातीति जिनपः । ५—जिनाः उद्वहाः-पुत्रा यस्य सः अथवा जिनान् उद्वहति-ऊर्ध्वं नयतीति जिनोद्वहः तस्मै । ६—उरः-प्रधानः ।

नमः स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं निर्विघ्नाय नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं विरजसे नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं निस्तरस्काय नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं निरंजनाय नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं घातिकर्मान्तिकाय नमः स्वाहा । ७६ । ॐ ह्रीं कर्ममर्माविधे नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं कर्मघ्ने नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं अनघाय नमः स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं वीतरागाय नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं अक्षुधे नमः स्वाहा । ८१ । ॐ ह्रीं अद्वेषाय नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं निर्मोहाय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं निर्मदाय नमः स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं अगदाय नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं वितृष्णाय नमः स्वाहा । ८६ । ॐ ह्रीं निर्ममाय नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं असंगाय नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं निर्भयाय नमः स्वाहा । ८९ । ॐ ह्रीं वीतविस्मयाय नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं अस्वप्नाय नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं निश्रमाय नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं अजन्मने नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं निःस्वेदाय नमः स्वाहा । ९४ । ॐ ह्रीं निर्जराय नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं अमराय नमः स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं अरत्यतीताय नमः स्वाहा । ९७ । ॐ ह्रीं निश्चिन्ताय नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं निर्विषादाय नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं त्रिषष्ठिजिते नमः स्वाहा । १०० ।

ॐ ह्रीं सर्वज्ञाय नमः स्वाहा । १०१ । ॐ ह्रीं सर्वविदे नमः स्वाहा । १०२ । ॐ ह्रीं सर्वदर्शिने नमः स्वाहा । १०३ । ॐ ह्रीं सर्वावलोकनाय नमः स्वाहा । १०४ । ॐ ह्रीं अनन्तविक्रमाय नमः स्वाहा । १०५ । ॐ ह्रीं अनन्तवीर्याय नमः स्वाहा । १०६ । ॐ ह्रीं अनन्तसुखात्मकाय नमः स्वाहा ।

१—हंसो भास्करः । २— उत्तंसो-मुकुटः । ३—प्रवेकः-प्रधानः । ४— परया-उत्कृष्टया, मया-लक्ष्म्या, उपलक्षितः-परमः सचासौ जिनश्च तस्मै । ५—कर्मणां मर्म-जीवस्थानम् आ समन्तात् विध्यति इति स, तस्मै ।

१—निर्गत मम यस्य स, अथवा निः—निश्चित मा-प्रमाणं यस्य स एवंभूतः सन् यः पदार्थान् मातिमिनोतीति निर्ममः । २— निर्गत भय यस्य, वा भव्यानां यस्मात् स, यद्वा निश्चिता भा दीप्तिर्यस्य तन्निर्भ-केवलाख्यं ज्योतिः तत् यति-प्राप्नोति इति निर्भयः । ३— वीतनष्टोऽद्भुतरसो मदो वा यस्य, अथवा वीतो वेर्गरुडस्य स्मयो-गर्वोयस्मात्, गरुडादप्यधिकतरं विषहरणसामर्थ्यंदृत्वा-दगवत.। ४— अविद्यमानः स्वप्नः निद्रा प्रमादो वा यस्य, अथवा असून् प्राणिनोऽपो जीवनं

।१०७। ॐ ह्रीं अनन्तसौख्याय नमः स्वाहा । १०८। ॐ ह्रीं विश्वज्ञाय नमः स्वाहा । १०९। ॐ ह्रीं विश्वदृश्वने नमः स्वाहा । ११०। ॐ ह्रीं अखिलार्थदृशे नमः स्वाहा । १११। ॐ ह्रीं न्यक्षदृशे नमः स्वाहा । ११२। ॐ ह्रीं विश्वदृश्वने नमः स्वाहा । ११३। ॐ विश्वचक्षुषे नमः स्वाहा । ११४। ॐ ह्रीं अशेषविदे नमः स्वाहा । ११५। ॐ ह्रीं आनन्दाय नमः स्वाहा । ११६। ॐ ह्रीं परमानन्दाय नमः स्वाहा । ११७। ॐ ह्रीं सदानन्दाय नमः स्वाहा । ११८। ॐ ह्रीं सदोदयाय नमः स्वाहा । ११९। ॐ ह्रीं नित्यानन्दाय नमः स्वाहा । १२०। ॐ ह्रीं महानन्दाय नमः स्वाहा । १२१। ॐ ह्रीं परानन्दाय नमः स्वाहा । १२२। ॐ ह्रीं परोदयाय नमः स्वाहा । १२३। ॐ ह्रीं परमोजसे नमः स्वाहा । १२४। ॐ ह्रीं परंतेजसे नमः स्वाहा । १२५। ॐ ह्रीं परंधाम्ने नमः स्वाहा । १२६। ॐ ह्रीं परमहंसे नमः स्वाहा । १२७। ॐ ह्रीं प्रत्यग्ज्योतिषे नमः स्वाहा । १२८। ॐ ह्रीं परंज्योतिषे नमः स्वाहा । १२९। ॐ ह्रीं परंब्रह्मणे नमःस्वाहा । १०३। ॐ ह्रीं परंरहसे नमः स्वाहा । १३१। ॐ ह्रीं प्रत्यगात्मने नमः स्वाहा । १३२। ॐ ह्रीं प्रबुद्धात्मने नमः स्वाहा । १३३। ॐ ह्रीं महात्मने नमः स्वाहा । १३४। ॐ ह्रीं आत्ममतोदयाय नमः स्वाहा । १३५। ॐ ह्रीं परमात्मने नमः स्वाहा । १३६। ॐ ह्रीं प्रशान्तात्मने नमः स्वाहा । १३७। ॐ ह्रीं परात्मने नमः स्वाहा । १३८। ॐ ह्रीं आत्मनिकेतनाय नमः स्वाहा । १३९। ॐ ह्रीं परमेष्ठिने नमः स्वाहा । १४०। ॐ ह्रीं महिष्ठात्मने नमः स्वाहा । १४१। ॐ ह्रीं श्रेष्ठात्मने नमः स्वाहा । १४२।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

नयतीति अस्वप्न । ५—निर्गतः श्रमात् खेदात्, निश्चितः श्रमस्तपो यस्येति वा । ६—स्वेदरहितः, निः स्वानां-दरिद्राणामिम् कामं ददातीति वा । ७—पश्चात्तापरहितः, निर्विषं पापरहितं सुखमानन्दामृतमत्तीति वा निर्विषादः । ८—त्रिषष्ठिकर्मणां जेता । ९—अनन्तपराक्रमः, अनंते अलोके विक्रमो ज्ञानद्वारा गमनं यस्य, अनन्ताः शेषनागा धरणीन्द्रादयो विशेषेण क्रमयोर्नम्रीभूता यस्येति वा १० —अनन्तसुखमात्मा यस्य, अनन्तसुखमात्मानं कायति-कथयति ।

१—अतीन्द्रियदृष्टा । २—सदा उदयो यस्य, सदाउत्-उत्कृष्टम् अयः शुभावहो विधिर्यस्येति वा । ३—महान् आनन्दःसौख्य यस्य, महेन-पूजया आनन्दः यस्मादिति वा ।

ॐ ह्रीं स्वात्मनिष्ठिताय नमः स्वाहा । १४३ । ॐ ह्रीं ब्रह्मनिष्ठाय नमः स्वाहा । १४४ । ॐ ह्रीं महानिष्ठाय नमः स्वाहा । १४५ । ॐ ह्रीं निरूढात्मने नमः स्वाहा । १४६ । ॐ ह्रीं रूढात्मदृशे नमः स्वाहा । १४७ । ॐ ह्रीं एकविद्याय नमः स्वाहा । १४८ । ॐ ह्रीं महाविद्याय नमः स्वाहा । १४९ । ॐ ह्रीं महाब्रह्मपदेश्वराय नमः स्वाहा । १५० । ॐ ह्रीं पंचब्रह्ममयाय नमः स्वाहा । १५१ । ॐ ह्रीं सार्वाय नमः स्वाहा । १५२ । ॐ ह्रीं सर्वविद्येश्वराय नमः स्वाहा । १५३ । ॐ ह्रीं सुभुवे नमः स्वाहा । १५४ । ॐ ह्रीं अनन्तधिये नमः स्वाहा । १५५ । ॐ ह्रीं अनन्तात्मने नमः स्वाहा । १५६ । ॐ ह्रीं अनन्तशक्तये नमः स्वाहा । १५७ । ॐ ह्रीं अनन्तदृशे नमः स्वाहा । १५८ । ॐ ह्रीं अन-न्तानन्तधीशक्तये नमः स्वाहा । १५९ । ॐ ह्रीं अनन्तविदे नमः स्वाहा । १६० । ॐ ह्रीं अनन्तमुदे नमः स्वाहा । १६१ । ॐ ह्रीं सदाप्रकाशाय नमः स्वाहा । १६२ । ॐ ह्रीं सर्वार्थसाक्षात्कारिणे नमः स्वाहा । १६३ । ॐ ह्रीं समग्रधिये नमः स्वाहा । १६४ । ॐ ह्रीं कर्मसाक्षिणे नमः स्वाहा । १६५ । ॐ ह्रीं जगच्चक्षुषे नमः स्वाहा । १६६ । ॐ ह्रीं अलक्ष्यात्मने नमः स्वाहा । १६७ । ॐ ह्रीं अचलस्थितये नमः स्वाहा । १६८ । ॐ ह्रीं निराबाधाय नमः स्वाहा । १६९ । ॐ ह्रीं अप्रतर्क्यात्मने नमः स्वाहा । १७० । ॐ ह्रीं धर्मचक्रिणे नमः स्वाहा । १७१ । ॐ ह्रीं विदांवराय नमः स्वाहा । १७२ । ॐ ह्रीं भूता-त्मने नमः स्वाहा । १७३ । ॐ ह्रीं सहजज्योतिषे नमः स्वाहा । १७४ । ॐ ह्रीं विश्व-ज्योतिषे नमः स्वाहा । १७५ । ॐ ह्रीं अतीन्द्रियाय नमः स्वाहा । १७६ । ॐ ह्रीं केवलिने नमः स्वाहा । १७७ । ॐ ह्रीं केवलालोकाय नमः स्वाहा । १७८ । ॐ ह्रीं लोकालोकविलोकनाय नमः स्वाहा । १७९ । ॐ ह्रीं विविक्ताय नमः स्वाहा । १८० । ॐ ह्रीं केवलाय नमः स्वाहा । १८१ । ॐ ह्रीं अव्यक्ताय नमः स्वाहा । १८२ । ॐ ह्रीं शरण्याय नमः स्वाहा । १८३ । ॐ ह्रीं अचिन्त्यवैभवाय नमः स्वाहा । १८४ । ॐ ह्रीं विश्वभृते नमः स्वाहा । १८५ । ॐ ह्रीं विश्वरूपात्मने नमः स्वाहा । १८६ । ॐ ह्रीं विश्वात्मने नमः स्वाहा । १८७ । ॐ ह्रीं विश्वतोमुखाय नमः स्वाहा । १८८ । ॐ ह्रीं विश्वव्यापिने नमः स्वाहा । १८९ । ॐ ह्रीं स्वयंज्योतिषे नमः स्वाहा । १९० । ॐ ह्रीं अचिन्त्यात्मने नमः स्वाहा । १९१ । ॐ ह्रीं अमितप्रभाय नमः स्वाहा । १९२ । ॐ ह्रीं महौदार्याय नमः

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

१ —शोभना समवसरणरूपा, मोक्षरूपा, ईषत्प्राग्भारनाम्नी भूः स्थानं यस्य ।

स्वाहा । १९३ । ॐ ह्रीं महाबोधये नमः स्वाहा । १९४ । ॐ ह्रीं महालाभाय नमः स्वाहा । १९५ । ॐ ह्रीं महोदयाय नमः स्वाहा । १९६ । ॐ ह्रीं महोपभोगाय नमः स्वाहा । १९७ । ॐ ह्रीं सुगतये नमः स्वाहा । १९८ । ॐ ह्रीं महाभोगाय नमः स्वाहा । १९९ । ॐ ह्रीं महाबलाय नमः स्वाहा । २०० ।

ॐ ह्रीं यज्ञार्हाय नमः स्वाहा । २०१ । ॐ ह्रीं भगवते नमः स्वाहा । २०२ । ॐ ह्रीं अर्हते नमः स्वाहा । २०३ । ॐ ह्रीं महार्हाय नमः स्वाहा । २०४ । ॐ ह्रीं मघवार्चिताय नमः स्वाहा । २०५ । ॐ ह्रीं भूतार्थयज्ञपुरुषाय नमः स्वाहा । २०६ । ॐ ह्रीं भूतार्थक्रतु-पुरुषाय नमः स्वाहा । २०७ । ॐ ह्रीं पूज्याय नमः स्वाहा । २०८ । ॐ ह्रीं भट्टारकाय नमः स्वाहा । २०९ । ॐ ह्रीं तत्रभवते नमः स्वाहा । २१० । ॐ ह्रीं अत्रभवते नमः स्वाहा । २११ । ॐ ह्रीं महते नमः स्वाहा । २१२ । ॐ ह्रीं महाभट्टार्हाय नमः स्वाहा । २१३ । ॐ ह्रीं तत्रायुषे नमः स्वाहा । २१४ । ॐ ह्रीं ततोदीर्घायुषे नमः स्वाहा । २१५ । ॐ ह्रीं अर्घ्यवाचे नमः स्वाहा । २१६ । ॐ ह्रीं आराध्याय नमः स्वाहा । २१७ । ॐ ह्रीं परमाध्याय नमः स्वाहा । २१८ । ॐ ह्रीं पंचकल्याणपूजिताय नमः स्वाहा । २१९ । ॐ ह्रीं दृग्विशुद्धि-गणोदग्राय नमः स्वाहा । २२० । ॐ ह्रीं वसुधारार्चितास्पदाय नमः स्वाहा । २२१ । ॐ ह्रीं सुस्वप्नदर्शिते नमः स्वाहा । २२२ । ॐ ह्रीं दिव्यौजसे नमः स्वाहा । २२३ । ॐ ह्रीं शचीसे-वितमातृकाय नमः स्वाहा । २२४ । ॐ ह्रीं रत्नगर्भाय नमः स्वाहा । २२५ । ॐ ह्रीं श्रीपूत-गर्भाय नमः स्वाहा । २२६ । ॐ ह्रीं गर्भोत्सवोच्छ्रिताय नमः स्वाहा । २२७ । ॐ ह्रीं दिव्यो-पचारोपचिताय नमः स्वाहा । २२८ । ॐ ह्रीं पद्मभुवे नमः स्वाहा । २२९ । ॐ ह्रीं निष्कलाय नमः स्वाहा । २३० । ॐ ह्रीं स्वजाय नमः स्वाहा । २३१ । ॐ ह्रीं सर्वीयजन्मने नमः स्वाहा । २३२ । ॐ ह्रीं पुण्यांगाय नमः स्वाहा । २३३ । ॐ ह्रीं भास्वते नमः स्वाहा । २३४ । ॐ ह्रीं उद्भूतदैवताय नमः स्वाहा । २३५ । ॐ ह्रीं विश्वविज्ञानसंभूताय नमः स्वाहा । २३६ । ॐ ह्रीं विश्वदेवागमाद्भुताय नमः स्वाहा । २३७ । ॐ ह्रीं शचीसृष्टप्रति-

---

१—असहाय:-सर्वथा स्वतन्त्रः, के-आत्मनि बलं यस्येतिवा । २—विश्वत:-चतुर्दिक्षु मुखं यस्य, अथवा विश्वतोमुखं जलमुच्यते तद्धर्मं साधर्म्यात् भगवानपि विश्वतोमुखः अमितपातकप्रक्षा-लनात् विषसुखदाहनिवारकत्वात् प्रसात्तिरूपत्वाच्च विश्वं तस्यति स्वर्मोक्षयोर्नयतिमुखंयस्य, विश्वत: सर्वांगेषुमुखं यस्येतिवा, सहस्रशीर्षः सहस्रपादित्यभिधानात् ।

च्छन्दाय नमः स्वाहा । २३८ । ॐ ह्रीं सहस्राक्षदृगुत्सवाय नमः स्वाहा । २३९ । ॐ ह्रीं नृत्यदैरावतासीनाय नमः स्वाहा । २४० । ॐ ह्रीं सर्वशक्रनमस्कृताय नमः स्वाहा । २४१ । ॐ ह्रीं हर्षाकुलामरखगाय नमः स्वाहा । २४२ । ॐ ह्रीं चारणर्षिमतोत्सवाय नमः स्वाहा । २४३ । ॐ ह्रीं व्यवाय नमः स्वाहा । २४४ । ॐ ह्रीं विष्णुपदारक्षाय नमः स्वाहा । २४५ । ॐ ह्रीं स्नानपीठायिताद्रिराजे नमः स्वाहा । २४६ । ॐ ह्रीं तीर्थेशमन्यदुग्धाब्धये नमः स्वाहा । २४७ । ॐ ह्रीं स्नानाम्बुस्नातवासवाय नमः स्वाहा । २४८ । ॐ ह्रीं गंधाम्बुपूतत्रैलोक्याय नमः स्वाहा । २४९ । ॐ ह्रीं वज्रसूचीशुचिश्रवसे नमः स्वाहा । २५० । ॐ ह्रीं कृतार्थितशचीहस्ताय नमः स्वाहा । २५१ । ॐ ह्रीं शक्रोद्घुष्टेष्टनामकाय नमः स्वाहा । २५२ । ॐ ह्रीं शक्रारब्धानन्दनृत्याय नमः स्वाहा । २५३ । ॐ ह्रीं शचीविस्मापिताम्बिकाय नमः स्वाहा । २५४ । ॐ ह्रीं इन्द्रनृत्यन्तपितृकाय नमः स्वाहा । २५५ । ॐ ह्रीं रैदपूर्णमनोरथाय नमः स्वाहा । २५६ । ॐ ह्रीं आज्ञार्थीन्द्रकृतासेवाय नमः स्वाहा । २५७ । ॐ ह्रीं देवर्षीष्टशिवोद्यमाय नमः स्वाहा । २५८ । ॐ ह्रीं दीक्षाक्षणक्षुब्ध-

---

१—भट्टान्-पंडितान् स्याद्वादपरीक्षार्थमारकति:प्रेरयति इतिभट्टारकः । २—दृशः सम्यक्त्वस्य विशुद्धिनिरतिचारता यस्य स एवंभूतोगण द्वादशविधि: तत्र उदग्र:-उत्कर्षेण मुख्यः । ३—स्वेन -आत्मना जायते इति स्वजः, अथवा सु-शोभन;—रागद्वेषरहितः अजः ब्रह्मा ।

१—श्रुतसागरटीकायां "व्यो" शब्द उपलभ्यते, तैः स, विशेषेण अवति—रक्षति प्राणिगणानिति व्योम इति निरुक्तश्च । किन्तु विपूर्वकादव् धातोर्व्यवशब्द एव भवितुमर्हति न व्योम इति । अतएवेह व्यवशब्द एव व्यवहृतः । "व्योम" इति मूलपाठे तु एव निरुक्तिः संभवति—"व्यो" इति बीजार्थकोऽव्यय, त-संसारमोक्षयोर्मूल मन्यते जानातीति व्योम इति । २ अस्य, "विष्णुपदा रक्षा" इत्यग्रिमशब्दस्य च श्रुतसागरैराविष्ट लिंगत्व सूचितम् । वेवेष्टि—व्याप्नोति लोकमिति विष्णुः प्राणिवर्गः तेषां पदानि—गुणस्थानानि मार्गणास्थानानि वा तेषामासमन्ताद् रक्षा, करुणारूपरक्षा भवतः । ३ - शक्रेणोद्घुष्टमुच्चरितम् इष्ट-सर्वमानित नाम यस्य । ४—इन्द्रस्य नृतिर्नर्तनम् अन्ते अग्रे पितुर्यस्य । यस्य भगवतः पितुरग्रे इन्द्रः नृत्यति तस्मै इत्यर्थः । भगवतोऽभिषेकात्प्राक् पश्चाच्चेति वारद्वयं पितुरग्रे इन्द्रः नृत्यं करोतीति सूचनार्थं नामद्वयेनेह स्मरणम् । ५—रैदेन—कुबेरनामकेन यक्षेन्द्रेण पूर्णाः- पूर्तिनीता मनोरथाः (भोगोपभोगसम्बन्धिनः) यस्य । ६—आज्ञाया अर्थी-अभिलाषक सचासौ इन्द्रश्च तेन कृता-विहिता आ-समन्तात् सेवा-पर्युपासनं यस्य स ।

जगते नमः स्वाहा । २५९। ॐ ह्रीं भूर्भुवःस्वःपतीडिताय नमः स्वाहा । २६० । ॐ ह्रीं कुवरनिर्मितास्थानाय नमः स्वाहा । २६१ । ॐ ह्रीं श्रीगुरवे नमः स्वाहा । २६२ । ॐ ह्रीं योगीश्वरार्चिताय नमः स्वाहा । २६३ । ॐ ह्रीं ब्रह्मेड्याय नमः स्वाहा । २६४ । ॐ ह्रीं ब्रह्मविदे नमः स्वाहा । २६५ । ॐ ह्रीं वेद्याय नमः स्वाहा । २६६ । ॐ ह्रीं याज्याय नमः स्वाहा । २६७ । ॐ ह्रीं यज्ञपतये नमः स्वाहा । २६८ । ॐ ह्रीं क्रतवे नमः स्वाहा । २६९ । ॐ ह्रीं यज्ञांगाय नमः स्वाहा । २७० । ॐ ह्रीं अमृताय नमः स्वाहा । २७१ । ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं यज्ञाय नमः स्वाहा । २७२ । ॐ ह्रीं हविसे नमः स्वाहा । २७३ । ॐ ह्रीं स्तुत्याय नमः स्वाहा । २७४ । ॐ ह्रीं स्तुतीश्वराय नमः स्वाहा । २७५ । ॐ ह्रीं भावाय नमः स्वाहा । २७६ । ॐ ह्रीं महामहपतये नमः स्वाहा । २७७ । ॐ ह्रीं महायज्ञाय नमः स्वाहा । २७८ । ॐ ह्रीं अग्रयाजकाय नमः स्वाहा । २७९ । ॐ ह्रीं दयायागाय नमः स्वाहा । २८० । ॐ ह्रीं जगत्पूज्याय नमः स्वाहा । २८१ । ॐ ह्रीं पूजार्हाय नमः स्वाहा । २८२ । ॐ ह्रीं जगदर्चिताय नमः स्वाहा । २८३ । ॐ ह्रीं देवाधिदेवाय नमः स्वाहा । २८४ । ॐ ह्रीं शक्रार्च्याय नमः स्वाहा । २८५ । ॐ ह्रीं देवदेवाय नमः स्वाहा । २८६ । ॐ ह्रीं जगद्गुरवे नमः स्वाहा । २८७ । ॐ ह्रीं सहूतदेवसंघार्च्याय नमः स्वाहा । २८८ । ॐ ह्रीं पद्मयानाय नमः स्वाहा । २८९ । ॐ ह्रीं जयध्वजिने नम स्वाहा । २९० । ॐ ह्रीं भामण्डलिने नमः स्वाहा । २९१ । ॐ ह्रीं चतुःषष्ठिचामराय नमः स्वाहा । २९२ । ॐ ह्रीं देवदुन्दुभये नमः स्वाहा । २९३ । ॐ ह्रीं वागस्पृष्टासनाय नमः स्वाहा । २९४ । ॐ ह्रीं छत्रत्रयराजे नमः स्वाहा । २९५ । ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिभाजे नमः स्वाहा । २९६ । ॐ ह्रीं दिव्याशोकाय ननः स्वाहा । २९७ । ॐ ह्रीं मानमर्दिने नमः स्वाहा । २९८ । ॐ ह्रीं संगीतार्हाय नम स्वाहा । २९९ । ॐ ह्रीं अष्टमंगलाय नमः स्वाहा । ३०० ।

---

१ त्रिलोकपतीडिताय । २—क्रियते-योगिभिर्ध्यानेन प्रकटीक्रियते इति क्रतुः । ३—"शब्द प्रवृत्तिहेतुस्वामिप्रायो जन्म वस्तु च । आत्मा लीला क्रिया भूतिर्योनिश्चेष्टा बुधस्तथा । सत्तास्वभावोजन्तुस्स श्रृंगारादेस्व कारणम्, अर्थेषु पंचदशसु भावशब्दः प्रकीर्तित ।। इत्युक्तेषु भावशब्दार्थेषु यथायोग्योऽर्थ इह विधेयः । अथवा-भां-दीप्तिमवती-रक्षति, आप्नोति, ददातीति वा भावः । अब धातोरनेकार्थत्वात् ।

ॐ ह्रीं तीर्थकृते नमः स्वाहा । ३०१ । ॐ ह्रीं तीर्थसृजे नमः स्वाहा । ३०२ । ॐ ह्रीं तीर्थकराय नमः स्वाहा । ३०३ । ॐ ह्रीं तीर्थंकराय नमः स्वाहा । ३०४ । ॐ ह्रीं सुदृशे नमः स्वाहा । ३०५ । ॐ ह्रीं तीर्थकर्त्रे नमः स्वाहा । ३०६ । ॐ ह्रीं तीर्थभर्त्रे नमः स्वाहा । ३०७ । ॐ ह्रीं तीर्थेशाय नमः स्वाहा । ३०८ । ॐ ह्रीं तीर्थनायकाय नमः स्वाहा । ३०९ । ॐ ह्रीं धर्मतीर्थंकराय नमः स्वाहा । ३१० । ॐ ह्रीं तीर्थप्रणेत्रे नमः स्वाहा । ३११ । ॐ ह्रीं तीर्थंकारकाय नमः स्वाहा । ३१२ । ॐ ह्रीं तीर्थप्रवर्तकाय नमः स्वाहा । ३१३ । ॐ ह्रीं तीर्थवधसे नमः स्वाहा । ३१४ । ॐ ह्रीं तीर्थविधायकाय नमः स्वाहा । ३१५ । ॐ ह्रीं सत्यतीर्थकराय नमः स्वाहा । ३१६ । ॐ ह्रीं तीर्थवेधसे नमः स्वाहा । ३१७ । ॐ ह्रीं तैर्थिकतारकाय नमः स्वाहा । ३१८ । ॐ ह्रीं सत्यवाक्याधिपाय नमः स्वाहा । ३१९ । ॐ ह्रीं सत्यशासनाय नमः स्वाहा । ३२० । ॐ ह्रीं अप्रतिशासकाय नमः स्वाहा । ३२१ । ॐ ह्रीं स्याद्वादिने नमः स्वाहा । ३२२ । ॐ ह्रीं दिव्यगिरे नमः स्वाहा । ३२३ । ॐ ह्रीं दिव्यध्वनये नमः स्वाहा । ३२४ । ॐ ह्रीं अव्याहतार्थवाचे नमः स्वाहा । ३२५ । ॐ ह्रीं पुण्यवाचे नमः स्वाहा । ३२६ । ॐ ह्रीं अर्थ्यवाचे नमः स्वाहा । ३२७ । ॐ ह्रीं अर्द्धमागधीयोक्तये नमः स्वाहा । ३२८ । ॐ ह्रीं इद्धवाचे नमः स्वाहा । ३२९ । ॐ ह्रीं अनेकान्तदिशे नमः स्वाहा । ३३० । ॐ ह्रीं एकान्तध्वान्तभिदे नमः स्वाहा । ३३१ । ॐ ह्रीं दुर्नयान्तकृते नमः स्वाहा । ३३२ । ॐ ह्रीं सार्थवाचे नमः स्वाहा । ३३३ । ॐ ह्रीं अप्रयत्नोक्तये नमः स्वाहा । ३३४ । ॐ ह्रीं प्रतितीर्थमदघ्नवाचे नमः स्वाहा । ३३५ । ॐ ह्रीं स्यात्कारध्वजवाचे नमः स्वाहा । ३३६ । ॐ ह्रीं ईहापेतवाचे नमः स्वाहा । ३३७ । ॐ ह्रीं अचलौष्ठवाचे नमः स्वाहा । ३३८ । ॐ ह्रीं अपौरुषेयवाक्छास्त्रे नमः स्वाहा । ३३९ । ॐ ह्रीं रुद्धवाचे नमः स्वाहा । ३४० । ॐ ह्रीं सप्तभंगिवाचे नमः स्वाहा । ३४१ । ॐ ह्रीं अवर्णगिरे नमः स्वाहा । ३४२ । ॐ ह्रीं सर्वभाषामयगिरे नमः स्वाहा । ३४३ । ॐ ह्रीं व्यक्तवर्णगिरे नमः स्वाहा । ३४४ । ॐ ह्रीं अमोघवाचे नमः स्वाहा । ३४५ । ॐ ह्रीं अक्रमवाचे नमः स्वाहा । ३४६ । ॐ ह्रीं अवाच्यानन्तवाचे नमः

१—वारिभस्पृष्टमासनसुरः प्रभृत्युच्चारणस्थानं यस्य (अष्टौ स्थानानि) वर्णानामुरः कण्ठ शिरस्तथा जिह्वामूलंचदन्तास्च नासिकोष्ठौच तालुच" । २—ये तीर्थे-शास्त्रे नियुक्ताः, ये च तीर्थे गुरौ नियुक्ताः सेवापराः, यद्वा तीर्थे-जिनपूजने नियुक्ताः अथवा तीर्थे-पुण्यक्षेत्रे नियुक्ता-यात्राकारकाः इथैव तीर्थ-पात्रं तस्य दानादिकर्मणि ये नियुक्ताः ते सर्वे तैर्थिका उच्यन्ते । तेषां तारकस्तस्मै ।

स्वाहा । ३४७ । ॐ ह्रीं अवाचे नमः स्वाहा । ३४८ । ॐ ह्रीं अद्वैतगिरे नमः स्वाहा । ३४९ । ॐ ह्रीं सूनृतगिरे नमः स्वाहा । ३५० । ॐ ह्रीं सत्यानुभयगिरे नमः स्वाहा । ३५१ । ॐ ह्रीं सुगिरे नमः स्वाहा । ३५२ । ॐ ह्रीं योजनव्यापिगिरे नमः स्वाहा । ३५३ । ॐ ह्रीं क्षीरगौरगिरे नमः स्वाहा । ३५४ । ॐ ह्रीं तीर्थकृत्वगिरे नमः स्वाहा । ३५५ । ॐ ह्रीं भव्यैकश्रव्यगवे नमः स्वाहा । ३५६ । ॐ ह्रीं सद्भवे नमः स्वाहा । ३५७ । ॐ ह्रीं चित्रगवे नमः स्वाहा । ३५८ । ॐ ह्रीं परमार्थगवे नमः स्वाहा । ३५९ । ॐ ह्रीं प्रशांतगवे नमः स्वाहा । ३६० । ॐ ह्रीं प्राश्निकगवे नमः स्वाहा । ३६१ । ॐ ह्रीं सुगवे नमः स्वाहा । ३६२ । ॐ ह्रीं नियतकालगवे नमः स्वाहा । ३६३ । ॐ ह्रीं सुश्रुतये नमः स्वाहा । ३६४ । ॐ ह्रीं सुश्रुताय नमः स्वाहा । ३६५ ।

मार्गदर्शक – आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

ॐ ह्रीं याज्यश्रुतये नमः स्वाहा । ३६६ । ॐ ह्रीं सुश्रुतये नमः स्वाहा । ३६७ । ॐ ह्रीं महाश्रुतये नमः स्वाहा । ३६८ । ॐ ह्रीं धर्मश्रुतये नमः स्वाहा । ३६९ । ॐ ह्रीं श्रुतिपतये नमः स्वाहा । ३७० । ॐ ह्रीं श्रुत्युद्धर्त्रे नमः स्वाहा । ३७१ । ॐ ह्रीं ध्रुवश्रुतये नमः स्वाहा । ३७२ । ॐ ह्रीं निर्वाणमार्गदिशे नमः स्वाहा । ३७३ । ॐ ह्रीं मार्गदेशकाय नमः स्वाहा । ३७४ । ॐ ह्रीं सर्वमार्गदिशे नमः स्वाहा । ३७५ । ॐ ह्रीं सारस्वतपथाय नमः स्वाहा । ३७६ । ॐ ह्रीं तीर्थपरमोत्तमतीर्थकृते नमः स्वाहा । ३७७ । ॐ ह्रीं देष्ट्रे नमः स्वाहा । ३७८ । ॐ ह्रीं वाग्मीश्वराय नमः स्वाहा । ३७९ । ॐ ह्रीं धर्मशासकाय नमः स्वाहा । ३८० । ॐ ह्रीं धर्मदेशकाय नमः स्वाहा । ३८१ । ॐ ह्रीं वागीश्वराय नमः स्वाहा । ३८२ । ॐ ह्रीं त्रयीनाथाय नमः स्वाहा । ३८३ । ॐ ह्रीं त्रिभंगीशाय नमः स्वाहा । ३८४ । ॐ ह्रीं गिरांपतये नमः स्वाहा । ३८५ । ॐ ह्रीं सिद्धाज्ञाय नमः स्वाहा । ३८६ । ॐ ह्रीं सिद्धवाचे नमः स्वाहा । ३८७ । ॐ ह्रीं आज्ञासिद्धाय नमः स्वाहा । ३८८ । ॐ ह्रीं सिद्धैकशासनाय नमः स्वाहा । ३८९ । ॐ ह्रीं जगत्प्रसिद्धसिद्धान्ताय नमः स्वाहा । ३९० । ॐ ह्रीं सिद्धमंत्राय नमः स्वाहा । ३९१ । ॐ ह्रीं सुसिद्धवाचे नमः स्वाहा । ३९२ । ॐ ह्रीं शुचिश्रवसे नमः स्वाहा । ३९३ । ॐ ह्रीं निरुक्तये नमः स्वाहा । ३९४ । ॐ ह्रीं तंत्रकृते नमः स्वाहा । ३९५ । ॐ ह्रीं न्यायशास्त्रकृते नमः

---

१ –ग्रामं-सिद्धसमूहं नमतीति ग्रामणीः । २– गमनं, ज्ञानमात्र, सर्वेषामतिहरणसमर्थो वा गतिः । आविष्टलिंगं गतिः शरणम् । ३—पाति रक्षतिदुःखातिपाता तस्मै ।

स्वाहा । ३९६ । ॐ ह्रीं महिष्ठवाचे नमः स्वाहा । ३९७ । ॐ ह्रीं महानादाय नम स्वाहा । । ३९८ । ॐ ह्रीं कवीन्द्राय नमः ३९९ । ॐ ह्रीं दुंदुभिस्वनाय नमः स्वाहा । ४०० ।

ॐ ह्रीं नाटच(ढ्या)य नमः स्वाहा । ४०१ । ॐ ह्रीं पतये नमः स्वाहा । ४०२ । ॐ ह्रीं परिवृढाय नमः स्वाहा । ४०३ । ॐ ह्रीं स्वामिने नमः स्वाहा । ४०४ । ॐ ह्रीं भर्त्ते नमः स्वाहा । ४०५ । ॐ ह्रीं विभवे नमः स्वाहा । ४०६ । ॐ ह्रीं प्रभवे नमः स्वाहा । ४०७ । ॐ ह्रीं ईस्वराय नमः स्वाहा । ४०८ । ॐ ह्रीं अधीस्वराय नमः स्वाहा । ४०९ । ॐ ह्रीं अधीशाय नमः स्वाहा । ४१० । ॐ ह्रीं अधीशानाय नमः स्वाहा । ४११ । ॐ ह्रीं अधीशित्रे नमः स्वाहा । ४१२ । ॐ ह्रीं ईशित्रे नमः स्वाहा । ४१३ । ॐ ह्रीं ईशाय नमः स्वाहा । ४१४ । ॐ ह्रीं अधिपतये नमः स्वाहा । ४१५ । ॐ ह्रीं ईशानाय नमः स्वाहा । ४१६ । ॐ ह्रीं इनाय नमः स्वाहा । ४१७ । ॐ ह्रीं इन्द्राय नमः स्वाहा । ४१८ । ॐ ह्रीं अधिपाय नमः स्वाहा । ४१९ । ॐ ह्रीं अधिभुवे नमः स्वाहा ४२० । ॐ ह्रीं महेस्वराय नमः स्वाहा । ४२१ । ॐ ह्रीं महेशानाय नमः स्वाहा ४२२ । ॐ ह्रीं महेशाय नमः स्वाहा । ४२३ । ॐ ह्रीं परमेशित्रे नमः स्वाहा । ४२४ । ॐ ह्रीं अधिदेवाय नमः स्वाहा । ४२५ । ॐ ह्रीं महादेवाय नमः स्वाहा । ४२६ । ॐ ह्रीं देवाय नमः स्वाहा । ४२७ । ॐ ह्रीं त्रिभुवनेश्वराय नमः स्वाहा । ४२८ । ॐ ह्रीं विश्वेशाय नमः स्वाहा । ४२९ । ॐ ह्रीं विश्वभूतेशाय नमः स्वाहा । ४३० । ॐ ह्रीं विश्वेशे नमः स्वाहा । ४३१ । ॐ ह्रीं विश्वेश्वराय नमः स्वाहा । ४३२ । ॐ ह्रीं अधिराजे नमः स्वाहा । ४३३ । ॐ ह्रीं लोकेश्वराय नमः स्वाहा । ४३४ । ॐ ह्रीं लोकपतये नमः स्वाहा । ४३५ । ॐ ह्रीं लोकनाथाय नमः स्वाहा । ४३६ । ॐ ह्रीं जगत्पतये नमः स्वाहा । ४३७ । ॐ ह्रीं त्रैलोक्यनाथाय नमः स्वाहा । ४३८ । ॐ ह्रीं लोकेशाय नमः स्वाहा । ४३९ । ॐ ह्रीं जगन्नाथाय नमः स्वाहा । ४४० । ॐ ह्रीं जगत्प्रभवे नमः स्वाहा । ४४१ । ॐ ह्रीं पित्रे नमः स्वाहा । ४४२ । ॐ ह्रीं पराय नमः स्वाहा । ४४३ । ॐ ह्रीं परतराय नमः स्वाहा । ४४४ । ॐ ह्रीं जेत्रे नमः स्वाहा । ४४५ । ॐ ह्रीं जिष्णवे नमः स्वाहा । ४४६ । ॐ ह्रीं अनीश्वराय नमः स्वाहा । ४४७ । ॐ ह्रीं कर्त्रे नमः स्वाहा । ४४८ । ॐ ह्रीं प्रभूष्णवे नमः स्वाहा । ४४९ । ॐ ह्रीं भ्राजिष्णवे नमः स्वाहा । ४५० । ॐ ह्रीं प्रभविष्णवे नमः स्वाहा । ४५१ । ॐ ह्रीं स्वयंप्रभवे नमः स्वाहा । ४५२ । ॐ ह्रीं लोकजिते नमः स्वाहा । ४५३ । ॐ ह्रीं विश्वजिते नमः स्वाहा । ४५४ । ॐ ह्रीं विश्वविजेत्रे नमः स्वाहा । ४५५ । ॐ ह्रीं विश्वजित्वराय नमः स्वाहा । ४५६ । ॐ ह्रीं जगज्जेत्रे नमः स्वाहा । ४५७ । ॐ

ह्रीं जगज्जैत्राय नमः स्वाहा । ४५८ । ॐ ह्रीं जगज्जिष्णवे नमः स्वाहा । ४५९ । ॐ ह्रीं जगज्जयिने नमः स्वाहा । ४६० । ॐ ह्रीं अग्रण्यै नमः स्वाहा । ४६१ । ॐ ह्रीं ग्रामण्यै नमः स्वाहा । ४६२ । ॐ ह्रीं नेत्रे नमः स्वाहा । ४६३ । ॐ ह्रीं भूर्भुवःस्वरधीश्वराय नमः स्वाहा । ४६४ । ॐ ह्रीं धर्मनायकाय नमः स्वाहा । ४६५ । ॐ ह्रीं ऋद्धीशाय नमः स्वाहा । ४६६ । ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः स्वाहा । ४६७ । ॐ ह्रीं भूतभृते नमः स्वाहा । ४६८ । ॐ ह्रीं गतये नमः स्वाहा । ४६९ । ॐ ह्रीं पात्रे नमः स्वाहा । ४७० । ॐ ह्रीं वृषाय नमः स्वाहा । ४७१ । ॐ ह्रीं वर्याय नमः स्वाहा । ४७२ । ॐ ह्रीं मंत्रकृते नमः स्वाहा । ४७३ । ॐ ह्रीं शुभलक्षणाय नमः स्वाहा । ४७४ । ॐ ह्रीं लोकाध्यक्षाय नमः स्वाहा । ४७५ । ॐ ह्रीं दुराधर्षाय नमः स्वाहा । ४७६ । ॐ ह्रीं भव्यबंधवे नमः स्वाहा । ४७७ । ॐ ह्रीं निरुत्सुकाय नमः स्वाहा । ४७८ । ॐ ह्रीं धीराय नमः स्वाहा । ४७९ । ॐ ह्रीं जगद्धिताय नमः स्वाहा । ४८० । ॐ ह्रीं अजय्याय नमः स्वाहा । ४८१ । ॐ ह्रीं त्रिजगत्परमेश्वराय नमः स्वाहा । ४८२ । ॐ ह्रीं विश्वासिने नमः स्वाहा । ४८३ । ॐ ह्रीं सर्वलोकेशाय नमः स्वाहा । ४८४ । ॐ ह्रीं विभवाय नमः स्वाहा । ४८५ । ॐ ह्रीं भुवनेश्वराय नमः स्वाहा । ४८६ । ॐ ह्रीं त्रिजगद्वल्लभाय नमः स्वाहा । ४८७ । ॐ ह्रीं तुंगाय नमः स्वाहा । ४८८ । ॐ ह्रीं त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः स्वाहा । ४८९ । ॐ ह्रीं धर्मचक्रायुधाय नमः स्वाहा । ४९० । ॐ ह्रीं सद्योजाताय नमः स्वाहा । ४९१ । ॐ ह्रीं त्रैलोक्यमंगलाय नमः स्वाहा । ४९२ । ॐ ह्रीं वरदाय नमः स्वाहा । ४९३ । ॐ ह्रीं अप्रतिघाय नमः स्वाहा । ४९४ । ॐ ह्रीं अच्छेद्याय नमः स्वाहा । ४९५ । ॐ ह्रीं दृढीयसे नमः स्वाहा । ४९६ । ॐ ह्रीं अभयंकराय नमः स्वाहा । ४९७ । ॐ ह्रीं महाभागाय नमः स्वाहा । ४९८ । ॐ ह्रीं निरौपम्याय नमः स्वाहा । ४९९ । ॐ ह्रीं धर्मसाम्राज्यनायकाय नमः स्वाहा । ५०० ।

ॐ ह्रीं योगिने नमः स्वाहा ।५०१। ॐ ह्रीं प्रव्यक्त निर्वेदाय नमः स्वाहा ।५०२। ॐ ह्रीं साम्यारोहणतत्पराय नमः स्वाहा । ५०३ । ॐ ह्रीं सामायिकिने नमः स्वाहा । ५०४ । ॐ ह्रीं सामायिकाय नमः स्वाहा । ५०५ । ॐ ह्रीं निःप्रमादाय नमः स्वाहा । ५०६ । ॐ ह्रीं अप्रतिक्रमाय नमः स्वाहा । ५०७ । ॐ ह्रीं यमाय नमः स्वाहा । ५०८ । ॐ ह्रीं

१ —विश्वासोऽस्त्यस्यस, विश्वस्मिन्-केवलोकेच आस्ते-तिष्ठति सः । २— अविद्यमानः प्रतिघ क्रोधो विभावपरिणामो वा यस्य स ।

प्रधाननियमाय नमः स्वाहा । ५०९ । ॐ ह्रीं स्वभ्यस्तपरमासनाय नमः स्वाहा । ५१० । ॐ ह्रीं प्राणायामचरणाय नमः स्वाहा । ५११ । ॐ ह्रीं सिद्धप्रत्याहाराय नमः स्वाहा । ५१२ । ॐ ह्रीं जितेन्द्रियाय नमः स्वाहा । ५१३ । ॐ ह्रीं धारणाधीश्वराय नमः स्वाहा । ५१४ । ॐ ह्रीं धर्मध्याननिष्ठाय नमः स्वाहा । ५१५ । ॐ ह्रीं समाधिराजे नमः स्वाहा । ५१६ । ॐ ह्रीं स्फुरत्समरसीभावाय नमः स्वाहा । ५१७ । ॐ ह्रीं एकिने नमः स्वाहा । ५१८ । ॐ ह्रीं करणनायकाय नमः स्वाहा । ५१९ । ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थनाथाय नमः स्वाहा । ५२० । ॐ ह्रीं योगीन्द्राय नमः स्वाहा । ५२१ । ॐ ह्रीं ऋषये नमः स्वाहा । ५२२ । ॐ ह्रीं साधवे नमः स्वाहा । ५२३ । ॐ ह्रीं यतये नमः स्वाहा । ५२४ । ॐ ह्रीं मुनये नमः स्वाहा । ५२५ । ॐ ह्रीं महर्षये नमः स्वाहा । ५२६ । ॐ ह्रीं साधुधौरेयाय नमः स्वाहा । ५२७ । ॐ ह्रीं यतिनाथाय नमः स्वाहा ५२८ । ॐ ह्रीं मुनीश्वराय नमः स्वाहा । ५२९ । ॐ ह्रीं महामुनये नमः स्वाहा । ५३० । ॐ ह्रीं महामौनिने नमः स्वाहा । ५३१ । ॐ ह्रीं महाध्यानिने नमः स्वाहा । ५३२ । ॐ ह्रीं महाव्रतिने नमः स्वाहा । ५३३ । ॐ ह्रीं महाक्षमाय नमः स्वाहा । ५३४ । ॐ ह्रीं महाशीलाय नमः स्वाहा । ५३५ । ॐ ह्रीं महाशान्ताय नमः स्वाहा । ५३६ । ॐ ह्रीं महादमाय नमः स्वाहा । ५३७ । ॐ ह्रीं निर्लेपाय नमः स्वाहा । ५३८ । ॐ ह्रीं निर्भ्रमस्वान्ताय नमः स्वाहा । ५३९ । ॐ ह्रीं धर्माध्यक्षाय नमः स्वाहा । ५४० । ॐ ह्रीं दयाध्वजाय नमः स्वाहा । ५४१ । ॐ ह्रीं ब्रह्मयोनये नमः स्वाहा । ५४२ । ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धाय नमः स्वाहा । ५४३ । ॐ ह्रीं ब्रह्मज्ञाय नमः स्वाहा । ५४४ । ॐ ह्रीं ब्रह्मतत्त्वविदे नमः स्वाहा । ५४५ । ॐ ह्रीं पूतात्मने नमः स्वाहा । ५४६ । ॐ ह्रीं स्नातकाय नमः स्वाहा । ५४७ । ॐ ह्रीं दान्ताय नमः स्वाहा । ५४८ । ॐ ह्रीं भदन्ताय नमः स्वाहा । ५४९ । ॐ ह्रीं वीतमत्सराय नमः स्वाहा । ५५० । ॐ ह्रीं धर्मवृक्षायुधाय नमः स्वाहा । ५५१ । ॐ ह्रीं अक्षोभ्याय नमः स्वाहा । ५५२ । ॐ ह्रीं प्रपूतात्मने नमः स्वाहा । ५५३ । ॐ ह्रीं अमृतोद्भवाय नमः स्वाहा । ५५४ । ॐ ह्रीं मंत्रमूर्तये नमः स्वाहा । ५५५ । ॐ ह्रीं स्वसौम्यात्मने नमः स्वाहा । ५५६ । ॐ ह्रीं स्वतंत्राय नमः स्वाहा । ५५७ । ॐ ह्रीं ब्रह्मसंभवाय नमः स्वाहा । ५५८ । ॐ ह्रीं सुप्रसन्नाय नमः स्वाहा । ५५९ । ॐ ह्रीं गुणांभोधये नमः स्वाहा । ५६० । ॐ ह्रीं पुण्यापुण्यविरोधकाय नमः स्वाहा । ५६१ । ॐ ह्रीं सुसंवृताय

---

१ —हस्तलिखित कापी में 'चणाय' ऐसा पाठ है ।

मार्गदर्शक : नमः स्वाहा । ५६२ । ॐ ह्रीं सुगुप्तात्मने नमः स्वाहा । ५६३ । ॐ ह्रीं सिद्धात्मने नमः स्वाहा । ५६४ । ॐ ह्रीं निरुपप्लवाय नमः स्वाहा । ५६५ । ॐ ह्रीं महोदर्काय नमः स्वाहा । ५६६ । ॐ ह्रीं महोपायाय नमः स्वाहा । ५६७ । ॐ ह्रीं जगदेकपितामहाय नमः स्वाहा । ५६८ । ॐ ह्रीं महाकारुणिकाय नमः स्वाहा । ५६९ । ॐ ह्रीं गुण्याय नमः स्वाहा । ५७० । ॐ ह्रीं महाक्लेशांकुशाय नमः स्वाहा । ५७१ । ॐ ह्रीं शुचये नमः स्वाहा । ५७२ । ॐ ह्रीं अरिजयाय नमः स्वाहा । ५७३ । ॐ ह्रीं सदायोगाय नमः स्वाहा । ५७४ । ॐ ह्रीं सदाभोगाय नमः स्वाहा । ५७५ । ॐ ह्रीं सदाधृतये नमः स्वाहा । ५७६ । ॐ ह्रीं परमोदासित्रे नमः स्वाहा । ५७७ । ॐ ह्रीं अनायुषे नमः स्वाहा । ५७८ । ॐ ह्रीं सत्याशिषे नमः स्वाहा । ५७९ । ॐ ह्रीं शांतनायकाय नमः स्वाहा । ५८० । ॐ ह्रीं अपूर्ववैद्याय नमः स्वाहा । ५८१ । ॐ ह्रीं योगज्ञाय नमः स्वाहा । ५८२ । ॐ ह्रीं धर्ममूर्तये नमः स्वाहा । ५८३ । ॐ ह्रीं अधर्मदहे नमः स्वाहा । ५८४ । ॐ ह्रीं ब्रह्मेशे नमः स्वाहा । ५८५ । ॐ ह्रीं महाब्रह्मपतये नमः स्वाहा । ५८६ । ॐ ह्रीं कृतकृत्याय नमः स्वाहा । ५८७ । ॐ ह्रीं कृतक्रतवे नमः स्वाहा । ५८८ । ॐ ह्रीं गुणाकराय नमः स्वाहा । ५८९ । ॐ ह्रीं गुणोच्छेदिने नमः स्वाहा । ५९० । ॐ ह्रीं निर्निमेषाय नमः स्वाहा । ५९१ । ॐ ह्रीं निराश्रयाय नमः स्वाहा । ५९२ । ॐ ह्रीं सूरये नमः स्वाहा । ५९३ । ॐ ह्रीं सुनयतत्त्वज्ञाय नमः स्वाहा । ५९४ । ॐ ह्रीं महामैत्रीमयाय नमः स्वाहा । ५९५ । ॐ ह्रीं शमिने नमः स्वाहा । ५९६ । ॐ ह्रीं प्रक्षीणबन्धाय नमः स्वाहा । ५९७ । ॐ ह्रीं निर्द्वन्द्वाय नमः स्वाहा । ५९८ । ॐ ह्रीं परमर्षये नमः स्वाहा । ५९९ । ॐ ह्रीं अनन्तगाय नमः स्वाहा । ६०० ।

ॐ ह्रीं निर्वाणाय नमः स्वाहा । ६०१ । ॐ ह्रीं सागराय नमः स्वाहा । ६०२ । ॐ ह्रीं महासाधवे नमः स्वाहा । ६०३ । ॐ ह्रीं विमलाभाय नमः स्वाहा । ६०४ । ॐ ह्रीं शुद्धाभाय नमः स्वाहा । ६०५ । ॐ ह्रीं श्रीधराय नमः स्वाहा । ६०६ । ॐ ह्रीं दत्ताय नमः स्वाहा । ६०७ । ॐ ह्रीं अमलाभाय नमः स्वाहा । ६०८ । ॐ ह्रीं उद्धराय नमः

---

१ —सुखीभूतः, कामवाणरहितः, निरस्वितो वन निवासोयस्य स जिनकल्पित्वात् । २— सालक्ष्मी गरः विषसदृशी यस्य, सगरो धरणेन्द्रस्तेनोत्संगे धृतः, लक्ष्म्योपलक्षितोऽगः— मेरुस्तराति गृह्णाति, सागा दरिद्रास्तान् राति । ३—विमला-कर्ममलरहिता आभा यस्य, वि-विशिष्टा मा-लक्ष्मीर्यत्र स एवभूतो रहिता आ समंतात् मा—दीप्तिर्यस्य स

स्वाहा । ६०९ । ॐ ह्रीं अग्नये नमः स्वाहा । ६१० । ॐ ह्रीं संयमाय नमः स्वाहा । ६११ । ॐ ह्रीं शिवाय नमः स्वाहा । ६१२ । ॐ ह्रीं पुष्पांजलये नमः स्वाहा । ६१३ । ॐ ह्रीं शिवगणाय नमः स्वाहा । ६१४ । ॐ ह्रीं उत्साहाय नमः स्वाहा । ६१५ । ॐ ह्रीं ज्ञानसंज्ञकाय नमः स्वाहा । ६१६ । ॐ ह्रीं परमेश्वराय नमः स्वाहा । ६१७ । ॐ ह्रीं विमलेशाय नमः स्वाहा । ६१८ । ॐ ह्रीं यशोधराय नमः स्वाहा । ६१९ । ॐ ह्रीं कृष्णाय नमः स्वाहा । ६२० । ॐ ह्रीं ज्ञानमतये नमः स्वाहा । ६२१ । ॐ ह्रीं शुद्धमतये नमः स्वाहा । ६२२ । ॐ ह्रीं श्रीभद्राय नमः स्वाहा । ६२३ । ॐ ह्रीं शान्ताय नमः स्वाहा । ६२४ । ॐ ह्रीं वृषभाय नमः स्वाहा । ६२५ । ॐ ह्रीं अजिताय नमः स्वाहा । ६२६ । ॐ ह्रीं संभवाय नमः स्वाहा । ६२७ । ॐ ह्रीं अभिनन्दनाय नमः स्वाहा । ६२८ । ॐ ह्रीं सुमतये नमः स्वाहा । ६२९ । ॐ ह्रीं पद्मप्रभाय नमः स्वाहा । ६३० । ॐ ह्रीं सुपार्श्वाय नमः स्वाहा । ६३१ । ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभाय नमः स्वाहा । ६३२ । ॐ ह्रीं पुष्पदन्ताय नमः स्वाहा । ६३३ । ॐ ह्रीं शीतलाय नमः स्वाहा । ६३४ । ॐ ह्रीं श्रेयसे नमः स्वाहा । ६३५ । ॐ ह्रीं वासुपूज्याय नमः स्वाहा । ६३६ । ॐ ह्रीं विमलाय नमः स्वाहा । ६३७ । ॐ ह्रीं अनन्तजिते नमः स्वाहा । ६३८ । ॐ ह्रीं धर्माय नमः स्वाहा । ६३९ । ॐ ह्रीं शांतये नमः स्वाहा । ६४० । ॐ ह्रीं कुंथवे नमः स्वाहा । ६४१ । ॐ ह्रीं अराय नमः स्वाहा । ६४२ । ॐ ह्रीं मल्लये नमः स्वाहा । ६४३ । ॐ ह्रीं सुव्रताय नमः स्वाहा । ६४४ । ॐ ह्रीं नमये नमः स्वाहा । ६४५ । ॐ ह्रीं नेमये नमः स्वाहा । ६४६ । ॐ ह्रीं पार्श्वाय नमः स्वाहा । ६४७ । ॐ ह्रीं वर्धमानाय नमः स्वाहा । ६४८ । ॐ ह्रीं महावीराय नमः स्वाहा । ६४९ । ॐ ह्रीं वीराय नमः स्वाहा । ६५० । ॐ ह्रीं सन्मतये नमः स्वाहा । ६५१ । ॐ ह्रीं महतिमहावीराय नमः स्वाहा । ६५२ । ॐ ह्रीं महापद्माय नमः स्वाहा । ६५३ । ॐ ह्रीं सूरदेवाय नमः स्वाहा । ६५४ । ॐ ह्रीं सुप्रभाय नमः स्वाहा । ६५५ । ॐ ह्रीं स्वयंप्रभाय

१—अविद्यमानः मलस्य-पापस्याभा-अंशोपियस्य, अमा दीनारतेषां लाभो यस्मात्, अमान्-निर्ग्रंथान् मुनीनूलाति-स्वीकुर्वन्ति तैर्गणधरैर्योयाति-शोभते । २—अंगति-ऊर्ध्वंव्रजतीति अग्निः । ३-पुष्पवत्-कमलवत् अंजलिः-इन्द्रादीनां करसंपुटो यं प्रति स, पुष्पाणामंजलयः यस्मिन्--द्वादशयोजनप्रमाणपुष्पवृष्टिः ४—कर्षति-घातिकर्माणि मूलादुन्मूलयति । ५—स-समीचीनो भावो-जन्म यस्य, शम्भव इत्यपि पाठस्तत्र स सुखंभवति यस्मात् इति । ६—योमंत्र ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्याय नमः इति मंत्रेण सुष्ठु पूज्यः ।

नमः स्वाहा । ६५६ । ॐ ह्रीं सर्वायुधाय नमः स्वाहा । ६५७ । ॐ ह्रीं जयदेवाय नमः स्वाहा । ६५८ । ॐ ह्रीं उदयदेवाय नमः स्वाहा । ६५९ । ॐ ह्रीं प्रभादेवाय नमः स्वाहा । ६६० । ॐ ह्रीं उदकाय नमः स्वाहा । ६६१ । ॐ ह्रीं प्रश्नकीर्तये नमः स्वाहा । ६६२ । ॐ ह्रीं जयाय नमः स्वाहा । ६६३ । ॐ ह्रीं पूर्णबुद्धये नमः स्वाहा । ६६४ । ॐ ह्रीं निःकषायाय नमः स्वाहा । ६६५ । ॐ ह्रीं विमलप्रभाय नमः स्वाहा । ६६६ । ॐ ह्रीं वहलाय नमः स्वाहा । ६६७ । ॐ ह्रीं निर्मलाय नमः स्वाहा । ६६८ । ॐ ह्रीं चित्रगुप्ताय नमः स्वाहा । ६६९ । ॐ ह्रीं समाधिगुप्ताय नमः स्वाहा । ६७० । ॐ ह्रीं स्वयंभुवे नमः स्वाहा । ६७१ । ॐ ह्रीं कन्दर्पाय नमः स्वाहा । ६७२ । ॐ ह्रीं जयनाथाय नमः स्वाहा । ६७३ । ॐ ह्रीं श्रीविमलाय नमः स्वाहा । ६७४ । ॐ ह्रीं दिव्यवादाय नमः स्वाहा । ६७५ । ॐ ह्रीं अनन्तवीराय नमः स्वाहा । ६७६ । ॐ ह्रीं पुरुदेवाय नमः स्वाहा । ६७७ । ॐ ह्रीं सुविधये नमः स्वाहा । ६७८ । ॐ ह्रीं प्रज्ञापारमिताय नमः स्वाहा । ६७९ । ॐ ह्रीं अव्ययाय नमः स्वाहा । ६८० । ॐ ह्रीं पुराणपुरुषाय नमः स्वाहा । ६८१ । ॐ ह्रीं धर्मसारथये नमः स्वाहा । ६८२ । ॐ ह्रीं शिवकीर्तनाय नमः स्वाहा । ६८३ । ॐ ह्रीं विश्वकर्मणे नमः स्वाहा । ६८४ । ॐ ह्रीं अक्षराय नमः स्वाहा । ६८५ । ॐ ह्रीं अच्छद्मने नमः स्वाहा । ६८६ । ॐ ह्रीं विश्वभुवे नमः स्वाहा । ६८७ । ॐ ह्रीं विश्वनायकाय नमः स्वाहा । ६८८ । ॐ ह्रीं दिगम्बराय नमः स्वाहा । ६८९ । ॐ ह्रीं निरातंकाय नमः स्वाहा । ६९० । ॐ ह्रीं निरारेकाय नमः स्वाहा । ६९१ । ॐ ह्रीं भवान्तकाय नमः स्वाहा । ६९२ । ॐ ह्रीं दृढव्रताय नमः स्वाहा । ६९३ । ॐ ह्रीं नयोत्तुंगाय नमः स्वाहा । ६९४ । ॐ ह्रीं निःकलंकाय नमः स्वाहा । ६९५ । ॐ ह्रीं अकलाधराय नमः स्वाहा । ६९६ । ॐ ह्रीं सर्वक्लेशापहाय नमः स्वाहा । ६९७ । ॐ ह्रीं अक्षय्याय नमः स्वाहा

---

१ —कुथति-तपःकरोतीति कुंथुः । २ —अरति-लोकालोकं जानाति इयति-त्रैलोक्यशिखरमारोहतीति अर्यतेऽर्थिभिः प्राप्यते इतिवाअरः । धर्मरथप्रवृत्तिहेतुत्वादरश्चक्रांगभूतोवा । ३—मल्लते-भव्यजीवन धारयति, मोक्षे स्थापयतीतिवा मल्लिः । देवेंद्रादिभिर्मल्ल्यते-धार्यते इतिवा । ४-नम्यते देवेन्द्राभिरिति नमिः । ५-मस्य-मलस्य पापस्य वा हृतिविध्वंसनतत्र महावीरः-महासुभटः । ६-सुराणां देवः आराध्यः शूरदेव इत्यपि पाठः । ७ —वह स्कन्धदेशंलाति-ददाति इतिबहलः-संयमभारोद्धरणे शक्तः । बहति मोक्षं प्रापयति इतिव ।

६९८। ॐ ह्रीं क्षान्ताय नमः स्वाहा। ६९९। ॐ ह्रीं श्रीवृक्षलक्षणाय नमः स्वाहा। ७००।

ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः स्वाहा। ७०१। ॐ ह्रीं चतुर्मुखाय नमः स्वाहा। ७०२। ॐ ह्रीं धात्रे नमः स्वाहा। ७०३। ॐ ह्रीं विधात्रे नमः स्वाहा। ७०४। ॐ ह्रीं कमलासनाय नमः स्वाहा। ७०५। ॐ ह्रीं अब्जभुवे नमः स्वाहा। ७०६। ॐ ह्रीं आत्मभुवे नमः स्वाहा। ७०७। ॐ ह्रीं स्त्रष्ट्रे नमः स्वाहा। ७०८। ॐ ह्रीं सुरज्येष्ठाय नमः स्वाहा। ७०९। ॐ ह्रीं प्रजापतये नमः स्वाहा। ७१०। ॐ ह्रीं हिरण्यागर्भाय नमः स्वाहा। ७११। ॐ ह्रीं वेदज्ञाय नमः स्वाहा। ७१२। ॐ ह्रीं वेदांगाय नमः स्वाहा। ७१३। ॐ ह्रीं वेदपारगाय नमः स्वाहा। ७१४। ॐ ह्रीं अजाय नमः स्वाहा। ७१५। ॐ ह्रीं मनवे नमः स्वाहा। ७१६। ॐ ह्रीं शतानन्दाय नमः स्वाहा। ७१७। ॐ ह्रीं हंसयानाय नमः स्वाहा। ७१८। ॐ ह्रीं त्रयीमयाय नमः स्वाहा। ७१९। ॐ ह्रीं विष्णवे नमः स्वाहा। ७२०। ॐ ह्रीं त्रिविक्रमाय नमः स्वाहा। ७२१। ॐ ह्रीं सौरये नमः स्वाहा। ७२२। ॐ ह्रीं श्रीपतये नमः स्वाहा। ७२३। ॐ ह्रीं पुरुषोत्तमाय नमः स्वाहा। ७२४। ॐ ह्रीं वैकुंठाय नमः स्वाहा। ७२५। ॐ ह्रीं पुंडरीकाक्षाय नमः स्वाहा। ७२६। ॐ ह्रीं हृषीकेशाय नमः स्वाहा। ७२७। ॐ ह्रीं हरये नमः स्वाहा। ७२८। ॐ ह्रीं स्वभुवे नमः स्वाहा। ७२९। ॐ ह्रीं विश्वंभराय नमः स्वाहा। ७३०। ॐ ह्रीं असुरध्वंसिने नमः स्वाहा। ७३१। ॐ ह्रीं माधवाय नमः स्वाहा। ७३२। ॐ ह्रीं बलिबंधनाय नमः स्वाहा। ७३३। ॐ ह्रीं अधोक्षजाय नमः स्वाहा। ७३४। ॐ ह्रीं मधुद्वेषिणे नमः स्वाहा

मार्गदर्शक — आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

१—चित्रवत्-आकाशवत् गुप्तः-अलक्ष्यः। चित्राः-विचित्राः-मुनीनामप्याश्चर्यकारिण्योगुप्तयो यस्य सा। चित्रं-तिलकदानं प्रतिष्ठावसरे गुप्तं-गुरूपदेशप्राप्यं यस्य स, चित्रा आश्चर्यंकरा गुप्तयः सवसरणंत्रिस्त्रः प्राकारा यस्य स इति वा। २—दिव्य-अमानुषः वादो ध्वनिर्यस्य, दिव्या-देवानामपि वा-वेदना द्यति-खण्डयति, दिव्यं वा मंत्रददाति-इति वा दिव्यवादः। ३—पुरुर्महान् देवानामप्याराध्यो देवः, पुरवः-प्रचुरा देवा यस्य-असख्यातदेवसेवितः, पुरोः-स्वर्गस्यदेवः इति वा। ४—धर्मस्याहिंसालक्षणस्य सारथिः-प्रवर्तकः, धर्माणां मध्ये सारः-उत्कृष्टस्तत्र तिष्ठति स्थाधातोःसकारलोपः कि प्रत्ययश्च। ५—विश्वं कृच्छं कष्टमेव कर्म यस्य मते, विश्वेषु-देवविशेषेसु कर्म-सेवा यस्य, विश्वस्मिन्-कर्म शोकतीवनकरी क्रिया यस्येति वा। ६—विश्वस्मिन्भवति-विश्वभूः। "सत्तायां बृद्धो निवासे व्याप्तिसम्पदोः। अभिप्राये च शक्तौच प्रादुर्भावे मतौ च भूः"

। ७३५ । ॐ ह्रीं केशवाय नमः स्वाहा । ७३६ । ॐ ह्रीं विष्टरश्रवसे नमः स्वाहा । ७३७ । ॐ ह्रीं श्रीवत्सलांछनाय नमः स्वाहा । ७३८ । ॐ ह्रीं श्रीमते नमः स्वाहा । ७३९ । ॐ ह्रीं अच्युताय नमः स्वाहा । ७४० । ॐ ह्रीं नरकांतकाय नमः स्वाहा । ७४१ । ॐ ह्रीं विश्वक्सेनाय नमः स्वाहा । ७४२ । ॐ ह्रीं चक्रपाणये नमः स्वाहा । ८४३ । ॐ ह्रीं पद्मनाभाय नमः स्वाहा । ७४४ । ॐ ह्रीं जनार्दनाय नमः स्वाहा । ७४५ । ॐ ह्रीं श्रीकंठाय नमः स्वाहा । ७४६ । ॐ ह्रीं शंकराय नमः स्वाहा । ७४७ । ॐ ह्रीं शंभवे नमः स्वाहा । ७४८ । ॐ ह्रीं कपालिने नमः स्वाहा । ७४९ । ॐ ह्रीं वृषकेतनाय नमः स्वाहा । ७५० । ॐ ह्रीं मृत्युंजयाय नमः स्वाहा । ७५१ । ॐ ह्रीं विरूपाक्षाय नमः स्वाहा । ७५२ । ॐ ह्रीं वामदेवाय नमः स्वाहा । ७५३ । ॐ ह्रीं त्रिलोचनाय नमः स्वाहा । ७५४ । ॐ ह्रीं उमापतये नमः स्वाहा । ७५५ । ॐ ह्रीं पशुपतये नमः स्वाहा । ७५६ । ॐ ह्रीं स्मरारये नमः स्वाहा । ७५७ । ॐ ह्रीं त्रिपुरांकाय नमः स्वाहा । ७५८ । ॐ ह्रीं अर्धनारीश्वराय नमः स्वाहा । ७५९ । ॐ ह्रीं रुद्राय नमः स्वाहा । ७३० । ॐ ह्रीं भवाय नमः स्वाहा । ७६१ । ॐ ह्रीं भर्गाय नमः स्वाहा । ७६२ । ॐ ह्रीं सदाशिवाय नमः स्वाहा । ७६३ । ॐ ह्रीं जगत्कर्त्रे नमः स्वाहा । ७६४ । ॐ ह्रीं अंधकारातये नमः स्वाहा । ७६५ । ॐ ह्रीं अनादिनिधनाय नमः स्वाहा । ७६६ । ॐ ह्रीं हराय नमः स्वाहा । ७६७ । ॐ ह्रीं महासेनाय नमः स्वाहा । ७६८ । ॐ ह्रीं तारकजिते नमः स्वाहा । ७६९ । ॐ ह्रीं गणनाथाय नमः स्वाहा । ७७० । ॐ ह्रीं विनायकाय नमः स्वाहा । ७७१ । ॐ ह्रीं विरोचनाय नमः स्वाहा । ७७२ । ॐ ह्रीं वियद्रत्नाय नमः स्वाहा । ७७३ । ॐ ह्रीं द्वादशात्मने नमः स्वाहा । ७७४ । ॐ ह्रीं विभावसवे नमः स्वाहा । ७७५ । ॐ ह्रीं द्विजाराध्याय नमः स्वाहा । ७७६ । ॐ ह्रीं बृहद्भानये नमः स्वाहा । ७७७ । ॐ ह्रीं चित्रभानवे नमः स्वाहा । ७७८ । ॐ ह्रीं तनूनपाते नमः स्वाहा । ७७९ । ॐ ह्रीं द्विजराजाय नमः स्वाहा । ७८० ।

१—न कला धारयतिः केनापि यः कलयितुं न शक्यः । अक-दुःख लाति ददाति-अकलः-संसार तं न धरति अकल. संसारो-अधरो नीचो यस्य, न कलं-शरीरम् आ समतात् धरति, न कला-चन्द्रकलाशिरसि धरति । २—अब्जैः-कमलैरुपलक्षिता भू-जंन्म भूमिर्यस्य, मातुरुदरे योनिमध्यास्पृष्टवा अष्टदलकमलकर्णिकायां नवमासात् स्थित्वा बृद्धिंगत इति अब्जभू, अब्जस्य,-चन्द्रस्य भूः स्थानं, अब्जस्य-धन्वन्तरे भूः स्थानमायुर्वेदगुरुत्वात् । ३ हंसे-परमात्मनि यानं-गमनं यस्य, हंसैः-श्रेष्ठैः सह यानं-विहारो यस्य, हंसः सूर्यस्तद्वत् यान विहारोयस्य, हंसवत्-मंदं गमनं यस्य ।

ॐ ह्रीं सुधाशोचये नमः स्वाहा । ७८१ । ॐ ह्रीं औषधीशाय नमः स्वाहा । ७८२ । ॐ ह्रीं कलानिधये नमः स्वाहा । ७८३ । ॐ ह्रीं नक्षत्रनाथाय नमः स्वाहा । ७८४ । ॐ ह्रीं शुभ्रांशवे नमः स्वाहा । ७८५ । ॐ ह्रीं सोमाय नमः स्वाहा । ७८६ । ॐ ह्रीं कुमुदबांधवाय नमः स्वाहा । ७८७ । ॐ ह्रीं लेखर्षभाय नमः स्वाहा । ७८८ । ॐ ह्रीं अनिलाय नमः स्वाहा । ७८९ । ॐ ह्रीं पुण्यजनाय नमः स्वाहा । ७९० । ॐ ह्रीं पुण्यजनेश्वराय नमः स्वाहा । ७९१ । ॐ ह्रीं धर्मराजाय नमः स्वाहा । ७९२ । ॐ ह्रीं भोगिराजाय नमः स्वाहा । ७९३ । ॐ ह्रीं प्रचेतसे नमः स्वाहा । ७९४ । ॐ ह्रीं भूमिनन्दनाय नमः स्वाहा । ७९५ । ॐ ह्रीं सिंहिकातनयाय नमः स्वाहा । ७९६ । ॐ ह्रीं छायानन्दनाय नमः स्वाहा । ७९७ । ॐ ह्रीं बृहतांपतये नमः स्वाहा । ७९८ । ॐ ह्रीं पूर्वदेवोपदेष्ट्रे नमः स्वाहा । ७९९ । ॐ ह्रीं द्विजराजसमुद्भवाय नमः स्वाहा । ८०० ।

ॐ ह्रीं बुद्धाय नमः स्वाहा । ८०१ । ॐ ह्रीं दशबलाय नमः स्वाहा । ८९२ । ॐ ह्रीं शाक्याय नमः स्वाहा । ८०३ । ॐ ह्रीं षडभिज्ञाय नमः स्वाहा । ८०४ । ॐ ह्रीं तथागताय नमः स्वाहा । ८०५ । ॐ ह्रीं समन्तभद्राय नमः स्वाहा । ८०६ । ॐ ह्रीं सुगताय नमः स्वाहा । ८०७ । ॐ ह्रीं श्रीघताय नमः स्वाहा । ८०८ । ॐ ह्रीं भूतकोटिदिशे नमः स्वाहा । ८०९ । ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय नमः स्वाहा । ८१० । ॐ ह्रीं मारजिते नमः स्वाहा । ८११ । ॐ ह्रीं शास्त्रे नमः स्वाहा । ८१२ । ॐ ह्रीं क्षणिकैकसुलक्षणाय नमः

सूरस्य-सुभटस्य-क्षत्रियस्यापत्यं सौरिः । २—विकुंठा-तीर्थंकरमाता तस्याअपत्यं, । ३- पुंडरीकवत् अक्षिणी यस्य पुंडरीक-प्रधानभूतः अक्ष आत्मा यस्य । ४—जितेन्द्रियः । ५- असुरीमोहान्तदहसते, असून्-प्राणान् रातिगृह्णाति असुरोयमस्त ध्वंसते । ६—यस्य मते जीवस्य बलेः-कर्मणः बंधनं भवतीति प्रतिपादितम् । बलिनः- बलवत्तरस्य-त्रैलोक्यक्षोभकारिण तीर्थंकरास्योच्चगोत्रकर्मणश्च बधनं यस्य, बलिनं पदेयकरस्तस्य बंधनं-निर्धारणं यस्याबसरे । ७ अक्षजं ज्ञानमधोमस्य । ८—प्रशस्ताकेशा यस्य केशाढ्योऽन्यतरस्यामिति व प्रत्ययः, के-परब्रह्मणि इशते महामुनयस्तेषां वो वासो यत्र । ९—विष्टर इव श्रवसी-कर्णौ यस्य, विस्तरे-सकलश्रुतज्ञाने श्रवसी यस्य । १०—विश्वक्-समन्तात् सेना-द्वादशविधो गणो यस्य, विश्वक्समन्तात् सा-लोकत्रयवर्णिनी लक्ष्मीस्तस्या इनः । ११—चक्रं-लक्षणविशेष उपलक्षणत्वाद्वीन्द्रवृक्षिकादिनि लक्षणानि च पाणौ यस्य: चक्रपाणि.- चक्रा राजानस्तेषामणिःसीमा, चक्रपात् अणति धर्मोपदेश करोति ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

स्वाहा ।८१३। ॐ ह्रीं बोधिसत्त्वाय नमः स्वाहा ।८१४। ॐ ह्रीं निर्विकल्पदर्शनाय नमः स्वाहा ।८१५। ॐ ह्रीं अद्वयवादिने नमः स्वाहा ।८१६। ॐ ह्रीं महाकृपालवे नमः स्वाहा ।८१७। ॐ ह्रीं नैरात्म्यवादिने नमः स्वाहा ।८१८। ॐ ह्रीं संतानशासकाय नमः स्वाहा ।८१९। ॐ ह्रीं सामन्यलक्षणचणाय नमः स्वाहा ।८२०। ॐ ह्रीं पंचस्कन्धमयात्मदृशे नमः स्वाहा ।८२१। ॐ ह्रीं भूतार्थभावनासिद्धाय नमः स्वाहा ।८२२। ॐ ह्रीं चतुर्भूमिकशासनाय नमः स्वाहा ।८२३। ॐ ह्रीं चतुरार्यसत्यवक्त्रे नमः स्वाहा ।८२४। ॐ ह्रीं निराश्रयचिते नमः स्वाहा ।८२५। ॐ ह्रीं अन्वयाय नमः स्वाहा ।८२६। ॐ ह्रीं योगाय नमः स्वाहा ।८२७। ॐ ह्रीं वैशेषिकाय नमः स्वाहा ।८२८। ॐ ह्रीं तुच्छाभावभिदे नमः स्वाहा ।८२९। ॐ ह्रीं षट्पदार्थदृशे नमः स्वाहा ।८३०। ॐ ह्रीं नैयायिकाय ममः स्वाहा ।८३१। ॐ ह्रीं षोडशार्थवादिने नमः स्वाहा ।८३२। ॐ ह्रीं पंचार्थवर्णलाय नमः स्वाहा ।८३३। ॐ ह्रीं ज्ञानान्तराध्यक्षबोधाय नमः स्वाहा ।८३४। ॐ ह्रीं समवायवशार्थभिदे नमः स्वाहा ।८३५। ॐ ह्रीं भुक्तैकसाध्यकर्मान्ताय नमः स्वाहा ।८३६। ॐ ह्रीं निर्विशेषगुणामृताय नमः स्वाहा ।८३७। ॐ ह्रीं सांख्याय नमः स्वाहा ।८३८। ॐ ह्रीं समीक्ष्याय नमः स्वाहा ।८३९। ॐ ह्रीं कपिलाय नमः स्वाहा ।८४०। ॐ ह्रीं पंचविंशतितत्वविदे नमः स्वाहा ।८४१। ॐ ह्रीं व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानिते नमः स्वाहा ।८४२। ॐ ह्रीं ज्ञानचैतन्यभेददृशे नमः स्वाहा ।८४३। ॐ ह्रीं

१—जनात्-जनपदलोकात् अर्दति-संबोधनार्थं गच्छति, जना-भव्या अर्दना मोक्षयाचका यस्य, जनान् अर्दयति-मोक्ष गमयति। २—कम्-आत्मान पालयति, कं ब्रह्मस्वरूपमात्मान पाति-रक्षति संसारवनादितिकपालस्तानासमंतात् लाति-भूषयतीति कपाली। ३—विरूप-सूक्ष्मस्वभावम्-अक्षि-केवलज्ञालक्षणंलोचनं यस्य "सक्थ्यक्ष्णोस्वाङ्गे" इत्यत् प्रत्ययः, विशिष्टरूपे-कीतविश्रांते अक्षिणी यस्य, विरूपः केवलज्ञानगम्यः आत्मा यस्य। विगंरुड़स्तस्य कः; संसार-विषनिषेधक एवंभूतोऽक्षः आत्मा यस्य। ४—वामो-मनोहरो देवः, वामस्य-प्रतिकूलस्य-शत्रोरपिदेव आराध्यः, इत्यादि। ५—त्रयाणांलोकत्रयवर्तिभव्यानां नेत्रस्थानीयः, त्रिपुलोकेषुलोचने-ज्ञानदर्शनरूपे नेत्रे यस्य, जन्मारम्य मतिश्रुतावधिज्ञानानि-त्रीणिलोचनानि यस्य, त्रिषु-मनोवचनकायेषु त्रिकरणशुद्धं वा लोचनं-केशोत्पाटो यस्य, इत्यादि। ६—उमा-कान्तिः कीर्तिश्च अथवा उः—क्षीरसागरो मेरुर्वा तयोर्मा-लक्ष्मीः तस्याःपतिः। ७—पश्यन्तिकर्मबन्धनैरिति पशवः संसारिणो जीवा वा पशवस्तेषांपतिः। ८—त्रिपुरां-जन्मजरामरणरूपाणां पुरामन्तको-विनाशकः, परमौदारिकतैजसकार्मणशरीराणां-मन्तकः, त्रिपुरं-त्रैलोक्यं तस्यांते क आत्मा यस्य।

अस्वसंविदितज्ञानवादिने नमः स्वाहा । ८४४ । ॐ ह्रीं सत्कार्यवादसात् नमः स्वाहा । ८४५ । ॐ ह्रीं त्रिप्रमाणाय नमः स्वाहा । ८४६ । ॐ ह्रीं अध्यक्षप्रमाणाय नमः स्वाहा । ८४७ । ॐ ह्रीं स्याद्वाहंकारिकाक्षदिशे नमः स्वाहा । ८४८ । ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः स्वाहा । ८४९ । ॐ ह्रीं आत्मने नमः स्वाहा । ८५० । ॐ ह्रीं पुरुषाय नमः स्वाहा । ८५१ । ॐ ह्रीं नराय नमः स्वाहा । ८५२ । ॐ ह्रीं न्रे नमः स्वाहा । ८५३ । ॐ ह्रीं चेतनाये नमः स्वाहा । ८५४ । ॐ ह्रीं पुंसे नमः स्वाहा । ८५५ । ॐ ह्रीं अकर्त्रे नमः स्वाहा । ८५६ । ॐ ह्रीं निर्गुणाय नमः स्वाहा । ८५७ । ॐ ह्रीं अमूर्ताय नमः स्वाहा । ८५८ । ॐ ह्रीं भोक्त्रे नमः स्वाहा । ८५९ । ॐ ह्रीं सर्वगताय नमः स्वाहा । ८६० । ॐ ह्रीं अक्रियाय नमः स्वाहा । ८६१ । ॐ ह्रीं द्रष्ट्रे नमः स्वाहा । ८६२ । ॐ ह्रीं तटस्थाय नमः स्वाहा । ८६३ । ॐ ह्रीं कूटस्थाय नमः स्वाहा । ८६४ । ॐ ह्रीं ज्ञात्रे नमः स्वाहा । ८६५ । ॐ ह्रीं निर्बंधनाय नमः स्वाहा । ८६६ । ॐ ह्रीं अभवाय नमः स्वाहा । ८६७ । ॐ ह्रीं बहिर्विकाराय नमः स्वाहा । ८६८ । ॐ ह्रीं निर्मोक्षाय नमः स्वाहा । ८६९ । ॐ ह्रीं प्रधानाय नमः स्वाहा । ८७० । ॐ ह्रीं बहुधानकाय नमः स्वाहा । ८७१ । ॐ ह्रीं प्रकृतये नमः स्वाहा । ८७२ । ॐ ह्रीं ख्यातये नमः स्वाहा । ८७३ । ॐ ह्रीं आरूढप्रकृतये नमः स्वाहा । ८७४ । ॐ ह्रीं प्रकृतिप्रियाय नमः स्वाहा । ८७५ । ॐ ह्रीं प्रधानभोज्याय नमः स्वाहा । ८७६ । ॐ ह्रीं अप्रकृतये नमः स्वाहा । ८७७

१—अर्ह न अरयो घातिकर्माणि यस्य सचासौ ईश्वरः । २—कर्मणां रौद्रमूर्तित्वाद्रौद्रः, आत्मदर्शने सति रोदिति-आनन्दाश्रूणिमुंचति स । ३ - भृज्यंते कामक्रोधादयो येन, बिभर्ति-धारयति पोषयतीति वा भर्गः "स्वमृत्यांगः" इति औणादिकः गप्रत्ययः । ४— सदा-सर्वकालं शिवं परमकल्याणं यस्य, सदा दिवा रात्रौ चाश्नंतिते सदाशिनः तेषां वः समुद्रः-संसारः पतनमितिवचनं यस्य । ५—जगतां कर्ता-मर्यादाकारकः, जगतः कंसुखमियतिजानाति । ६—अंधः-सम्यग्दर्शनरहितः कः स्वरूपं यस्य तत् मोहकर्म तस्यारातिः शत्रुः । ७ —अनंतभवोपार्जितानिपापानि जीवानां हरति, हं-हर्षमनन्तसुखं हारविशेषं राति-ददाति धारयति वा, हृस्य-हिंसायाः रः-निरोधकः । ८—महती-द्वादशलक्षणा सेना यस्य, महस्य-पूजाया आसमंतात् सा-लक्ष्मीस्तस्या इनःस्वामी, महा आस-आसनं तत्र इनः । ९—तारकान्-गणधरादीन् जितवान् तारमत्युच्चैः शब्दं कायति-ध्वनति स मेघोऽथवा सगर्जनः सागरः तान् निजेन ध्वनिना जितवान् । १०—विशिष्टानां गणधरादीनां नायकः । विगतोनायको यस्य । ११—विशिष्टं रोचनंसम्यक्त्वं यस्य, विशिष्टारोचना—मुक्तिस्त्री यस्य, विगतं रोचनं संसारप्रीति-र्यस्य । १२—कर्मेन्धनदहनत्वादग्निः, मोहांधरविनाशितत्वसूर्यः, नेत्रामृतवर्षि त्वाह्लिादकत्वाच्चन्द्रः, केवलज्ञानधन इत्यादि ।

ॐ ह्रीं विरम्याय नमः स्वाहा । ८७८ । ॐ ह्रीं विकृतये नमः स्वाहा । ८७९ । ॐ ह्रीं कृतिने नमः स्वाहा । ८८० । ॐ ह्रीं मीमांसकाय नमः स्वाहा । ८८१ । ॐ ह्रीं अस्तसर्वज्ञाय नमः स्वाहा । ८८२ । ॐ ह्रीं श्रुतिपूताय नमः स्वाहा । ८८३ । ॐ ह्रीं सदोत्सवाय नमः स्वाहा । ८८४ । ॐ ह्रीं परोक्षज्ञानवादिने नमः स्वाहा । ८८५ । ॐ ह्रीं दृष्टपावकाय नमः स्वाहा । ८८६ । ॐ ह्रीं सिद्धकर्मकाय नमः स्वाहा । ८८७ । ॐ ह्रीं चार्वाकाय नमः स्वाहा । ८८८ । ॐ ह्रीं भौतिकज्ञानाय नमः स्वाहा । ८८९ । ॐ ह्रीं भूताभिव्यक्तचेतनाय नमः स्वाहा । ८९० । ॐ ह्रीं प्रत्यक्षैकप्रमाणाय नमः स्वाहा । ८९१ । ॐ ह्रीं अस्तपरलोकाय नमः स्वाहा । ८९२ । ॐ ह्रीं गुरुश्रुतये नमः स्वाहा । ८९३ । ॐ ह्रीं पुरंदरविद्धकर्णाय नमः स्वाहा । ८९४ । ॐ ह्रीं वेदान्तिने नमः स्वाहा । ८९५ । ॐ ह्रीं संविदद्वयिने नमः स्वाहा । ८९६ । ॐ ह्रीं शब्दाद्वैतिने नमः स्वाहा । ८९७ । ॐ ह्रीं स्फोटवादिने नमः स्वाहा । ८९८ । ॐ ह्रीं पाषंडघ्नाय नमः स्वाहा । ८९९ । ॐ ह्रीं नयौघयुजे नमः स्वाहा । ९०० ।

ॐ ह्रीं अन्तकृते नमः स्वाहा । ९०१ । ॐ ह्रीं पारकृते नमः स्वाहा । ९०२ । ॐ ह्रीं तीरप्राप्ताय नमः स्वाहा । ९०३ । ॐ ह्रीं पारेतमःस्थिताय नमः स्वाहा । ९०४ । ॐ ह्रीं त्रिदंडिने नमः स्वाहा । ९०५ । ॐ ह्रीं दंडितारातये नमः स्वाहा । ९०६ । ॐ ह्रीं ज्ञानकर्मसमुच्चयिने नमः स्वाहा । ९०७ । ॐ ह्रीं संहृतध्वनये नमः स्वाहा । ९०८ । ॐ ह्रीं उत्सन्नयोगाय नमः स्वाहा । ९०९ । ॐ ह्रीं सुप्तार्णवोपमाय नमः स्वाहा । ९१० ।

१—बृहत्-महत्तरोभानुः दिनं पुण्यं यस्य, इत्यादि । २—आस्रवयंकारिणो मानव-ज्ञानकिरणा यस्य । ३—तनूं-कायं न पातयति—छद्मस्थावस्थायामनुपवासात् केवलज्ञाने जाते तु आहारमगृहीत्वापि न पातयति । ४—शारीरादिरोगनिवारण समर्थः । दुर्मरणहेतून् श्यति इति वा । ५—सूतेऽमृतं-मोक्षमिति, सूयते मेरुमस्तकेऽभिषिच्यते इति वा सोमः, सा-लक्ष्मी सरस्वती च ताभ्यामुमा कीर्तिर्यस्य, उमया-कान्त्या सहवर्तमानः सोम इतिवा । ६—भव्यकैरवाणामुपकारकः, कुषु-तिसृषु पृथिवीषु मुदा हर्षो येषां ते कुमुदाइन्द्रादयस्तेषामुपकारकः, कुत्सितेकर्मणि मुत् हर्षो येषांते-षामबांधवः । ७—लेहेसु-देवेषु ऋषभः श्रेष्ठः । ८—न विद्यते इला-भूमियस्य त्यक्तराज्यः तनुवातवलये निराधार स्थायी । ९—पुण्या जनाः सेवका यस्य, पुण्यं जनसमतीतिवा । १०—भोगिनामिन्द्राणांचक्रिणां वा राजा । ११—प्रकृष्टं सर्वेषां-दारिद्याादिनाशनपरचेतो यस्य, प्रणष्टचेता-विकल्परहितो वा । १२—भूमी-लोकत्रयवर्तिजनान् नश्यति ।

ॐ ह्रीं योगस्नेहापहाय नमः स्वाहा । ९११ । ॐ ह्रीं योगकिट्टिनिर्लेपनोद्यताय नमः स्वाहा । ९१२ । ॐ ह्रीं स्थितस्थूलवपुर्योगाय नमः स्वाहा । ९१३ । ॐ ह्रीं गीर्मनोयोगकार्श्यकाय नमः स्वाहा । ९१४ । ॐ ह्रीं सूक्ष्मवाक्चित्तयोगस्थाय नमः स्वाहा । ९१५ । ॐ ह्रीं सूक्ष्मीकृतवपुःक्रियाय नमः स्वाहा । ९१६ । ॐ ह्रीं सूक्ष्मकायक्रियास्थायिने नमः स्वाहा । ९१७ । ॐ ह्रीं सूक्ष्मवाक्चित्तयोगघ्ने नमः स्वाहा । ९१८ । ॐ ह्रीं एकदंडिने नमः स्वाहा । ९१९ । ॐ ह्रीं परमहंसाय नमः स्वाहा । ९२० । ॐ ह्रीं परमसंवराय नमः स्वाहा । ९२१ । ॐ ह्रीं नैष्कर्म्यसिद्धाय नमः स्वाहा । ९२२ । ॐ ह्रीं परमनिर्जराय नमः स्वाहा । ९२३ । ॐ ह्रीं प्रज्वलत्प्रभाय नमः स्वाहा । ९२४ । ॐ ह्रीं मोघकर्मणे नमः स्वाहा । ९२५ । ॐ ह्रीं त्रुटत्कर्मपाशाय नमः स्वाहा । ९२६ । ॐ ह्रीं शैलेश्यलंकृताय नमः स्वाहा । ९२७ । ॐ ह्रीं एकाकाररसास्वादाय नमः स्वाहा । ९२८ । ॐ ह्रीं विश्वाकाररसाकुलाय नमः स्वाहा । ९२९ । ॐ ह्रीं अजीवते नमः स्वाहा । ९३० । ॐ ह्रीं अमृताय नमः स्वाहा । ९३१ । ॐ ह्रीं अजाग्रते नमः स्वाहा । ९३२ । ॐ ह्रीं असुप्ताय नमः स्वाहा । ९३३ । ॐ ह्रीं शून्यतामयाय नमः स्वाहा । ९३४ । ॐ ह्रीं प्रेयसे नमः स्वाहा । ९३५ । ॐ ह्रीं अयोगिने नमः स्वाहा । ९३६ । ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षगुणाय नमः स्वाहा । ९३७ । ॐ ह्रीं अगुणाय नमः स्वाहा । ९३८ । ॐ ह्रीं निःपीतानन्तपर्याय नमः स्वाहा । ९३९ । ॐ ह्रीं अविद्यासंस्कारनाशकाय नमः स्वाहा । ९४० । ॐ ह्रीं बृद्धाय नमः

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

---

१ —सिंहिका-तीर्थंकर-जननीस्तस्यास्तनयः । सिंहिकातनयो राहुरिति वा-पापकर्मसु क्रूरत्वात् । २—छायां शोभां नन्दति-वर्धयति, अशोकतरुच्छायायांलोकंनन्दयति । ३— बृहतां-नरेन्द्रसुरेन्द्रमुनीन्द्राणां पतिः । ४—पूर्वदेवानाम्-असुराणामुपदेष्टा-संक्लेशनिषेधकः, पूर्वैश्चतुर्दशसंख्यैः—श्रुतार्थविशेषैरुपदेष्टा, पूर्वं-प्रथमंदेवानामिन्द्रियाणां मुपदेष्टा—तद्विषयनिवर्तकः, गणधराणामुपदेष्टा इतवा । ५—द्विजानां राज्ञां च समुत्-सहर्षो भवोजन्म यस्य,द्विजेपुराजते तानि सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तेभ्यः समुद्भवो यस्य रत्नत्रययोनिः-अयोनिसंभवः । ६—दशानां धर्मणांकुत्तमक्षमादीनां दलं यस्य, दः—दया बोधस्वतेन शबलः-समर्थः । ७—शक्नोतीति शकः-तीर्थंकरपिता तस्यापत्यम्, शम्-अरामुखम् आकः केवलज्ञानतयोनियुक्तः । ८—षट्-द्रव्यसंज्ञान् अभितो जानति । ९—तथा-सत्यभूतं गतं-ज्ञानं यस्य । १०—भूताना कोटीः दिशति, भूतानामतीतभवांतराणां कोटीः दिशति, भूतान्-जीवान् कोटयतिकुटिलान् कुर्वन्ति-मिथ्यात्वं कारयति ते जैमिनिकपिलादयस्तान् दिशति, भूतकोटीनां विश्रामस्थानं, भूतानां-जीवानां कोटी-परमप्रकर्षं गुणातिशयंदिशति ।

स्वाहा ।९४१। ॐ ह्रीं निर्वचनीयाय नमः स्वाहा ।९४२। ॐ ह्रीं अणवे नमः स्वाहा ।९४३। ॐ ह्रीं अणीयसे नमः स्वाहा ।९४४। ॐ ह्रीं अनणुप्रियाय नमः स्वाहा ।९४५। ॐ ह्रीं प्रेष्ठाय नमः स्वाहा ।९४६। ॐ ह्रीं स्थेयसे नमः स्वाहा ।९४७। ॐ ह्रीं स्थिराय नमः स्वाहा ।९४८। ॐ ह्रीं निष्ठाय नमः स्वाहा ।९४९। ॐ ह्रीं श्रेष्ठाय नमः स्वाहा ।९५०। ॐ ह्रीं ज्येष्टाय नमः स्वाहा ।९५१। ॐ ह्रीं सुनिष्ठिताय नमः स्वाहा ।९५२। ॐ ह्रीं भूतार्थशूराय नमः स्वाहा ।९५३। ॐ ह्रीं भूतार्थदूराय नमः स्वाहा ।९५४। ॐ ह्रीं परमनिर्गुणाय नमः स्वाहा ।९५५। ॐ ह्रीं व्यवहारसुषुप्ताय नमः स्वाहा ।९५६। ॐ ह्रीं अतिजागरूकाक नमः स्वाहा ।९५७। ॐ ह्रीं अतिसुस्थिताय नमः स्वाहा ।९५८। ॐ ह्रीं उदितोदितमाहात्म्याय नमः स्वाहा ।९५९। ॐ ह्रीं निरुपाधये नमः स्वाहा ।९६०। ॐ ह्रीं अकृत्रिमाय नमः स्वाहा ।९६१। ॐ ह्रीं अमेय-महिम्ने नमः स्वाहा ।९६२। ॐ ह्रीं अत्यन्तशुद्धाय नमः स्वाहा ।९६३। ॐ ह्रीं सिद्धिस्वयंवराय नमः स्वाहा ।९६४। ॐ ह्रीं सिद्धानुजाय नमः स्वाहा ।९६५। ॐ ह्रीं सिद्धपुरीपांथाय नमः स्वाहा ।९६६। ॐ ह्रीं सिद्धगणातिथये नमः स्वाहा ।९६७। ॐ ह्रीं सिद्धसगोन्मुखाय नमः स्वाहा ।९६८। ॐ ह्रीं सिद्धालिग्याय नमः स्वाहा ।९६९। ॐ ह्रीं सिद्धोपगूहकाय नमः स्वाहा ।९७०। ॐ ह्रीं पुष्टाय नमः स्वाहा ।९७१। ॐ अष्टादशसहस्त्रशीलाश्वाय नमः स्वाहा ।९७२। ॐ ह्रीं पुण्यसंवलाय नमः स्वाहा ।९७३। ॐ ह्रीं व्रताग्रधुर्याय नमः स्वाहा ।९७४। ॐ ह्रीं परमशुक्ललेश्याय नमः स्वाहा ।९७५। ॐ ह्रीं अपचारकृते नमः स्वाहा ।९७६। ॐ ह्रीं क्षेपिष्ठाय नमः स्वाहा ।९७६। ॐ ह्रीं

१—सर्वे पदार्था एकस्मिन् क्षणे उत्पादव्ययध्रौव्यलक्षणेनयुक्ताः क्षणिकास्त्र इति मतं यस्य, क्षणिकं एकमद्वितीयं शोभनं लक्षणं यस्येतिवा। २—निर्विकल्पं दर्शनं यस्य, निर्विकल्पानि दर्शनानि-अपर-मतानि यस्य। ३—मोक्षप्राप्तये रागद्वेषयोर्द्वयं न ददाति, बंधमोक्षावितिद्वेषौ कर्मात्मानौ शुभाशुभौ, इति द्वैताश्रितावुद्धिरसिद्धिरभिधीयते"। ४—नीरस्य-जलस्य भावो नैरं-तत्र उपलक्षणात्सर्वावरेषु शक्तिरूपतया केवलज्ञानादिलक्षण आत्मास्ति-इति वदतीति। ५—अनादि संतानवान् जीव इति शास्ति। ६—निश्चयनयेन सामान्यलक्षणोंचणः—निचक्षणः। ७—अनुपृष्ठतोलग्नः अयः पुण्यं यस्य। ८—ध्यानयोगात् मनोवाक्काययोगः, याः सूर्यचन्द्रादयः उः शंकर एते यं गच्छन्तिइतिवा। ९—विशेषेण-केवलज्ञानेन (ऐन्द्रियज्ञानस्यसामान्यात्मकत्वात्) संसृष्टो भगवान् वैशेषिकः। १०—न्याये-स्याद्वादे नियुक्तः।

क्षेपिष्ठाय नमः स्वाहा । ९७७ । ॐ ह्रीं अन्त्यक्षणसखाय नमः स्वाहा । ९७८ । ॐ ह्रीं पंचलघ्वक्षरस्थितये नमः स्वाहा । ९७९ । ॐ ह्रीं द्विसप्ततिप्रकृत्यासिने नमः स्वाहा । ९८० । ॐ ह्रीं त्रयोदशकलिप्रणुते नमः स्वाहा । ९८१ । ॐ ह्रीं अवेदाय नमः स्वाहा । ९८२ । ॐ ह्रीं अयाजकाय नमः स्वाहा । ९८३ । ॐ ह्रीं अयज्याय नमः स्वाहा । ९८४ । ॐ ह्रीं अयाज्याय नमः स्वाहा । ९८५ । ॐ ह्रीं अनग्निपरिग्रहाय नमः स्वाहा । ९८६ । ॐ ह्रीं अनग्निहोत्रिणे नमः स्वाहा । ९८७ । ॐ ह्रीं परमनिःस्पृहाय नमः स्वाहा । ९८८ । ॐ ह्रीं अत्यन्तनिर्दयाय नमः स्वाहा । ९८९ । ॐ ह्रीं अशिष्याय नमः स्वाहा । ९९० । ॐ ह्रीं अशासकाय नमः स्वाहा । ९९१ । ॐ ह्रीं अदीक्ष्याय नमः स्वाहा । ९९२ । ॐ ह्रीं अदीक्षकाय नमः स्वाहा । ९९३ । ॐ ह्रीं अदीक्षिताय नमः स्वाहा । ९९४ । ॐ ह्रीं अक्षमाय नमः स्वाहा । ९९५ । ॐ ह्रीं अगम्याय नमः स्वाहा । ९९६ । ॐ ह्रीं अगमकाय नमः स्वाहा । ९९७ । ॐ ह्रीं अरम्याय नमः स्वाहा । ९९८ । ॐ ह्रीं अरमकाय नमः स्वाहा । ९९९ । ॐ ह्रीं ज्ञाननिर्भराय नमः स्वाहा । १००० ।

१—दर्शनविशुद्ध्यादीन् षोडशार्थान् यो वदति । २—कुंदादिकः शुभ्रः नीलमण्यादिः कृष्णः बन्धूकपुष्पादी रक्तः प्रियंगुपरिणतादिर्नीलः सतप्तकनकश्च पञ्चमोऽर्थ इति पंचार्थैः समानो वर्णो यस्य, पंचानामर्थानामस्तिकायानां वर्णकः प्रतिपादकः, पंचानां नैयायिकादिमिथ्यादर्शनानामविदर्णकः । ३—भुक्तेन—अनुभवनेन एकेन—अद्वितीयेन साध्यः कर्मणामन्तः स्वभावो यस्य । यद्वा अनादौ संसारे कर्मफलं भुंजानो जीवः कदाचित्सामग्रीविशेषं प्राप्य कर्मणामन्तं करोतीति मतं यस्य । ४—तीर्थंकराणामन्येषांचकेवलिनां निर्विशेषा गुणाएव अमृतं यस्य जरामरणादिनिवारकत्वात् । ५—संख्यायांनियुक्तः सांख्यः "स सांख्यो य प्रसंख्यावान्" इति निरुक्तिः संख्याते प्रथमोमध्यमोऽन्त्यो भगवानेव । ६—सम्यक्—ईक्षितुं योग्यः, समिनामीक्ष्य इति वा । ७—कपिरिव कपिः-मनोमर्कट—स्तं लाति—कषायेषुगच्छन्तं निश्चलीकरोति यः, कं—परमंब्रह्मस्वरूपमपिलाति गृह्णाति इति वा अपेरलोपः । ८—अहिंसादिमहाव्रतेषुप्रत्येकस्यपंचरइति मिलिताः पंचविंशतिभावनाः, त्रयोदशक्रियाः (षडावश्यकानि पञ्च नमस्कारा निसही असहीचेति) द्वादश तपांसि इतिवा, तासां पंचविंशतिक्रियाणां वा यः तत्वं वेत्ति । ९—व्यक्ताः संसारिणः अव्यक्ताः केवलज्ञानगम्याः ज्ञा जीवास्तेषां विशिष्टं ज्ञानं यस्य । १०—चेतना त्रिविधा—ज्ञानकर्मकर्मफलभेदात्, तत्र ज्ञानस्य चैतन्यस्यच यः भेदं पश्यति, उभयत्रसामान्यविशेषादिकृतं भेदं यः पश्यतीत्यादि वा । ११—न स्वो विदितो येन (निर्विकल्पसमाधिदशापन्नेनज्ञानेन) एवंभूतं ज्ञानं यः वदति ।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धाय नमः स्वाहा ।१००१। ॐ ह्रीं आभीक्ष्णज्ञानोपयोगाय नमः स्वाहा ।१००२। ॐ ह्रीं व्यावृत्तिरूपाय नमः स्वाहा ।१००३। ॐ ह्रीं साधुसमाधये नमः स्वाहा ।१००४। ॐ ह्रीं सन्मार्गप्रभावकाय नमः स्वाहा ।१००५। ॐ ह्रीं उत्तमक्षमारूपाय नमः स्वाहा ।१००६। ॐ ह्रीं मार्दवाय नमः स्वाहा ।१००७। ॐ ह्रीं आर्जवाय नमः स्वाहा ।१००८। ॐ ह्रीं शुचिस्वरूपाय नमः स्वाहा ।१००९। ॐ ह्रीं

१—सत् समीचिनं कार्यं-संवरादि लक्षणं तस्य वादः शास्त्रं यस्य । असत्कार्यवादः सन् सत्कार्यवादोभवतीति सत्कार्यवादसत् भगवान् । सात् प्रत्ययान्तत्वेनाव्ययत्वम् । २—स्याद्वाद्हंकारिकमक्षमात्मानं प्र विशति । ([illegible] ज्ञानेन वेद्यं अक्षं या विशति ।) ३—पुरुणि-महति-इन्द्रादिपूतिते पदे शेते । ४—नृणातिनयंकरोति, न राति-न किमपि गृह्णति प्रतिहार्येष्वपि निरतत्वात् न राः-रमणीया । ५—नयति-समर्थतया भव्य जीवं मोक्षमिति ना । ६—निश्चितोमोक्षोयस्य-स्तब्दव एव मोक्ष्यमाणः । ७-मह-प्रचुरिजंरोपलक्षितं ध्यानकं शुक्लध्यानम् तद्योगात् भगवानपि तथोच्यते, बहुप्रकारा आनकाः पटहा यत्र समवसरणे, तद्योगाद्भगवानपि तथा, इत्यादि ।

१—प्रकृष्टा-त्रैलोकहितकारिणी कृतिः तीर्थप्रवर्तनं यस्येयादि । २— ख्यानं कथनं-यथावत्तत्वस्वरूपणं ख्यातिः, आविष्टलिंगमिदं नाम । ३—आ समंतात् रूढा-त्रिभुवन प्रसिद्धा प्रकृतिः-तीर्थंकरनाकर्म यस्य । ४—प्रकृत्या-स्वभावेन प्रियः, प्रकृतीनां प्रियः,-त्रिजगद्वल्लभः । ५—प्रकृष्टं धानमेकाग्रचिंतनं भोज्यमास्वाद्यं यस्य । ६—दुष्टानां त्रिषष्ठिप्रकृतीनांप्रक्षयात् अघातिप्रकृतीनां च सत्वेऽप्यसमर्थत्वात् सर्वेषां प्रभुत्वाद्वा भगवानप्रकृतिः । ७—विशेषेण रम्यः । ८—विशिष्टा कृतिर्यस्य, विनष्टा कृतिः कर्म यस्येति वा कृतकृत्य इत्यर्थः । ९—स्वसमयपरसमयतत्वानि मीमांसते इति मीमासकः (षड्द्रव्याणि पंचास्तिकायाः सप्ततत्वानि नवपदार्था इतिस्वसमयतत्वानि, नैयायिकमते प्रमाणप्रमेयादिषोडशसत्वानी-बौद्धमते चत्वार्यार्यसत्यनामानितत्वानि-द्रव्यगुणादिषट् तत्वानि-जैमिनीये चोदनालक्षणो धर्मस्तत्त्वं, सांख्ये प्रकृत्यादिपंचविंशतितत्वानि नास्तिके चत्वारि भूतानि) । १०—सर्वंचते ज्ञाः—सर्वज्ञा सर्वविद्वान्सः आप्ताः-प्रयुक्ताः सर्वज्ञाः सर्वविद्वान्सः-कपिलकणचरादयो येन । ११—इन्द्रियाणां परं परोक्षं केवलज्ञान वदतीति । १२—इष्टाः-अभीष्टाः पावकाः-पवित्रताकारकाः गणधरादयो देवा यस्य, अथवा भगवानेवेष्टः सन् पावकः । १३—सिद्धं समाप्तिं गत कर्म-क्रियाचारित्रं यस्य । १४—चारु-मलापहः—सर्वभव्यचितानंदकारको वा अकःकेवलज्ञानं यस्य (अकनमाकः—भ्वादिगणे गत्यर्थकदक् धातोः) ।

सत्याय नमः स्वाहा । १०१० । ॐ ह्रीं संयमाय नमः स्वाहा । १०११ । ॐ ह्रीं तपाय नमः स्वाहा । १०१२ । ॐ ह्रीं त्यागाय नमः स्वाहा । १०१३ । ॐ ह्रीं आकिञ्चन्याय नमः स्वाहा । १०१४ । ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्याय नमः स्वाहा । १०१५ । ॐ ह्रीं समन्तभद्राय नमः स्वाहा । १०१६ । ॐ ह्रीं महायोगीश्वराय नमः स्वाहा । १०१७ । ॐ ह्रीं द्रव्य-सिद्धाय नमः स्वाहा । १०१८ । ॐ ह्रीं अदेहाय नमः स्वाहा । १०१९ । ॐ ह्रीं अपुनर्भ-

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

१—भौतिकं समवसरणादिविभूतियुक्तं ज्ञान यस्य । २ भूतेषु अभिव्यक्ता प्रकटीकृताचेतना येन । ३—सर्वमपि पुद्गलद्रव्यं शब्द एवेति । शक्तिरूपतयाशब्दहेतुत्वात्तस्य । ४—स्फुटति-प्रकटीभवति केवलज्ञानं यस्मादिति शुद्धबुद्धैकस्वभावतयात्मानमेव यो मोक्षहेतुतया वदति । ५—त्रीणि शल्यानि (योगत्रयं) दण्डयति । ६—ज्ञानस्य यथाख्यातचारित्रस्य च समुच्चयो विद्यते यस्य । ७—सुप्तः-कल्लोलरहितः सचासौ अर्णवः-समुद्रस्तस्योपमा यस्य मनोवाक्कायव्यापाररहितत्वात् ।

१—एकः-असहायः दण्डः-सूक्ष्मकाययोगो यस्य । २—मोघानि-फलदानासमर्थानि कर्माणि-अदृष्टा-दीनि यस्य । ३—जीवनधार प्राणवायुरहितत्वात् । ४—न जागर्ति-योगनिद्रास्थितत्वात् । ५—आत्मस्वरूपेसावधानत्वात् यो न मोहनिद्रां प्राप्तः । ६—अतिशयेन प्रियः । ७ न विद्यन्ते गुणाः-विभावपरिणतिरूपारागादयो यस्य । ८—निःपीताः केवलज्ञाने प्रवेशिता अनन्तपर्याय येन । ९—अविद्या अज्ञानं तस्य संस्कारः अनुभवनं तस्य नाशकः । (अविद्यानाशकाः संसकारा अपि टीकायाम-ष्टचत्वारिंशद्विधाज्ञेयाः) ।

१—केवलज्ञानापेक्षया लोकालोकं व्याप्नोति स्म, समुद्घातापेक्षया लोकप्रमानं यो वर्द्धते स्म । २—निर्वक्तुं-निरुक्तिमानेतुं शक्यः, निर्गतं वचनीयमपकीर्तिर्यस्येति वा । ३—अणति-शब्दं करोति इति अणुः, अणुसदृशत्वाद् वा अणु अविभागित्वं परमसूक्ष्मत्वाद्योगिनामप्यगम्यत्वं सादृश्यम् । ४—अनणवो महान्तः इन्द्रादयस्तेषां प्रियोऽभीष्टः । अथवा न अणुः-पुद्गलकर्णुः प्रियो यस्य परमनिर्जरकत्वात् । ५—अतिशयेन प्रियः प्रेष्ठः । ६—अतिशयेन स्थिरः स्थेयान् । ७—नि-नितरामतिशयेन वा तिष्ठति । ८—भूता--अतीता ये अर्थाः—पंचेन्द्रियविषयास्तेभ्योदूरः । ९—निर्गताः गुणा रागद्वेषादयोऽशुद्धपरिणामा यस्मतात्, परमस्वासौ निर्गुणश्चेति परा उत्कृष्टा मा लक्ष्मी यस्य--निश्चिता निर्धारिता वा गुणाः केवलज्ञानादयो यस्य--परमश्चासौ निर्गुणश्चेति ।

वाय नमः स्वाहा । १०२० । ॐ ह्रीं सार्वैकविले नमः स्वाहा । १०२१ । ॐ ह्रीं जीवघनाय नमः स्वाहा । १०२२ । ॐ ह्रीं सिद्धाय नमः स्वाहा । १०२३ । ॐ ह्रीं लोकाग्रगामुकाय नमः स्वाहा । १०२४ ।

१—अश्नुवते—क्षणेन स्वामिनमभीष्टस्थान नयन्तीति अश्वाः अष्टादशसहस्रशीलायेव अश्वा यस्य । २—पुण्य सद्वेद्यादि एव संवलं—पथ्यदनं यस्य । ३—वृत्तं चारित्रमग्रं मुख्यं वाहनं यस्य । ४—अपचरणमपचारो मारणं यः कर्मशत्रूणां मारणाद्ध्यानमंत्रविषप्रयोगेण मारणमकोत् । ५—अतिशयेन क्षिप्रः-शीघ्रतरः क्षणमात्रेण त्रैलोक्य शिखरगामित्वात् । ६—अन्त्यक्षणः—संसारस्य-पश्चिमः समयस्तस्य सखा-सहगामुकः अन्त्यक्षणः सखा-मित्रं यस्य । ७—न याजकः-यो निजां पूजां न कारयति । ८—यष्टुं शक्यो यज्यः न यज्यः अयज्यः-अलक्ष्यरूपत्वात्स्वामिनः । ९—इज्यते इति याज्यः न याज्यः अयाज्यः। शक्यार्थे विना सामार्थे ध्यण् । हेतुस्तु अलक्ष्यरूपत्वमेव । १०—कर्मसमिधां भस्मीकरणे न अग्नेः परिग्रहो यस्य, अग्निश्च परिग्रहश्च (स्त्रीच) इति अग्निपरिग्रहौ न अग्नि परिग्रहौ यस्य । अन्यर्षीणामग्ने : भार्यायाश्च परिग्रहो भवति । भगवांस्तु न तथा केवलं ध्यानाग्निनिर्दग्धकर्मेन्धनत्वात्तस्य

१—परमकारुणिकत्वाद्भगवतः कथं निर्दयत्वमितिचेत् परिहृयते—अतिगतो—विनष्टोऽन्तो विनाशो यस्येत्यत्यतः-निश्चिता दया (सगुणनिर्गुण प्राणिवर्गरक्षणलक्षणा करुणा) यस्येति निर्दयः अत्यन्तश्चासौ निर्दयश्चेत्य त्यन्तनिर्दयः । अथवा अति-अतिशयेन अन्ते-अन्तके यमे निर्दयः । यद्वा अतिशयेन अन्तं विनाशं प्राप्ता निर्दया यस्मात । अथवा- अतिशयेन अन्ते मोक्षगमने निश्चिता दया यस्य । २-दर्शनविशुध्यादिसमन्तभद्रान्तानि षोडशनामानि पूजापाठे उपरिष्टात् सग्रहीतानि ।

परिमलविमलाढ्यैरिन्दुकाश्मीरमिश्रै-
निखिलमिलितद्रव्यैश्चन्दनैर्घ्राणपेयैः ।
शिवसदननिविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तम्,
मार्गदर्शक :- दशशतजिनवारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ २ ॥ चन्दनम् ॥

सुरभितहरिताग्रैर्निस्तुषैःशालिजातैः,
रजतसदृशवर्णैरक्षतैरक्षतौघैः ।
शिवसदननिविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तम्,
दशशतजिनवारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ३ ॥ अक्षतान्

सरसिजकुसुमोद्यैः शिञ्जयत्षट्पदौघैः,
वरवकुलसुपुष्पैः वल्लिभूजातजातैः ।
शिवसदननिविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तम्,
दशशतजिनवारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ४ ॥ पुष्पाणि ॥

रजतगिरिनिकाशैः शारदाब्जोपमानैः,
चरुभिरमृतमिश्रैर्बाष्पपूरैरुदारैः ।
शिवसदननिविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तम्,
दशशतजिनवारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ५ ॥ नैवेद्यम् ॥

रविभिरिवसुदीप्तैः स्वर्णकान्तैः प्रदीपैः,
रविकुकुभविलोपि त्रासितं यैस्तमौघम् ।
शिवसदननिविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तम्,
दशशतजिनवारं चर्चयं चिद्धचक्रम् ॥ ६ ॥ दीपम् ॥

सुरभिरचितगंधैं व्योमनीव्याप्तधूपैः
मिलितसुरभिद्रव्यैर्नासिकाप्रीणद्भिः ।
शिवसदननिविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तम्,
दशशतजिनवारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ७ ॥ धूपम् ॥

रुचिरकनकवर्णैश्चोचमोचैः फलौघै,
रभिनवफलपक्वैरूर्जितं मोदयद्भिः ।
शिवसदननिविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तम् ,
दशशतजिनवारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ८ ॥ फलम् ॥

वरजलफलपुष्पैश्चन्दनैरक्षतौघै,–
मार्गदर्शक :–
विरचितकृतभक्त्यायुक्तपुष्पांजलीभिः ।
शिवसदननिविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तम् ,
दशशतजिनवारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ९ ॥ अर्घम् ॥

"ॐ ह्रीं अर्हं आसिआ उसा नमः" इतिमंत्रेणाष्टोत्तरशतप्रमाणं जाप्यदेयम्

इत्थं सिद्धमुपास्य शर्मसहितं संसारबाधापहं,
नोद्रव्याशुभभावकर्मकलितं सन्नव्यपर्याहम् ।
योध्यायेत्फलमश्नुते शिवमयंसौमं स हित्वाऽशिवम् ,
संभुज्याखिलमंडलेशविबुधस्वामिस्थितिं सर्वतः ॥ १० ॥ पूर्णार्घम् ॥

अथ जयमाला ।

त्रिभुवनपतिज्यं पुण्यपापाद्विमुक्तं,
विगतकलुषभावं छिन्नसंसारभावम् ।
जगतिपतिसुसेव्यं संयजे भक्तिपूर्वम् ,
वरशिवसुगुणं तं लोकमूर्धावभासम् ॥ १ ॥

अपारजवंजवजीवनकर्मप्रभेदविदारणकेशरिधर्म ।
त्रिलोकशिरोयुतपुण्यविबुद्ध महासुखमग्नमहो जयरिद्ध ॥ २ ॥
अखण्डितचिन्मयशांतिकरण्ड घनैकपरोन्नतशक्तिसुपिंड ।
समुद्भवभीतिविमुक्त समृद्ध, महासुखमग्नमहोजयरिद्ध ॥ ३ ॥

सुरासुरमानुषनागपरीज, सुदुरितदुर्भरभावसमीज ।
सुकेवलबोध सुदृष्टिसमृद्ध, महासुखमग्न महो जयरिद्ध ॥ ४ ॥

दिवारविचन्द्रविमृष्टविकाश, महोभरभूषित सहजनिरास ।
विपत्कुलकंदकुठार विक्रुद्ध, महासुखमग्न महो जयरिद्ध ॥ ५ ॥

जिनाधिपमाननिरूपितभाव सुसूक्ष्मगुणेश विरूप विराव ।
विबाध विकस्वरदूरविरुद्ध, महासुखमग्न महो जयरिद्ध॥ ६ ॥

तपौतरभूषितनिर्मलयोग, समाप्तविबाध विशोक विरोग ।
प्रदुःखदवानलमेघ विरुद्ध, महासुखमग्न महो जयरिद्ध ॥ ७ ॥

चिरंतनकालकलाकुतवास, भवोदधिसातनशुद्धसमास ।
मनोऽभिहृषीकविमुक्त विशुद्ध, महासुखमग्न महोजयरिद्ध ॥८॥

अनादिनिरंतपदस्थितरूप, रसादिविमुक्त विविक्त विधूप ।
जरादिदशादलनार्थविशुद्ध, महासुखमग्नमहोजयरिद्ध ॥ ९ ॥

महेश सुशंकर निर्जर शक्र, मुनीन्द्र सुचन्द्र सुभास्करचक्र ।
पराच्युतभाव सुशीतलबुद्ध, महासुखमग्नमहोजयरिद्ध ॥ १०॥

समयरससमग्रं पूर्णभावं विभावम् ,
जनितशिवसुसारं यःस्मरेत् सिद्धचक्रम् ।
अखिलनरसुपूज्यं शौभचन्द्रादिसेव्यम् ,
भजति शिवसुशान्ति संविभुज्याखिलार्थम् ॥ ११ ॥

इतिश्रीशुभचन्द्रकृतसंस्कृत सिद्धचक्र मण्डल पूजा संपूर्णा ॥

॥ भद्रं भूयात् ॥

आठवीं जयमाला का अर्थ

मैं उनकी भक्तिपूर्वक पूजा-स्तुति करता हूँ, जो त्रिभुवनके पतियों-सुरेन्द्रों व असुरेन्
के द्वारापूज्य हैं, पुण्य और पाप दानों ही से रहित है, कलुषता जिनकी नष्ट हो चुकी
पर्यायको जिन्होने छेद डाला है, जगतीपतियों नरेन्द्रोंके द्वारा जो सेव्य है, उत्तम कल्याणरू

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

संसार सभीचीनगुणों से युक्त और लोकके चिरोभागापर प्रकाशमान हैं ॥ १ ॥

अपार संसारके जीवनरूप कर्मों के समस्त भेदोंका विदारण करनेमें सिंहसमान, तीन लोकके शिखरपर विराजमान, पवित्र, विबुद्ध, महान्‌सुखमें निमग्न तेजःस्वरूप सिद्धपरमेष्ठिन् आप जयवन्त रहें ॥ २ ॥ कभी भी खण्डित न होनेवाली चित्स्वरूप शांति के करण्ड–पिटारे, घनरूप अद्वितीय सर्वोत्कृष्ट शक्तिके पिंड, उत्पत्ति के भयसे रहित, महासुखमें मग्न तेजः स्वरूप समृद्धसिद्धदेव आप जयवंत रहें ॥ ३ ॥ सुर असुर मनुष्य और धरणीद्रोंके द्वारा पूज्य, दुर्भरभावोंसे दूर, भलेप्रकार पूज्य, सम्यक् केवलज्ञान दर्शन से समृद्ध, महानसु–खमें निमग्न तेजःस्वरूप सिद्धभगवान् आपजयवंत रहें ॥ ४ ॥ दिन में दिखाई पड़नेवाले सूर्य और चन्द्रमा के समान या उससे भी अधिक विशुद्ध है विकास जिनका तेजो भार से भूषित, स्वाभावसे ही स्थिर, क्रोधरहित होकर भी विपत्तिरूपी वृक्षों के कन्द–तनेका उच्छेदन करने के लिए कुठार के समान महान् सुखमें निमग्न तेजःस्वरूप सिद्ध परमेष्ठिन् आप जयवंत रहें ॥ ५ ॥ जिनाधिप अर्हन्त के ज्ञानके द्वारा जिनके भाव का निरूपण किया गया है, अतिशय सूक्ष्मत्वगुण के स्वामी, नीरूप शब्दरहित, बाधारहित, विकस्वर–दुष्प्राप्ति या थकावट के विरुद्ध महान् सुख में निमग्न तेजोरूप सिद्ध भगवान् आप जयवंत रहें ॥ ६ ॥ विभिन्नतपश्चरणोंके द्वारा भूषित हो चुका है योग जिनका, समाप्त हो गई हैं बाधाएं जिनकी, वीतशोक, रोगरहित, महानदुःखस्वरूप दावानलके लिये मेघके समान, महासुखमें निमग्न तेजोरूप सिद्धदेव आप जयवंत रहे ॥ ७ ॥ शास्त्रतिक कालकलामें निवास करनेवाले संसाररूप समुद्रको सुखादेनेवाले शुद्ध, प्रकाशयुक्त, मन और इन्द्रियोंसे रहित, विशुद्ध महानसुखमें निमग्न तेजोरूप सिद्ध भगवन् आप जयवंत रहें ॥ ८ ॥ अनादि और अनन्त पदमें स्थित हैं रूप आकृति जिनकी. रसादिसेरहित, समस्त अन्यपदार्थोंसे पृथग्भूत, सब पदार्थोंको विशेष-रूपसे प्रकाशित करनेवाले अथवा सम्पूर्ण विभावभावों या दोषोंको कम्पितकर देनेवाले जरा जीर्णता-वृद्धत्व आदि अवस्थाओंका दलन करनेवाले, विशुद्ध महासुखमें निमग्न तेजोरूप सिद्धदेव आप जयवंत रहें ॥ ९ ॥ हे शक्र महेश–महान् ऐश्वर्ययुक्त, हे सुशंकर–समीचीन कल्याणके कर्ता, हे निर्जर–कभी जीर्ण न होनेवाले, हे शक्र–अनन्तशक्ति युक्त, हे मुनीन्द्र–मुनियोंके नाथ, हे सुचन्द्र–भले प्रकार सबको चन्द्रमाके समान आल्हादित करनेवाले, हे सुभास्करचक्र–कोटिसूर्यसमान तेजके धारक, हे पराच्युतभाव–उत्कृष्ट और कभी भी च्युत न होनेवाले हैं भाव जिनके, हे अत्यन्तशीतल ज्ञानस्वरूप, महान् सुखमें निमग्न तेजोरूप सिद्ध-परमेष्ठिन् आप जयवंत रहें ॥ १० ॥ इस तरह आत्मरससे पूर्णभावरूप, पुनरुत्पत्तिसे रहित, प्राप्त कर लिया है कल्याण्रूप समीचीन सार जिन्होंने सम्पूर्ण मनुष्योंके द्वारा पूज्य तथा शुभ-चन्द्रादिकेद्वारा सेव्य ऐसे सिद्ध परमेष्ठियोंके समूहका जो भव्य स्मरण करता हैं वह समस्त अभ्युदयोंको भोगकर अन्तमे मुक्तिरूप समीचीन शान्ति को भी प्राप्त किया करता हैं ॥ ११ ॥